Федор Достоевский

БЕДНЫЕ ЛЮДИ

ИЗДАТЕЛЬСТВО ЛИТЕРАТУРЫ
НА ИНОСТРАННЫХ ЯЗЫКАХ
Москва
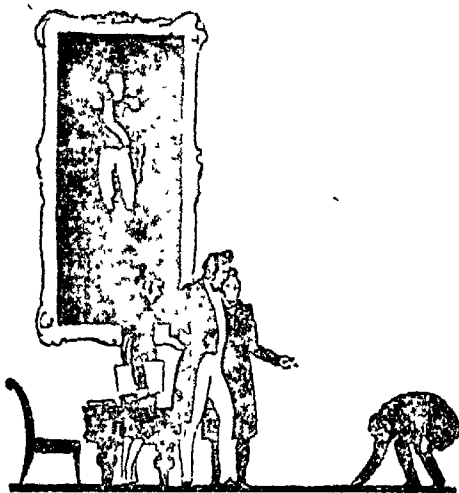
फ़. म. दोस्तोयेव्स्की

दरिद्र नारायण

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह, मास्को

अनुवादक
ओंकारनाथ पचालर

फ० म० दोस्तोयेव्स्की

दोस्तोयेव्स्की का जीवन मानव-जाति की पीडा और सताप से अभिभूत एक महान आत्मा की करुण कहानी है। उनकी प्रतिभा सामाजिक बुराइयो और मानवीय सतापो की भारी परत को हटाने में सफल तो हुई लेकिन वह स्वय उस बोझ से जर्जर होकर रह गई।

फ्योदोर मिखाइलोविच दोस्तोयेव्स्की (१८२१–१८८१) का जन्म मास्को मे हुआ था। उनके पिता नगर के एक दातव्य अस्पताल में चिकित्सक थे। १८४३ मे दोस्तोयेव्स्की ने सेट पीटर्सबर्ग के सैन्य-इजीनियरिंग स्कूल से स्नातक की परीक्षा पास की और इजीनियरिंग मत्रालय के रूपाकन-कार्यालय में नौकरी कर ली। अपने पेशे से असतुष्ट होकर उन्होने १८४४ में पदत्याग कर दिया और साहित्यिक जीवन को अपनाया।

के वाद उनका मृत्यु-दण्ड देशनिकाले के दण्ड में परिवर्तित कर दिया गया।

दस वर्ष वाद वे निर्वासन से लौटे लेकिन उस अग्निपरीक्षा ने उनके व्यक्तित्व को वदल दिया था। 'मानव-प्रकृति' में उनका विश्वास मर चुका था और उन्होने धर्म की शरण ले ली थी।

'दरिद्र नारायण' का प्रणेता अन्तत, उस निष्क्रिय ईसाई प्रेम की छाँव मे चला गया जिसके बारे मे आ० ई० हर्ज़ेन ने निम्न वाक्य कहे है' "निष्क्रिय प्रेम बहुत सशक्त हो सकता है—वह रोता है, वोलता है और आँसू भी पोछता है, लेकिन असलियत तो यह है कि वह कुछ नही करता।"

मानव-जाति मे अपनी आस्था खोकर, दोस्तोयेव्स्की ने, सामाजिक अन्यायो को अनावृत करते समय कई प्रतिक्रियात्मक विचारो को भी व्यक्त किया है। इन विचारो में मानव की वुराइयो या सामाजिक दोषो के निष्क्रिय चिन्तन की प्रवृत्ति है। परन्तु उनकी कृतियो मे यथार्थ बना रहा है।

ओह, वे कथाकार! क्या वे कुछ उपयोगी, सुखद और सरस चीज नही लिख सकते? नही! क्या उन्हे केवल गन्दगी ही उछालनी पडेगी! मै उन्हे बिलकुल लिखने नही दूंगा। आखिर उससे फायदा ही क्या है? आप उनकी लिखी चीजे पढे और आपके दिमाग मे वाहियात बाते किलबिलाने लगेगी। मै उन्हे बिलकुल कलम नही चलाने दूंगा, मै सचमुच उनका हाथ पकड लूंगा!

प्रिस व० फ० ओदोयेव्स्की
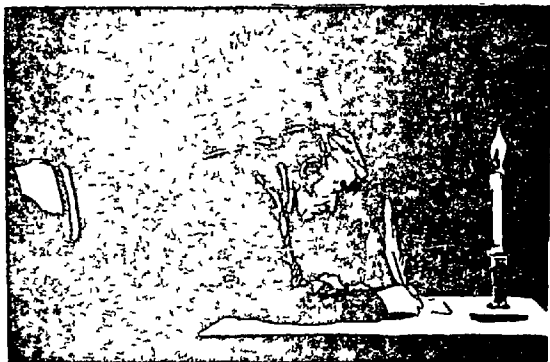
८ अप्रैल

वरवारा अलेक्सेयेवना, मेरी प्रियतमा,

पिछली रात मैं कितना खुश था, बेहद खुश। जीवन में एक बार, सिर्फ एक बार, मेरी हठीली प्रिया, तुमने मेरी बात मानी थी। जब मैं जगा तो शाम के आठ बजे थे (तुम तो जानती ही हो, मेरी रानी, कि काम करने के बाद झपकी लेने की मेरी आदत है)। मैंने मोमबत्ती जलाई, कागज फैला दिया और अपनी कलम सँवार ही रहा था कि मेरी नज़र ऊपर

उठी और मेरा मनमयूर नाच उठा। आखिर तुम समझ गई थी कि मै क्या चाहता था, मेरा दिल क्या चाहता था। तुम्हारे पर्दे का कोना गुलमेहँदी के गमले मे उलझा हुआ था—जैसा कि मैंने तुमसे निवेदन किया था। मुझे ऐसा मालूम पडता था जैसे तुम्हारा नन्हा सा चेहरा खिडकी पर चमक रहा था और मेरे विचारो में खोई हुई तुम वाहर झाक रही थी। और मुझे कितना गम था, मेरी नन्ही सी जान, कि मै तुम्हारे नन्हे से प्यारे मुखडे को साफ-साफ नही देख पा रहा था। ओह, एक समय था जब मै अच्छी तरह देख सकता था। बुढापा वरदान नही है, मेरी प्रियतमा हर चीज धुँधली दिखाई पडती है और शाम को थोडा सा भी लिख लेने के वाद सुवह आँखो मे इतना दर्द और पानी भर आता है कि दूसरे के सामने जाने में भी लाज लगती है। लेकिन मेरी नन्ही देवागना, तुम्हारी मुसकान से मेरा मानस आलोकित था। तुम्हारी वह मदिर मुसकान! और ऐसा लगा जैसे मुझे खूब याद हो कि मैंने कब-कब तुम्हारे होठो का चुम्बन लिया था। मेरी प्रिया, मुझे ऐसा भी जान पडा कि तुम अपनी नन्ही

अगुलियों से मुझे झिड़क रही थी। क्या यह सच है? अपने दूसरे पत्र में तुम विस्तारपूर्वक इन सब के बारे मे लिखना।

प्राण, पर्दे के साथ जो हमारी तरकीव है, उसके बारे मे तुम क्या सोचती हो? लाजवाब है न? काम करते, सोते या जगते मै तुरत जान जाता हूँ कि तुम वहाँ मेरे विचारो मे लीन हो, मुझे याद कर रही हो और तुम स्वस्थ एव प्रसन्न हो। पर्दा गिरने का मतलब है "रात्रि के लिये विदा, मेरे मकार अलेक्सेयेविच!" और पर्दा उठने का मतलब है "सुप्रभात, मकार अलेक्सेयेविच, आशा है, तुम ठीक से सोये होगे," या "कैसी तवीयत है, मकार अलेक्सेयेविच? जहाँ तक मेरा सवाल है, मै भगवान की कृपा से स्वस्थ और प्रसन्न हूँ!" देखा इसका कमाल, प्रिया? इसके सामने पत्र भी बेकार है। कितनी वडी चतुराई, है न? और मैंने ही तो यह तरकीव ढूढ निकाली थी। मैं इन वातो में उस्ताद हूँ। क्या तुम ऐसा नही सोचती?

तुम्हे यह वताना जरूरी है मेरी प्यारी वरवारा अलेक्सेयेवना, कि आशा के विपरीत, मै रात भर वहुत

अच्छी तरह सोया, जिसका मुझे बहुत सन्तोष है। नयी जगह में ठीक से नीद नही आती। नीद मे खलल डालने के लिये कोई न कोई बात हो ही जाती है। मैं सुबह बुलबुल की तरह ताजगी और प्रसन्नता लिये उठा। और सुबह भी कैसी सुहानी थी, मेरी प्रियतमा! खिड़की खुली थी, सूरज चमक रहा था, चिड़ियाँ चहक रही थी, हवा वसत के सौरभ से लदी थी और सारी प्रकृति सजीव लगती थी–हर चीज़ पर मधुरिमा और सुषमा छायी हुई थी जो ऋतुराज की विशेषता है। आज की सुबह मैंने बहुत सी सुखद कल्पनाएँ की और इन सब कल्पनाओ का लगाव तुम्ही से था, मेरी प्रिया। मैंने तुम्हारी तुलना गगन की नीलिमा में खोई हुई उस नन्ही सी चिड़िया से की जिसकी सृष्टि मानव की सात्वना एव प्रकृति के सौन्दर्य के लिये की गई हो। यहाँ, मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मेरी वारेन्का, कि दुख और चिन्ता से सतप्त मानव को उन चिन्तामुक्त और भोले गगनविहारी पछियो से ईर्ष्या करनी चाहिये–और इस प्रकार की व्यर्थ, अस्पष्ट और विविध मनोहर कल्पनाओ

में मैं बहुत देर तक खोया रहा। मेरे पास एक किताब है, वारेन्का, जिसमे ऐसी बहुत सी चीजे तुम्हे मिलेगी, और पूरे विस्तार के साथ। मेरी प्रणयिनी, सब तरह के सपने मेरे दिमाग मे डूबते-उतराते रहते हैं और मैं उनके बारे में लिखे बिना नही रह सकता। वसत के आगमन के साथ साथ वे और भी प्रदीप्त, मनोहर और सुकुमार हो गये है और सब के सब गुलाबी रग में नहाये हुए है। यही कारण है कि मैं इस तरह से लिख रहा हूँ। लेकिन तुमसे झूठ क्यो बोलूँ? मैंने यह सब कुछ किताब से लिया है। लेखक की आकाक्षाएँ भी मेरी ही तरह हैं और सब पद्यबद्ध है

> "काश, मैं पछी होता, आकाश मे
> बाज की तरह ऊचे-ऊचे उडने वाला!"

और इस प्रकार ऐसी ही बहुत सी बाते है तथा साथ साथ दूसरी भावनाएँ भी। खैर, छोडो इन बातो को। बेहतर यह होगा, बरबारा अलेक्सेयेवना, कि तुम मुझे लिखकर यह बताना कि आज सुबह मे तुम कहाँ गयी थी। मैं काम पर जाने के लिये ठीक

भगवान उसे सुखी रखें।

मै अपनी तेरेजा के बारे मे भी सब कुछ लिख चुका हूँ–वह भी भली और ईमानदार औरत है। मै कितना चिन्तित था कि हम एक दूसरे के पास अपने पत्र कैसे पहुँचाया करेंगे? पर भगवान ने सौभाग्य से हमारी मदद के लिये तेरेजा को भेज दिया। वह दयालु, विनीत और उपकारी जीव है। लेकिन हमारी

मकान-मालकिन निष्ठुर है और वह उससे बड़ी कड़ी मिहनत करवाती है।

मैं कैसी जगह पहुँच गया हूँ, वरवारा अलेक्सेयेवना, गन्दगी की खान मे। तुम तो जानती हो कि मैं एक तपस्वी की तरह रहता था: वहाँ इतनी शान्ति थी कि मक्खी के भनभनाने की भी आवाज साफ-साफ सुनाई पड़ती थी। और यहाँ—केवल शोर-गुल, कोलाहल और बेचैनी। लेकिन इस जगह की तफसील देना तो भूल ही गया। एक लम्बे से गलियारे की कल्पना करो जहाँ हमेशा गन्दगी और घुप अँधेरा छाया रहता है। दाहिनी ओर नगी दीवाल है और बायी तरफ दरवाज़ो की कतार, जैसी कि अक्सर होटलो में दिखाई देती है। एक-एक कमरे मे एक, दो या तीन-तीन व्यक्ति रहते है। बिलकुल भेड-बकरियो का बाड़ा है। सही अर्थ में काल-कोठरी। फिर भी ये किरायेदार बहुत भले लोग जान पड़ते है—सुसस्कृत और सुशिक्षित। उनमें से एक किरानी है (सौभाग्य से साहित्यानुरागी)। वह सुशिक्षित है और होमर,

ब्राम्बेअस* और अन्य लेखकों के बारे में उसकी अच्छी जानकारी है। वह काफी बुद्धिमान है। दो फौजी अफसर हैं। वे हमेशा ताश खेलते रहते हैं। एक जहाजी अफसर और एक अंग्रेजी का शिक्षक भी है। लेकिन मेरे दूसरे पत्र की प्रतीक्षा करो, मेरी प्रियतमा! तुम्हारे मनोरंजन के लिये मैं उनका व्यंगात्मक ढंग से वर्णन करूँगा, बिल्कुल यथार्थ और पूरे विस्तार से। हमारी मकान-मालकिन बहुत ठिगनी और फूहड़ औरत है। वह हमेशा ड्रेसिंग गाउन और स्लीपर पहने इधर-उधर घूमा करती है और दिन भर तेरेजा पर बिगड़ती रहती है। मैं रसोईघर में रहता हूँ, बल्कि यूँ कहना ठीक होगा रसोईघर के ठीक बगल में एक कमरा है (और हमारा रसोईघर, यह मैं दावे के साथ कहूँगा कि काफी अच्छा और साफ-सुथरा

---

* बैरोन ब्राम्बेअस – विविध विषयों के लेखक, ओ० ई० सेन्कोव्सकी का साहित्यिक नाम। – स०

है), वह कमरा बड़ा नहीं है, कबूतर का दरबा-सा है. . या यह कहना बेहतर होगा कि रसोईघर बडा है जिसमें तीन खिड़कियां हैं और उसी को बीच से घेर कर रहने के लिये एक कमरा बना लिया गया है। वह प्रशस्त है, आरामदेह है और उसमें खिड़की भी है। और वही मेरा घोसला है। सक्षेप मे, सब कुछ मेरे लिये सन्तोषजनक है। मेरी प्रिया, ऐसा न समझना कि इसके पीछे कोई गूढ अर्थ छिपा हुआ है, और यह कि कमरा, रसोईघर का ही एक अग है। हालाकि मैं बीच के घेरे के पीछे उस कमरे मे रहता हूँ, पर उससे क्या होता है—मेरा अपना राज़-भेद मुझतक ही सीमित है। मैं शान्ति मे अकेला रहता हूँ। जहा तक फर्नीचर का सवाल है, मेरे पास एक खाट, एक मेज, दराज लगी एक अलमारी और दो कुर्सियाँ हैं। मैंने एक मूर्ति भी स्थापित कर ली है। सच है कि मेरे कमरे से भी अच्छे, काफी अच्छे दूसरे कमरे होगे। लेकिन असल चीज तो आराम है, है न? और यह सब कुछ मैंने आराम के लिये किया है। ऐसी बात जरा भी मन

2*

बूते के बाहर की बात है। अब मुझे भोजन [illegible] [illegible] कमरे के लिये साढ़े चौबीस रूबल देने पड़ते हैं जब कि पहले पूरे तीस रूबल देने पर भी मुझे बहुत सी चीज़ों से वंचित रहना पड़ता था। पहले, मुझे चाय [illegible] मयस्सर नहीं थी और अब चाय और चीनी के लिये मैं काफी पैसे बचा लेता हूँ। बिना चाय के रहने में मुझे बड़ी शर्म लगती है, मेरी प्रिया। यहाँ सभी प्रतिष्ठित लोग हैं, इसलिये इस बात से घबराहट होती है। यही कारण है, मेरी प्रियतमा, कि चाय पीनी पड़ती है, दूसरों के लिये, दिखाने के लिये, शिष्टाचार के लिये। अगर ऐसी बात न होती तो मैं इसकी ज़रा भी परवाह नहीं करता। मुझे बेकार का झमेला

पसंद नही। और यदि मौके-बेमौके के लिये, जूतो या कपडो के लिये कुछ पैसे अलग निकाल कर रख दो तो क्या बच पायेगा? इस तरह मेरी पूरी तनख़ाह ख़तम हो जाती है। लेकिन मैं कोई शिकवा नही कर रहा हूँ, मै सतुष्ट हूँ। सालो से यह सिलसिला रहा है और साथ ही मुझे बोनस भी यदा-कदा मिल जाया करता है।

अच्छा, विदा, मेरी अप्सरा। मैंने तुम्हारे लिये गुलमेहँदी और गुलदाउदी के कुछ गमले ख़रीदे हैं—वे सस्ते थे। तुम्हे शायद गुलाब बहुत प्रिय है। वहाँ गुलाब भी हैं—केवल तुम्हारे लिख देने भर की ज़रूरत है। लेकिन कृपया सब कुछ विस्तारपूर्वक लिखना। प्रसगवश, तुमसे यह भी अनुरोध है मेरे प्राणो की प्राण, कि मेरे प्रति तनिक भी चिन्ता या सन्देह न रखना कि मैंने ऐसा कमरा किराये पर क्यो ले रखा है। आराम, केवल आराम का ख्याल कर के ही मैंने ऐसा किया है। मेरी प्रणयिनी, मै अपने घोसले में और भी तिनके बिछाने के लिये ही पैसे बटोर रहा हूँ। शायद मै उस चीज की तरह लगूँ जिसे

एक मक्खी अपने पखो से उलट सके। लेकिन ज़रा सोचो, मै सचमुच वैसा नही हूँ, मै जानता हूँ कि मै क्या हूँ। मुझमें एक ऐसा पुरुष है जिसकी आत्मा दृढ और निर्मल है। विदा, मेरी नन्ही देवदूती! देखते देखते मै पूरे दो पन्ने लिख गया और मुझे बहुत पहले ही काम पर चला जाना चाहिये था। मै तुम्हारी नन्ही उँगलियो को चूमते हुए विदा लेता हूँ।

तुम्हारा विनीत दास एव सच्चा मित्र,

मकार देवुश्किन।

पुनश्च—केवल एक बात के लिये मै तुमसे बहुत अनुरोध कर रहा हूँ कि यथासभव पूरे विस्तार से लिखा करो। मै तुम्हारे लिये एक पौंड मिठाइयाँ भेज रहा हूँ। वारेन्का, मेरा विश्वास है कि ये तुम्हे अच्छी लगेंगी। भगवान के लिये, तुम मेरे बारे में ज़रा भी चिन्ता न करना। अच्छा, एक बार फिर विदा, मेरी प्रिया, बस!

८ अप्रैल

मेरे प्यारे मकार अलेक्सेयेविच,

आखिर मुझे तुमसे झगड़ा करना ही पड़ेगा। मै तुम्हे यकीन दिलाती हूँ, मेरे अच्छे मकार अलेक्सेयेविच, कि तुम्हारे उपहारो को स्वीकार करना मेरे लिये सचमुच बहुत मुश्किल है—खासकर जब मुझे उनकी कीमत मालूम है और यह भी मालूम है कि तुमने अपने को कितनी चीज़ो से वंचित करके, कितनी कटौतियाँ करके उन्हे जुटाया है। कितनी बार मैने तुमसे कहा कि मुझे किसी चीज की ज़रूरत नही, बिलकुल जरूरत नही। तुम जानते हो कि तुम्हारी कृपा का बदला मै कभी नही दे सकती। तुमने वे फूल भेजे ही क्यो? गुलमेहदी की एक टहनी काफी थी, फिर गुलदाउदी क्यो भेजी? मैने गुलदाउदी की ऐसी बात ही क्या की थी कि तुम उसे खरीदने दौड पड़े? वे बहुत महँगे पड़े होगे। लेकिन उनमें सुन्दरता सिमटी हुई है—जीवन की ताज़गी लिये खिलखिलाते हुए फूल। तुम्हे वे मिल कहाँ गये? मैने उन्हे खिड़की पर ऐसी जगह रख दिया

है जहाँ सबकी नजर पहुँच जाय। मैं नीचे वहाँ एक बेंच भी रख दूंगी और बेंच पर फूलो की भरमार होगी—लेकिन मुझे थोडा और अमीर हो जाने दो! फेदोरा तो उन्हे देखते देखते कभी नही थकती। अब यहाँ तो बस स्वर्ग का आनद आ रहा है—कितनी सफाई और लुनाई है! लेकिन मिठाइयाँ किसलिये है? तुम्हारी चिट्ठी से मुझे ऐसा आभास होता है कि कुछ गडबडी जरूर है—स्वर्गिक सुषमा, वसत की मस्ती, सौरभ का भार, चिडियो का कलरव, हद से ज्यादा है। मुझे आशा थी कविता भी रहेगी। तुम्हे कुछ पद्यबद्ध पक्तियाँ लिखनी चाहिये थी, मकार अलेक्सेयेविच! सब कुछ तो वहाँ है ही—कोमल अनुभूतियाँ, गुलाबी कल्पनाएँ और क्या नही? जहाँ तक पर्दे का सम्बन्ध है, मैंने तो उसके बारे में कभी सोचा ही नही था। जब मैंने गमला नीचे रख दिया तो शायद वह आप ही आप उसमें उलझ गया होगा और इस प्रकार वह उलझा रहा।

आह, मकार अलेक्सेयेविच! मुझे यह यकीन दिलाने की कोई जरूरत नही कि तुम्हारे सब पैसे तुम्हारी जरूरतो को

पूरा करने में खर्च हो जाते है। तुम मुझसे कोई भी बात नही छिपा सकते। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि मेरे लिये तुम्हे अपनी जरूरतो में भी कटौती करनी पड़ती है। नही तो तुम्हे ऐसा कमरा किराये पर लेने की जरूरत ही क्या थी, जहाँ दिन-रात तुम्हे हैरानी-परेशानी से छुटकारा नही मिलता तथा आराम और शान्ति नसीब नही होती। तुम्हे एकान्त पसद है और वहाँ उसका सर्वथा अभाव है। अपनी आमदनी के बल पर तुम काफी अच्छी तरह रह सकते हो। फेदोरा कहती है कि तुम बहुत अच्छी तरह रहा करते थे। पर यह भी तो सच है कि तुमने सारी ज़िन्दगी, अजनबियो से घिरे हुए मनहूस कोने मे उदासी और अभाव के बीच, अकेले, बितायी है जहाँ एकाध स्नेहसिक्त शब्द के लिये तडप तड़प कर रह जाते थे? मेरे रहमदिल दोस्त, तुम्हारे लिये मेरे दिल में कितना दर्द है! कम से कम अपने को स्वस्थ रखने की तो कोशिश करो, मकार अलेक्सेयेविच। तुम कहते हो कि मोमबत्ती की रोशनी में लिखने से तुम्हारी आँखें दुखने

वह मेरे लिये भी काम लाती थी इसलिये मुझे बड़ी खुशी हुई। फिर मैं कुछ रेशम खरीदने के लिये गई और उसके वाद अपना काम करने बैठ गई। सुबह मेरा हृदय वहुत हलका और प्रसन्न था। लेकिन अब फिर उदासी ने घेर लिया है और मेरा दिल भारी हो चला है।

मेरा क्या होने वाला है? भविष्य के गर्भ में मेरे लिये क्या छिपा हुआ है? यह सन्दिग्धता कितनी दुखदायी है! जरा भी नहीं मालूम कि भविष्य में क्या होगा। और अतीत इतना भयावह रहा है कि सोचने से ही मेरा हृदय टूक-टूक हो जाता है। अपने जीवन

की आखिरी साँस तक मै उन दुष्टजनो के कारण आँसू बहाती रहूँगी जिन्होने मेरे जीवन की बगिया को तहस-नहस कर डाला।

अब अँधेरा घिरता आ रहा है और मुझे काम जरूर खतम करना है। अभी और भी लिखने की मेरी इच्छा थी, लेकिन समय नही है. काम जरूरी है और मुझे शीघ्रता करनी चाहिये। वस्तुत पत्र लिखना बडी अच्छी बात है, इससे अकेलापन उतना नही खलता। लेकिन तुम कभी हमारे यहाँ आते क्यो नही? क्या बात है, मकार अलेक्सेयेविच? अब तो इसके लिये तुम्हे बहुत दूर भी जाने की जरूरत नही। कभी न कभी तो समय निकाल ही ले सकते हो। जरूर आना! मैंने तुम्हारी तेरेजा को देखा है। वह इतनी बीमार सी दीख पड़ रही थी कि मुझे बड़ा दुःख हुआ। उसे मैंने बीस कोपेक दे दिये। ओह, मैं तो भूल ही चली थी: तुम किस तरह से रहते हो, इसका लेखा-जोखा पूरे विवरण के साथ देना। किस तरह के लोग तुम्हारे साथ रहते हैं और तुम्हारी उनके साथ कैसी पटती है? मुझे जानने की बहुत इच्छा है। कोई बात लिखना

[illegible]

[illegible]

८ अप्रैल

मेरे प्राणों की प्राण, वरवारा अलेक्सेयेवना,

हाँ, मेरी प्रिया, मेरी सर्वस्व, ऐसे ही दुर्भाग्यपूर्ण दिन मेरे पल्ले पड़े हैं। तुमने निश्चय ही मेरा, एक बूढ़े आदमी का, मज़ाक उड़ाया है, वरवारा अलेक्सेयेवना! लेकिन यह मेरी गलती है, सरासर मेरी गलती। गिने-चुने बालों वाला एक ऐसा बूढ़ा आदमी, जो प्रेम का रास रचाये और भावनाओं के साथ खिलवाड़ करे! फिर भी यह तो मैं कहूँगा ही मेरी प्रियतमा, कि मानव

कभी कभी विचित्र जीव जैसी हरकत करता है; वह कभी कभी ऐसी वाहियात हरकते कर बैठता है और इतनी हद से गुजर जाता है कि भगवान ही खैर करे। और उसका फल क्या होता है, उससे मतलब क्या निकलता है? खाक-पत्थर के सिवा और कुछ नही, जिससे भगवान बचाये रखे। मै नाराज नही हूँ, मेरी प्रिया, मुझे केवल यह अफसोस है कि मैने तुम्हे गँवारू और अलकृत ढग से लिखा है। आज जब मै काम पर गया तो बादशाह की तरह खुश था। आज मेरे हृदय में अजीब उल्लास था, आह्लाद था। सक्षेप मे, मै नव स्फूर्ति का अनुभव कर रहा था। पहले तो मैने स्पर्द्धा से अपने कागज-पत्र सभाले, लेकिन जब मेरी नजर चारो तरफ गई तो सब कुछ पहले की तरह ही नीरस और मनहूस लगा। स्याही के धब्बे वही थे, मेज और कागजात और यहाँ तक कि मै भी, वही था। तब मेरा दिमाग सातवे आसमान पर क्यो था? आखिर बात क्या थी? क्योकि सूरज ने मेरे ऊपर किरणो का जाल फेंका था और उसने गगन की नीलिमा में

तुमने मेरी भावनाओं का गलत अर्थ लगाया है, तुमने उन्हे बिलकुल गलत समझा है। वह पैतृक स्नेह था, शुद्ध वात्सल्य भाव। वरवारा अलेक्सेयेवना, तुम्हारी एकान्त अनाथावस्था में मैंने तुम्हारे पिता का पद लिया है। मैं पूर्ण सच्चाई के साथ यह कह रहा

हूँ जैसा कि एक सच्चे सम्बन्धी को कहना चाहिये। जो भी हो, मै तो तुम्हारा दूर का सम्बन्धी हूँ, हूँ न? दूर, बहुत दूर का सम्बन्धी होते हुए भी तुम्हारा सम्बन्धी तो हूँ—और अब तो तुम्हारा घनिष्ठतम सम्बन्धी हूँ और सरक्षक भी, क्योकि जहाँ तुम्हे सहायता और सरक्षण मिलना चाहिये था, वहाँ मिला तुम्हे केवल धोखा और अपमान। जहाँ तक कविताओ का सवाल है, मेरी प्रिया, मुझे यही कहना है कि मेरी जैसी आयु के आदमी के लिये कविताएँ रचना शोभा नही देता। कविता कूड़ा-कर्कट है। आज कल छोटे-छोटे बच्चे स्कूल में इसके लिये थप्पड खाते है। इसके बारे में मेरा यही ख्याल है, मेरी प्रिया।

तुम आराम और शान्ति आदि के बारे मे क्या लिखती हो, वरवारा अलेक्सेयेवना? मै नफासत-पसन्द आदमी नही हूँ। मै इससे अच्छी तरह कभी नही रहा हूँ। तो अब बुढापे में नफासत की क्या जरूरत? खाने के लिये काफी है, पहनने के लिये कुछ कपडे और जूते है ही। तब शाहखर्ची की क्या जरूरत? मैं कोई शाहजादा तो हूँ नही। और न मेरे

वे अन्य दीवानों की तरह ही थे। दीवानों में क्या होता जाता है? वे स्मृतियाँ हैं, जो उभर-उभरकर मुझे उदास कर देती हैं। विचित्र बात है कि वे अपने में सुखद होते हुए भी मुझमें उदासी भर देती हैं। और बुरी चीज़ें, जिनसे मुझे ऊब पैदा हो जाती थी, आज सुखद और भली जान पड़ती हैं। हम बहुत चैन से यहाँ रहा करते थे—मैं और वह वृद्धा औरत, जो अब जीवित नहीं। उसकी याद से भी मैं उदास हो उठता हूँ। यह

भली औरत थी और कमरो का किराया अधिक नही लेती थी। वह हमेशा बुनाई के लम्बे सूग्रो से पैवद लगा लगा कर रजाई ठीक करती रहती थी। हम लोग एक ही मेज़ पर, एक ही मोमबत्ती की रोशनी मे अपना काम करते थे। उसकी नन्ही पोती माशा—जो मुझे निरी बच्ची की तरह याद है—अब तेरह साल की हो चुकी होगी। कितनी शैतान थी वह, कुछ न कुछ खुराफात हमेशा किया करती थी और हँसाते-हँसाते लोट-पोट कर देती थी। और इस प्रकार हम तीनो साथ साथ रहते थे। जाडे की लम्बी रातो मे हम गोल मेज के चारो ओर बैठ कर चाय पीते और फिर अपने अपने काम मे लग जाते। बच्ची के दिल-बहलाव के लिये और उसकी शरारत से छुटकारा पाने के लिये बूढा औरत कहानियाँ सुनाती। और कहानियाँ भी कैसी! केवल बच्चा ही नही, बल्कि समझदार बडा-बूढा व्यक्ति भी उन्हे सुनकर अपने को भूल जा सकता था। मै भी पाइप पीता हुआ उन कहानियो को सुनते सुनते अपना काम भूल जाता था। और वह बच्ची, शैतान की नानी, अपने गुलाबी चेहरे को अपने नन्हे

3—500

हाथ पर टिकाये, मुंह आधा खोले, ध्यान से कहानियाँ सुनती रहती। और यदि कहानी भयावनी होती तो अपनी दादी से सट कर बैठ जाती। तब उसे देखने में कितना अच्छा लगता था! और वहाँ हम घर मे मोमबत्ती का जलना और बाहर तेज़ हवा और बर्फ की बारिश को भूले बैठे रहते। कितना सुखद जीवन था वह! इस प्रकार हमने साथ-साथ बीस साल गुजार दिये। लेकिन मैं भटक गया हूँ। इन बातो से तुम्हे दिलचस्पी नही होगी और ये स्मृतिया मेरे लिये भी दुखद है। अँधेरा घिरता आ रहा है। तेरेज़ा किसी न किसी चीज़ से उलझी हुई है; मेरा सर दुख रहा है और पीठ मे भी थोडा दर्द है और ऐसी हालत मे भी मेरे विचार आवारा की तरह भटक रहे है। आज मैं उदास हूँ, मेरी प्रिया। लेकिन तुमने लिखा क्या, मेरी प्रियतमा, मेरी समझ में नही आता। मै तुम्हारे पास कैसे आ सकता हूँ? लोग क्या कहेगे? यदि मैं आगन पार करने की कोशिश करूँ तो सवालो की बौछार होने लगेगी और कानाफूसी का सिलसिला जारी हो जायेगा। वे अट-सट बाते बकने लगेंगे। नही, मेरी नन्ही गुड़िया,

तुमसे कल सन्ध्या की प्रार्थना के समय मिलना अच्छा रहेगा—यह बेहतर भी है ही, साथ ही साथ हम दोनों के हक में अच्छा भी। ऐसी चिट्ठी लिखने के लिये मुझे माफ कर देना, मेरी प्रिया। एक बार और पढ़ने के बाद मैं देख रहा हूँ कि इसमें बहुत सी अलूल-जलूल बातें भरी पड़ी हैं। मैं बूढ़ा आदमी हूँ, मेरी प्रिया, बूढ़ा और नादान। मैंने अपनी जवानी में बहुत कम सीखा-पढ़ा और अब यदि मैं शुरू से भी सीखने की कोशिश करूँ तो मेरे दिमाग मे कुछ नही अँट सकता। मै यह साफ तौर से कह सकता हूँ, मेरी प्रियतमा, कि मैं किसी भी चीज का वर्णन करने मे प्रवीण नही हूँ और बिना किसी लिहाज के तुम्हे बता दूं कि जब मैं किसी चीज के वर्णन में कल्पना का रग चढाना चाहता हूँ तो वाहियात बातों का ढेर सा लगा देता हूँ। आज मैंने तुम्हे खिडकी पर देखा था—जब तुम पर्दा गिरा रही थीं। विदा, विदा मेरी बरवारा अलेक्सेयेवना। भगवान तुम्हे सुखी रखें।

तुम्हारा अनन्य मित्र

मकार देवुश्किन।

3*

सच्ची बात तो यह है कि मैंने सोचा था कि तुम अपने पत्र में व्यग कस रहे थे। तुम्हे इतना नाखुश देख कर मेरा हृदय भारी हो चला था। मेरे दोस्त और मददगार, यदि तुम मुझमें सहृदयता और कृतज्ञता की कमी होने का सदेह करोगे तो तुम बहुत भारी गलती करोगे। तुमने जो कुछ मेरे लिये किया है, उसकी मैं सराहना करती हूँ, इज्जत करती हूँ—तुमने मेरे दुश्मनो से, उनकी घृणा और अत्याचार से मेरी रक्षा की है। मैं तुम्हारे लिये आजीवन भगवान से प्रार्थना करूँगी—और यदि भगवान मेरी प्रार्थना सुनता होगा तो तुम सदैव सुखी और प्रसन्न रहोगे।

आज मैं बिलकुल अस्वस्थ हूँ मैं रह रह कर सिहरन और ताप से भर जाती हूँ। फेदोरा चिन्तित है। तुम्हे मेरे पास आने में शर्माने की जरूरत नही, मकार अलेक्सेयेविच। लोगो को अपनी अपनी राह जाने दो। हम लोग काफी अच्छी तरह परिचित हो चुके है, यह सच है न? विदा, मेरे मकार अलेक्सेयेविच—जो कुछ मुझे कहना था मैं कह चुकी हू, और इससे अधिक कुछ लिखने लायक मेरी तबीयत ठीक नही। फिर

१२ अप्रैल

वरवारा अलेक्सेयेवना, मेरी प्रियतमा,

बात क्या है? क्या गजब है? तुम हमेशा मुझे डराती रहती हो। हर चिट्ठी में मैं तुमसे अनुनय-विनय करता हूँ, अधिक से अधिक हिफाजत के साथ रहने के लिये अनुरोध करता हूँ, खराब मौसम में बाहर न निकलने और ओढ़-पहन कर घर में आराम करने की भीख माँगता हूँ। लेकिन एक तुम हो, मेरी नन्ही अप्सरा, कि नादान बच्चे की तरह तुमने मेरी बात न मानने का हठ पकड़ लिया है। मैं जानता हूँ कि तुम काँच की तरह कमजोर हो और मामूली ठंडी

हवा भी तुम पर अपना असर डाल देती है। तुम्हे बहुत हिफाजत से रहने की ज़रूरत है, मेरी प्रेयसी। हर खतरनाक चीज़ से तुम्हे बचना है और अपने दोस्तो को दुखी और चिन्तित नही करना है।

तुम मेरे दैनिक जीवन और पास-पड़ोस की बातो को जानना चाहती थी न? बड़ी खुशी मे मेरी प्रणयिनी। लेकिन मुझे शुरु से ही आरभ करने दो। घर के सामने की सीढियाँ काफी भडकीली है, खासकर मुख्य दरवाजे की सीढी' वह साफ-सुथरी और प्रशस्त है और पाये महोगनी के है तथा उनपर नक्काशी का काम है। लेकिन पिछवाडे की सीढियाँ, उनके बारे मे जितना ही कम कहा जाय, उतना ही अच्छा होगा वे टेढी-मेढी है, गन्दी और सील भरी। गच टूट-फूट चली है और दीवाल इतनी पिलपिली हो गई है कि उसे छूते ही उँगलियाँ घस जाती है। जगह-जगह बक्से, कुर्सियाँ और पुरानी आलमारियाँ गाँज कर रखी हुई है। चीथडे लटके हुए है। अधिकाश खिडकियाँ टूटी हुई है और हर जगह कूड़ा-कर्कट, अडो के छिलके और मछलियो की चोईं से भरे टब दुर्गन्ध फैलाते

चिड़ियां यहां तुरत मर जाती हैं। [illegible] [illegible] जो यहां रहता है, वह अभी अभी चांदनी [illegible] [illegible] [illegible] लाया है लेकिन ये यहां भी ज्यादा नहीं बर्दाश्त कर सकतीं। रसोईघर काफी बड़ा है, उसमें उजाला भी है, लेकिन सुबह में खटास भरी गन्ध फैल जाती है क्योंकि रसोईघर में मछली-मास पकता रहता है, पर शाम को सब कुछ ठीक रहता है। रसोईघर कपड़े सुखाने के लिये अरगनियों से भरा हुआ है। चूंकि मेरा कमरा उससे सटा हुआ है, इसलिये महक से तबीयत थोड़ी भिन्ना

उठती है। लेकिन कोई बात नही। काफी दिन यहाँ रह जाने के बाद आदमी इनका आदी हो जाता है।

खूब तड़के ही मकान में शोर-गुल शुरू हो जाता है. सब लोग बिछावन से उठकर, चलने-फिरने लगते हैं और धमा-चौकडी शुरू हो जाती है। कुछ को काम पर जाना रहता है और जिन्हे नही भी जाना रहता है, वे भी शोर-गुल में शरीक होने से बाज नही आते। सबसे पहले हम लोग चाय पर जुट जाते हैं। अधिकांश समावार मकान-मालकिन के हैं और चूकि उनकी सख्या कम है, इसलिये हरेक को अपनी बारी के लिये इन्तज़ार करना पड़ता है। यदि कोई अपनी बारी आये बिना ही केतली लिये चला आता है तो सारी मडली उस अपराधी पर टूट पड़ती है। पहली बार यह बात मेरे साथ भी घटी थी—लेकिन उसका उल्लेख करना ज़रूरी नही। और उसी मौके पर मेरा परिचय सब से हुआ था। सबसे पहला परिचय जहाज़ी अफसर से हुआ था। वह भरोसे का आदमी है। उसने अपनी माँ और बहन (जिसकी शादी तुला में एक अफसर से हुई है)

साथ-साथ इसका भी उल्लेख करना जरूरी है कि हमारी बुढ़िया मकान-मालकिन दुष्टात्मा है, पक्की डायन। तुमने तो तेरेज़ा को देखा ही है, कितनी दुबली है वह नुचे-चुथे चूजे की तरह। कुल दो ही नौकर है—तेरेज़ा और फाल्दोनी। शायद फाल्दोनी का कोई दूसरा नाम भी है, लेकिन फाल्दोनी कहकर पुकारने से ही वह जवाब देता है। इसलिये सब उसे फाल्दोनी ही कहते है। वह लाल बालों और छोटी-चिपटी नाकवाला, निपट गँवार जीव है जो हमेशा तेरेज़ा से उलझा रहता है—उनमें लगभग हाथापाई की नौबत तक आ जाती है। संक्षेप में यही कहना है कि यहाँ की जिन्दगी बहुत मजेदार नही है। सब तुरत नही सो जाते—ताश के खेल का बाज़ार हमेशा गर्म रहता है। कभी कभी तो ऐसी बातें भी होती है जिनकी चर्चा करने में मुझे शर्म आ रही है। मै अब देखते-देखते इन सब का आदी हो गया हूँ, लेकिन ताज्जुब तो जरूर होता है कि परिवार वाले लोग इस पागलखाने में रहना कैसे बर्दाश्त कर लेते है। हॉल के दूसरी ओर एक गरीब परिवार रहता है, कोने के एक कमरे में—करीब करीब सब से अलग।

है, ऐसा मैने सुना है। मकान-मालकिन को उनसे तनिक भी हमदर्दी नही है। मैने यह भी सुना है कि गोरश्कोव की नौकरी किसी झझट की वजह से चली गई जिसका सम्बन्ध शायद किसी मुकदमे या कानूनी जाँच-पड़ताल से था; मै निश्चित रूप से कुछ नही कह सकता। लेकिन वे गरीब है, हे भगवान, कितने गरीब! उनके कमरे से एक आवाज़ भी नही सुनाई पडती, मानो उसमे कोई रहता ही नही हो। बच्चो का भी शोर-गुल नही सुनाई पडता। मैने उन्हें कभी उछलते-कूदते या खेलते नही देखा है। यह बुरा लक्षण है। एक दिन शाम को जब मै उनके दरवाजे से गुजर रहा था और सारे मकान मे असाधारण सन्नाटा छाया हुआ था, मुझे किसी के सुबकने की आवाज सुनाई पडी, तब फुसफुसाहट और फिर सुबकने की आवाज। कोई इतने दर्द और दीनता के साथ सुबक रहा था कि मेरा हृदय मसोस कर रह गया। मै सारी रात उनके बारे में सोचता रहा और सो नही सका।

अच्छा विदा, मेरी वारेन्का, मेरी अनमोल नन्ही सी गुडिया। मैने यथाशक्ति हर बात का जिक्र करने

की कोशिश की है। मैं पूरा दिन तुम्हारे बारे में, केवल तुम्हारे बारे में ही सोचता रहा हूँ। तुम्हारे लिये मैं कितना चिन्तित हूँ, मेरी प्रिया। मुझे मालूम है कि तेज़ हवा, बारिश और बर्फ़ से भरे पतझड़ों से बचाव के लिये तुम्हें एक गरम कोट की ज़रूरत है—वरना हमारे लिये मौत का पैगाम लेकर आता है, वारेन्का। भगवान ही इन भयानक मौसम से हमारी जान बचाये। मेरे लिखने के इस ढंग से नाराज न होना, मेरी हृदयेश्वरी। मेरी कोई शैली नहीं है, मुझे कुछ भी नहीं आता। मेरे दिमाग में जो कुछ भी आ जाता है, उसे लिख डालता हूँ—केवल तुम्हारे मन-बहलाव के लिये, तुम्हारी खुशी के लिये। यदि मुझे अच्छी शिक्षा मिली होती तो बात ही दूसरी होती। लेकिन मुझे जो शिक्षा मिली है उसकी कीमत धेले के बराबर है, इससे अधिक नहीं।

तुम्हारा चिरंतन और विश्वासी मित्र

मकार देवुश्किन।

२५ अप्रैल

मेरे प्रिय मकार अलेक्सेयेविच,

आज मेरी मुलाकात मेरी चचेरी बहन साशा से हुई। बडी मुसीबत है। वह बर्बादी पर तुली है। अफवाह उड़ती हुई मेरे पास भी पहुँची है कि अन्ना फ्योदोरोवना मेरे बारे में पूछ-ताछ कर रही है। क्या वह मुझे कभी चन से नही रहने देगी? वह मुझे माफ कर देना चाहती है, बीती बातो को भुला देना चाहती है और मुझसे तुरत मिलने का इरादा रखती है। उसका कहना है कि तुम मेरे सम्बन्धी नही हो, उसका मुझसे नजदीक का नाता है, तुम्हे हमारे घरेलू मामलो में दखल देने का कोई अधिकार नही है और मुझे तुम्हारे बूते पर अपनी परवरिश करने के लिये शर्म आनी चाहिये। उसका यह भी कहना है कि मै उसके सब उपकारो को भूल गई हूँ और यह कि उसी ने मेरी माँ को और मुझे भूखो मरने से बचाया था और ढाई साल तक हमें खिलाने-पिलाने मे उसके काफी पैसे खर्च हुए तथा इन सब के बावजूद वह हमारे सारे

कर्ज माफ कर देने को तैयार है। उसने मेरी गरीब माँ को भी नही छोडा। काश, माँ को मालूम होता कि इन्होंने मेरे साथ क्या क्या हरकतें की है! लेकिन भगवान सब देखता है! आन्ना फ्योदोरोवना का कहना है कि मैंने अपनी गलती से अपनी सारी खुशी खो दी। उसने मुझे सही रास्ता दिखाया लेकिन मैं अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा न कर सकी और शायद करना भी नही चाहती थी। भगवान, तुम्ही निर्णय करना दोष किसका है! वह कहती है कि मिस्टर बीकोव ने ठीक किया, कोई भी पुरुष ऐसी स्त्री से विवाह करना पसद नही करेगा जो लेकिन इसके बारे में लिखने से फायदा ही क्या है? ऐसे अन्याय बर्दाश्त करना बहुत मुश्किल है, मकार अलेक्सेयेविच! मैं नही जानती कि मेरा क्या होने वाला है। मैं यहाँ बैठे बैठे काँपती रहती हूँ, रोती रहती हूँ और सुबकती रहती हूँ। इस खत को लिखने में मुझे दो घटे लग गये। मुझे यकीन था कि एक दिन वह महसूस करेगी कि उसने मेरे साथ कैसा अन्याय किया है। लेकिन जरा देखो तो! भगवान के लिये, तनिक भी चिन्ता न करना मेरे,

केवल मेरे, कृपालु मददगार! फेदोरा हमेशा बढा-चढा कर कहती है। मैं बीमार नही हूँ। मुझे कल जरा ठढ लग गयी क्योकि मैं वोलकोवो कब्रिस्तान, प्रार्थना करने के लिये गयी थी। तुमने मेरा साथ क्यो नही दिया? मैं तुमसे अनुनय कर चुकी थी। आह, मेरी प्यारी माँ–तुम यदि कब्र से उठकर यह देख पाती और जान पाती कि इन्होने मेरे साथ कैसे कैसे अन्याय किये है!

व० दो०

२० मई

वारेन्का, मेरी कपोती,

मैं तुम्हारे लिये कुछ अगूर भेज रहा हूँ, मेरी हृदयेश्वरी। मरीज के लिये अगूर बहुत फायदेमद होता है। डाक्टर भी मरीज की प्यास बुझाने के लिये अगूर खिलाने की राय देते है–और इसलिये मैं तुम्हारी प्यास बुझाने के लिये यह भेज रहा हूँ। कल तुमने 'क्रुलर' के लिये अपनी इच्छा प्रगट की थी, इसलिये थोड़ा सा वह भी भेज रहा हूँ। अब तुम्हारी भूख कैसी है, प्रिया? सबसे मुख्य बात यही है। भगवान का

शुक्र है कि बला टली और हमारी मुसीबतें भी खतम होने को है। भगवान को बहुत बहुत धन्यवाद। जहाँ तक किताबो का सवाल है, अभी तक वे मुझे मिल नही सकी है। सुना है, यहाँ एक बडी अच्छी किताब है-बडे खूबसूरत ढग से लिखी हुई। मैंने तो उसे नही पढा है लेकिन सब उसकी तारीफ के पुल बाँध रहे है और उन्होने मुझे भी वह किताब देने का वादा किया है। क्या तुम उसे पढना चाहोगी? तुम्हारी पसद भी तो अजीब है-जाने तुम्हे पसद आये, न आये। मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ, मेरी प्रिया, कि तुम काव्यमयी चीजें पसद करती हो-प्यार की कसक और टीस से भरी हुई। खैर, चिन्ता की कोई बात नही, मै उसका प्रबन्ध करके ही रहूँगा। हस्तलिखित कविताओ की एक नोटबुक भी उन लोगो के पास है।

जहाँ तक मेरा सवाल है, मै बिलकुल ठीक हूँ। इसलिये मेरी तनिक भी चिन्ता न करना, मेरी प्रियतमा। तुम फेदोरा की बातो का ख्याल नही करना। उससे कह देना कि वह पक्की बातूनी है। हाँ, जरूर कह देना। मैंने

कोई भी नयी पोशाक नही वेची है। मुझे ऐसा करने की जरूरत भी क्या है? किस लिये? मैने सुना है कि मुझे पुरस्कार के रूप मे ४० रूबल और मिलने वाले है। तब पोशाक बेचने की जरूरत ही क्या होती? इसलिये चिन्ता की कोई बात नही, मेरी प्रणयिनी। फेदोरा चचल, बहुत ही चचल, और अस्थिर दिमाग की है। अच्छे दिन आने वाले है। बस तुम चगी हो जाओ, प्रिया। भगवान के लिये तुम बिलकुल स्वस्थ हो जाओ, इस बूढ़े आदमी को सदमा न पहुँचाओ, मेरी वारेन्का। किसने कहा तुम्हें कि मै दुबला हो गया हूँ? यह बकवास है, केवल बकवास। मै पूर्ण स्वस्थ हूँ और इतना मजबूत हो गया हूँ कि मुझे अपने पर झेंप होती है—साराश यह कि मै सुख में हूँ। यदि केवल तुम स्वस्थ हो जाती! अब, विदा, मेरी प्यारी देवांगना! तुम्हारी नन्ही-नन्ही अँगुलियो को बारी बारी से चूम कर मै विदा लेता हूँ।

तुम्हारा चिरंतन मित्र,

मकार देवुश्किन।

पुनश्च—लेकिन तुम यह क्या लिखती रहती हो, मेरी प्रिया? विवेक से काम लो! मैं तुम्हारे पास बार बार आ कैसे सकता हूँ? यह हो कैसे सकता है? अन्धकार के आवरण का सहारा लिये बिना मेरा वहाँ आना असम्भव है। है न, मेरी प्रियतमा? और यह मौसम भी ऐसा कि रात में अँधेरा ही कहाँ हो पाता है? हाँ, जब तुम इतनी बीमार थी और दिमाग काबू में नहीं था तो मैं एक पल के लिये भी तुम्हारे पास से नहीं हटा। मैं यह कैसे कर सका, मेरी समझ में नहीं आता। लेकिन आखिरकार, फब्तियों और कानाफूसियों के कारण मुझे तुम्हारे पास से हटना ही पड़ा। फिर भी, मैं किस-किस की जीभ में ताला लगाता चलूँ? मुझे तेरेज़ा पर पूर्ण विश्वास है—वह चुगली नहीं खाती। लेकिन ज़रा सोचो यदि हम लोगो के बारे में बात फैल जाए तो क्या होगा, लोग क्या सोचेंगे और क्या कहेंगे? धीरज रखो और जब तक स्वस्थ नहीं हो जाती, प्रतीक्षा करो। उसके बाद फिर हम अपने मिलने का स्थान निश्चित करेंगे।

१ जून

मेरे आदरणीय मकार अलेक्सेयेविच,

तुम्हारे सारे स्नेह के बदले, तुम्हारी मर्ज़ी के अनुसार चलने या किसी न किसी तरह तुम्हे खुश रखने की मुझे इतनी इच्छा रहती है कि मैंने मेजो की दराजें छान कर यह पुरानी कॉपी ढूंढ निकाली है। इसे मैं तुम्हारे पास भेज रही हूं। इसमें लिखना मैंने अपने सुख के दिनो में आरम किया था और समय समय पर लिखती रही। तुम अक्सर मेरे विगत जीवन के बारे में, मेरी माँ के बारे में, पोक्रोवस्की के संबध मे और अन्ना फ़्योदोरोवना के साथ मेरी जिन्दगी के बारे में तथा अन्ततः हाल की मेरी मुसीबतों के विपय में पूछते रहे हो। इस कॉपी को पढ़ने के लिये तुम बहुत उत्सुक थे, जिसमें, भगवान जानें क्यो, मैंने—जब मुझे समय मिला—अपने अतीत के बहुत से दृश्यो को अंकित कर डाला है। मुझे विश्वास है कि इन्हे पढकर तुम्हे आनंद अवश्य आयेगा। जहाँ तक मेरा सबध है, मै इन्हे पढकर दुख और उदासी से भर जाती हूँ। अंतिम

१

जब मेरे पिता ने हमेशा के लिये आंखें मूंद ली, उस समय मैं चौदहवें साल में थी। मेरा बचपन बहुत ही सुख से कटा। मेरे पिता त० प्रदेश में राजकुमार प० की विशाल ज़मींदारी में कारिन्दा थे। यहां से दूर, बहुत दूर, उस राजकुमार के एक गांव में हमारे सुख और आराम के दिन कटते थे। मैं बहुत ही चंचल थी। हमेशा बगीचों, झाड़ियों और जंगलों में घूमा-फिरा करती थी। पिताजी सदा ज़मींदारी के काम में व्यस्त रहते थे और मां घरेलू काम-काज में। अतः मैं बिलकुल आज़ाद थी। मुझे पढ़ानेवाला

कोई नहीं था और इसके लिये मैं खुश भी थी। खूब सवेरे मैं दौड़ती हुई तालाब, बगीचे, पनिहारों या फसल काटने वालों के पास भागी जाती—इस बात की जरा भी परवाह न करते हुए कि धूप तीखी है या मैं घर से बहुत दूर निकल गई हूं या कटीली झाड़ियों से मेरे हाथों और चेहरे पर खरोंच के निशान उभर आये हैं और कपड़े तार-तार हो गये हैं। बाद में घर पर इसके लिये डांट भी पड़ती थी तो कोई बात नहीं।

उस गांव में अपनी सारी जिन्दगी गुज़ार देने में मुझे कितनी खुशी होती, लेकिन भाग्य में कुछ और ही बदा था: मैं अभी बारह साल की नादान बच्ची ही थी कि हम सभी सेंट पीटर्सबर्ग चले गये। सफर के लिये हमने कैसे तैयारियां की, यह याद करके मेरा हृदय दुख से भर जाता है, अपनी सभी प्रिय वस्तुओं से विदा लेते समय मैं कितना रोई थी; किस प्रकार पिताजी के गले से लटक कर मैंने उनसे ज़िद्द की थी कि वे कुछ दिन और ठहर जायें। पिताजी आजिज़ होकर मुझपर बरस पड़े थे। माँ ने

रोते-रोते कहा था कि पिताजी के काम-काज के कारण यहाँ से हटना ही पडेगा। वृद्ध राजकुमार प० का देहान्त हो गया था और उनके उत्तराधिकारियो ने मेरे पिताजी को वर्खास्त कर दिया था। पिताजी ने सेंट पीटर्सवर्ग में कुछ लोगो के साथ कारोवार में रुपया लगा रखा था और अव उनका ख्याल था कि वहाँ चले जाने से हमारी स्थिति सुधर जायेगी। यह सव कुछ मेरी माँ ने वाद में वताया। राजधानी में आकर हम लोग पीटर्सवर्ग-स्तोरोना में रहने लगे और पिताजी की मृत्यु तक वही रहे।

नई ज़िन्दगी के साँचे में अपने को ढालने में हमें कितनी कठिनाई हुई। हम लोग शहर पतझड में आये थे। लेकिन जव हम लोगो ने गाँव छोड़ा, उस दिन वडी प्यारी-प्यारी धूप थी, गर्मी और मस्ती भी। फसल की कटनी खत्म हो चुकी थी। खलिहानो में अनाज के ढेर लगे थ। सर के ऊपर पछी शोर-गुल करते हुए पख फड़फडा रहे थे। चारो तरफ खुशी ही खुशी नजर आ रही थी और जव हम लोग शहर

पहुँचे तो केवल बारिश ही बारिश, धुंध में लिपटी ठंडक और उदास आसमान के नीचे पतझड़ की मनहूसियत। अशिष्ट, ईर्ष्यालु और चिड़चिड़े स्वभाव के अजनबियो का जमघट था वहाँ। लेकिन आखिरकार घर बसाने की सारी हैरानी-परेशानी के बावजूद हम वहाँ जम ही गये। पिताजी मुश्किल से कभी ही घर पर रहते और माँ भी निरन्तर व्यस्त रहती। मेरी सुध लेने वाला कोई नही था। हमारे वहाँ पहुँचने के बाद पहली सुबह ही कितनी दुखदायी लगी। हमारी खिडकी एक पीली चहारदीवारी के ऊपर खुलती थी। इसके नीचे की सड़क का कीचड कभी सूखता नही था। बहुत कम लोग उधर से गुज़रते और जो गुजरते भी वे ठंडी हवा से बचने के लिये अपने लबादे में सिकुड़े-मिकुडे।

हमारे घर में भी दिन भर नीरसता और उदासी छायी रहती। हम लोगो का कोई दोस्त या सम्बन्धी नही था। पिताजी अन्ना फ्योदोरोवना से बिलकुल नही बोलते थे (उन्होंने उससे कुछ रुपये कर्ज ले रखे थे)। हमारे यहाँ कभी मेहमान आते भी तो वे पिताजी के

साझेदार होते। वे वहस और दलीलें करते तथा शोर-गुल मचाते। उनके चले जाने के बाद पिताजी बहुत ही दु खी, चिन्तित और उदास नज़र आते। वे घंटों कमरे में चहलकदमी करते हुए सोचा करते। वैसे मौका पर माँ भी पिताजी से बोलने में डरती थी और मैं हाथ में किताब लिये एक कोने में चूहे की तरह दुबकी बैठी रहती।

सेंट पीटर्सवर्ग में आने के तीन महीने बाद मुझे एक बोर्डिंग स्कूल में भरती कर दिया गया। अजनबियों के बीच मेरे दिन क्लेश और उदासी में कटने लगे। वहाँ सभी मेरे प्रति उपेक्षा का भाव वरतते, शिक्षिकाएँ हमेशा चीखती-चिल्लाती रहती, लडकियाँ मेरा मजाक उड़ाती और मैं घुटकर रह जाती। वड़ा सख्त कायदा-कानून था। हर चीज के लिये समय नियत था, सबके एक साथ भोजन करने के लिये और हमारे पाठ के लिये भी, जो बहुत ही नीरस होता। सब कुछ ऐसा कि दिलचस्पी और सरसता से कोई वास्ता नही। शुरू में तो मैं सो भी नही पाती थी, सारी रात रोते-रोते काट देती थी और रात भी ऐसी कि खतम ही

नही होती थी। शाम को जब सबके साथ मैं भी अपना पाठ पूरा करने के लिये बैठती और क्रिया के भेद एव वाक्य-रचना के नियमो के साथ माथापच्ची करती तो मेरा दिमाग भटक कर घर, माता, पिता और बूढ़ी नानी के पास पहुँच जाता, जो मुझे परियो की कहानियाँ सुनाया करती थी और तब मेरी पीड़ा और भी घनीभूत हो उठती। घर की छोटी-मोटी बातो की याद से भी मन बावला हो उठता और इच्छा प्रबल हो उठती कि मै अपने उसी छोटे से कमरे में बैठी रहती जहाँ समावार से भाप निकलती रहती और उसके चारो ओर अपनी जानी-पहचानी सूरते मँडराती रहती और जहाँ अपनापन के साथ साथ प्यार और स्नेह की गर्मी मिलती। काश, मै अपनी माँ को बाँहो में समेट कर उससे चिपक पाती। सोचते सोचते मेरी आँखो में सागर लहराने लगता और मै चोरी-चोरी रो भी लेती और पाठ बिलकुल ही भूल जाती। उसके बाद रात भर शिक्षिकाओ, प्रधान शिक्षिका और लडकियो के बारे में सपने देखती रहती और सुबह मुसीबत जान पर आ जाती। पाठ याद नही रहने के

कैसे कैसे वार्तालाप! सबके पास मैं अभिवादन के साथ दौड़ी चली जाती; मैं खुल कर हँसती, चीखती-चिल्लाती और खेलती-कूदती। तब पिताजी के साथ पढ़ने-लिखने के बारे में—शिक्षिकाओं के बारे में, फ्रेंच भाषा और लोमोन्डे के व्याकरण के बारे में—गंभीर बातें होतीं और सभी प्रसन्न और सन्तुष्ट हो जाते। अभी भी मैं उन बातों की याद से मुसकरा उठती हूँ। पिताजी की वजह से मैंने अपना सबक अच्छी तरह से सीखने की काफी कोशिश की—मैं देखती थी कि वे बड़ी मुश्किल से मेरी पढ़ाई का खर्च जुटा पाते थे। वे अधिक परिश्रम करने लगे थे। दिनोंदिन वे निष्प्रभ, असन्तुष्ट और चिड़चिड़े होते गये। उनका साथ निभाना मुश्किल होता गया। उनके काम-काज की हालत बहुत ही खराब हो गई और वे कर्ज़ से लद गये। माँ रोने से या उनसे कुछ कहने से भी भय खाती थी—वे गुस्से से लाल हो उठते थे। वह बीमार रहने लगी, दुबली होती गई और उसे भयंकर खाँसी का दौरा आने लगा। स्कूल से लौटने पर सब जगह मैं उदासी ही छाई हुई देखती—पिताजी की आँखें क्रोध से लाल

पैसे बर्वाद किये गये, मै बहुत सख्त और बेरहम थी। मै कितना भी परिश्रम अपने सबक के साथ क्यो न करती, मुझे खरी-खोटी सुननी ही पडती। हर मुसीबत की जड मै ही ठहराई जाती। लेकिन इसका यह मतलब हर्गिज़ नही था कि मेरे पिताजी मुझे प्यार नही करते थे; इसके विपरीत, मुझपर और माँ पर उनका बहुत अनुराग था। उनका स्वभाव ही कुछ ऐसा था।

अपनी चिन्ताओ और असफलताओ से आजिज होकर मेरे पिताजी क्रोधी और सदेही हो चले थे। निराशा की पराकाष्ठा पर पहुँच कर उन्होने अपनी सेहत का भी ख्याल करना छोड दिया था। एक बार उन्हे इतने ज़ोर की ठढ लग गई कि चन्द रोज़ की बीमारी के बाद वे अचानक इस प्रकार चल बसे कि कुछ दिनो तक तो हमें सुध ही नही रही और विश्वास ही नही होता था कि वे अब इस दुनिया मे नही हैं। माँ को मूर्च्छा पर मूर्च्छा आने लगी और उसकी हालत देखकर मुझे बहुत घबडाहट होने लगी। पिताजी के मरते ही हमारे घर पर उनके ऋणदाताओ का मेला लग गया और उनके

तकाज़ो से जान आफत में आ गई। जो कुछ भी हमारे पास था, हमने देकर उनसे अपनी जान छुडायी। पिताजी ने पीटर्सबर्ग-स्तोरोना मे हमारे आने के छ महीने बाद जो छोटा सा घर खरीदा था, उसे बेच देना पडा। आखिरकार यह मामला कैसे तय हुआ, मुझे मालूम नही, लेकिन हम लोग गृहविहीन, निस्सहाय और निराधार हो गये। माँ भयानक रोग के चगुल में बुरी तरह जकडती जा रही थी, खाने के लिये कुछ नही था, रहने के लिये जगह नही थी, सब आशाएँ मर चुकी थी। उस समय मै चौदह साल की थी, और अन्ना फ्योदोरोवना पहले-पहल उसी मौके पर हमसे मिलने के लिये आई। वह यह यकीन दिलाने की कोशिश करती रही कि वह अमीर है और हमारी रिश्तेदारन भी है। माँ ने भी कहा कि उससे हमारा रिश्ता है लेकिन बहुत दूर का। पिताजी के जीवन काल में वह हमारे यहाँ कभी नही आई थी। अब वह आँखो में आँसुओ की बाढ लिये हमसे मिलने आई और पिताजी की मृत्यु एव हमारी दयनीय स्थिति पर सवेदनाएँ प्रगट करने लगी। वह सदा इस बात पर ज़ोर देती

रहीं कि सब दोष पिताजी का ही था वे अपनी औरात से बाहर रहते थे, बहुत ऊँचा चढ गये थे और आत्मविश्वास की सीमा लांघ गये थे। उसने कहा कि वह हम लोगों के साथ अपनेपन से रहना चाहती है और हमें बीती बाते बिसार देनी चाहिये। वह रोने लगी तो माँ ने उसे विश्वास दिलाया कि हम लोगों का कभी भी उसके प्रति कुछ बुरा ख्याल नही रहा। तब वह माँ को गिरजाघर ले गई और वहाँ दिवगत आत्मा (मेरे पिताजी) की शान्ति के लिये सामूहिक प्रार्थनाएँ करवाईं। इस प्रकार हम आश्वस्त हो गये।

बहुत हीला-हुज्जत के बाद, जिसके दरमियान वह हमेशा हमारी गयी-गुजरी हालत, हमारी बेबसी, अकेलापन और अन्धकारमय भविष्य पर बार बार जोर देती रही, वह अन्ततः हमें अपने घर में चल कर रहने के लिये आमन्त्रित करने लगी। माँ बहुत एहसानमद हुई लेकिन काफी समय तक वह किसी ठोस निर्णय पर नही पहुँच सकी। लेकिन चूकि कोई दूसरा चारा नही था और हम कुछ कर भी नही सकते थे,

२

अन्ना फ्योदोरोवना के साथ हमारा जीवन विचित्र और भयावह रहा जब तक कि हम नये घर और नये वातावरण के आदी न हो गये। उनके निजी मकान में रहने के कुल पांच कमरे थे, जिनमें से तीन कमरे अन्ना फ्योदोरोवना और मेरी चचेरी बहन साशा के कब्जे में थे। साशा अनाथ थी और अन्ना फ्योदोरोवना ने उसे गोद ले रखा था। चौथा कमरा मुझे और मेरी माँ को मिला और पांचवे कमरे को पोक्रोव्सकी

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] और
[illegible] दिन भर में कई बार घर
से बाहर [illegible]। लेकिन घर पर [illegible] व्यस्त
नहीं थी, [illegible] के बाहर था। उनकी जान-
पहचान का दायरा इतना विस्तृत था कि उनके यहाँ
लोगों का तांता बँधा रहता। भगवान जाने, वे कौन
थे? वे किसी काम-काज से आते और एक दो मिनट
ठहर कर चले जाते। जब दरवाजे की घंटी बजने लगती
तो माँ मुझे तुरत अपने कमरे में बुला लेती। इसपर
अन्ना पयोदोरोवना को बहुत गुस्सा आ जाता। वह
माँ पर बरस पड़ती और कहती कि हम लोगों को
बहुत घमंड हो गया था, जरूरत से ज्यादा घमंड।
आखिर हमें घमंड किस बात पर था? इस प्रकार
वह घंटों बकवास करती रहती। मैं उन झिड़कियों का
अर्थ उस समय नहीं समझ सकी; लेकिन अब समझ
में आ गया है कि माँ अन्ना पयोदोरोवना के यहाँ जाने में

5*

क्यों हिचकती थी। वह बड़ी ही तेज मिजाज की औरत थी और हमेशा हमें सताती रहती। पर हमें अपने साथ रखने के लिये क्यों उत्सुक थी, यह मेरे लिये अभी भी रहस्यपूर्ण है। शुरू शुरू में तो उसने थोड़ी मेहरबानी दिखाई लेकिन शीघ्र ही उसने अपना असली स्वभाव दिखाना शुरू किया—खासकर जब उसे पूरा यकीन हो गया कि हम बिलकुल लाचार हैं और हमारे लिये कोई दूसरा ठौर-ठिकाना नहीं है। बाद मे वह फिर मेरे प्रति बहुत दयालु हो गई, यहाँ तक कि अपनापन और खुशामद की हद तक पहुँच गई। लेकिन शुरू शुरू मे तो मां ही नहीं बल्कि मुझे भी उसके अत्याचार सहने पड़े थे। बार बार वह अपने उपकार और उदारता की हमें याद दिलाती। उसके बोलने का और कोई विषय ही नहीं था। वह अजनबियों से हमारा परिचय यतीम और फटेहाल रिश्तेदार के रूप में कराती और ईसाई धर्म की परोपकारिता की दुहाई देते हुए कहती कि उसने ही हमें शरण दे रखी है। खाने के वक्त वह ईर्ष्या से हमारे हर एक कौर को गिनती और यदि हम बहुत कम खाते, तो भी

तमाशा खडा कर देती कहती कि हमारे मुंह स्वादिष्ट भोजन लग गया है, हमे उसका भोजन नही रुचता और इसके पहले हमे मालूम भी नही था कि इससे वढकर सुख और क्या होता है। वह पिताजी को बुरा-भला कहे विना कभी नही रहती। कहती कि उन्होने दूसरो से वढकर रहने की बहुत कोशिश की लेकिन उस कोशिश का अन्त क्या हुआ उन्होने अपने परिवार को भीख या दूसरे की रहमत पर जीने के लिये छोड दिया लेकिन एक धर्मात्मा वही है जिसके कारण हमे दर-दर की ठोकर नही खानी पडी। वह क्या-क्या न कहती! सुन-सुन कर कलेजा छलनी-छलनी तो होता ही, विद्रोह की भावना भी प्रवल हो उठती। माँ के आँसुओ की वाढ रुकती ही न थी। उसकी हालत दिनोदिन गिरती ही गई। वह प्रत्यक्षत मौत को गले लगा रही थी। फिर भी हम सुवह से रात देर तक कठिन परिश्रम करते रहते। अधिकतर दूसरो के लिए कपडे सीते रहते। यह भी अन्ना फ्योदोरोवना को वहुत बुरा लगता। वह कहती कि उसका घर दर्जी का घर नही है। पर हम लोगो

को अपने कपडों और अन्य आवश्यकताओं के लिए काम तो करना ही था। अपने पास कुछ पैसे रखना बहुत ही अनिवार्य था। इसके अलावा, हम कहीं दूसरी जगह चले जाने के लिये कुछ पैसे इकट्ठा कर रहे थे। माँ की सेहत काम के बोझ से खराब होती गई। वह दिन पर दिन कमजोर होती गई। रोग उसके जीवन को खाता जा रहा था। मैं यह सब कुछ अपनी आँखों से देखती रही।

दिन पर दिन सरकते गये और हर दिन बीते हुए दिन की तरह ही नीरसता और उदासी लिये आता। हम लोग इतने चुप रहते मानो किसी देहात में रह रहे हो। अन्ना प्योदोरोवना भी धीरे धीरे शान्त हो गई क्योंकि उसे हम लोगों के ऊपर अपने असीम प्रभाव का विश्वास हो गया था। हम उसका विरोध करने की बात सपने में भी नही सोचते थे। हमारे कमरे और उसके कमरे के बीच में गलियारा था और बगल के कमरे में पोक्रोव्सकी रहता था, जिसका उल्लेख मै पहले ही कर चुकी हूँ। साशा को फ्रेंच और जर्मन, इतिहास और भूगोल—अन्ना प्योदोरोवना के शब्दों में सारे

विज्ञान-पढाने के बदले उसे मुफ्त का आवास और भोजन प्राप्त था। साशा उस समय तेरह साल की बहुत ही विनोदप्रिय स्वभाव की लडकी थी और साथ ही साथ घुमक्कड़ भी। एक बार जब अन्ना प्योदोरोवना ने कहा कि लिखने-पढने से मेरी कोई हानि नही हो जायेगी तो माँ की रजामन्दी से मेरी भी पढ़ाई की व्यवस्था कर दी गई। मै भी साशा का साथ देने लगी और इस प्रकार पोक्रोव्सकी हम दोनो को एक साल तक पढाता रहा।

हमारा शिक्षक गरीब, बहुत ही गरीब नौजवान था। वह अपने खराब स्वास्थ्य के कारण नियमित रूप से अध्ययन जारी नही रख सका था पर लोग आदतन उसे विद्यार्थी ही कहते थे। वह इतना शान्त रहता था कि हम उसके कमरे से कभी कोई आवाज नही सुन पाते थे। देखने में भी वह विचित्र था: इतने भद्दे ढग से चलता, इस तरह झुकता और ऐसे अजीब ढग से बोलता कि शुरू शुरू में तो मुझे हँसी आये बिना न रहती थी। साशा हमेशा, खासकर पढाई के समय उसे चिढाये बिना नही रहती। दुर्भाग्य से वह

वहुत चिड़चिड़े स्वभाव का भी था। मामूली सी बात से भी उसे गुस्सा आ जाता था। वह शोरगुल-चिल्लाना और शिकायत करना तथा सबका ध्यान होने के पहले ही वडवडाता हुआ कमरे से बाहर निकल भागता। वह कई दिन तक अकेला बैठा अपनी किताबों के साथ माथापच्ची करता रहता। उसके पास ढेर सी किताबें थी—सभी दुष्प्राप्य और वहुमूल्य। वह दूसरी जगहों से भी पढ़ाता और कमाता था। जब कभी उसे पैसे मिलते, वह ढेर सी किताबें खरीद लाता।

जब मैं उसे कुछ नज़दीक से जान पाई तो उसे काफी दयालु पाया। वहुत कम लोग ऐसे होते हैं। माँ उसका वहुत आदर करती थी और मां की मृत्यु के वाद वही मेरा सबसे अच्छा दोस्त साबित हुआ।

शुरु शुरु में मैं भी साशा के साथ उसे उल्लू वनाती थी हालांकि मैं सयानी लड़की थी। घटों बैठकर हम उसे चिटाने और तग करने के नये नये उपाय सोचती रहती। गुस्से में आने पर वह अजीव सा लगता और हमारा मनोरंजन होता (अब उस याद से मुझे शर्म आती

है)। एक वार हम लोगो ने जव उसे वस्तुत. रुला दिया था तो मैंने उसे वुदवुदा कर यह कहते हुए सुना "कितनी निष्ठुर वच्चियाँ है।" और अचानक मुझमें एक परिवर्तन आ गया—मुझे शर्म आई और खेद भी हुआ। वहुत उत्तेजित होकर आँखो मे आँसू लिए मैंने उससे अनुरोध किया कि वह हमारी नादानी का ख्याल न कर हमे माफ कर दे। लेकिन उसने किताव वन्द कर दी और सवक खतम किये विना ही कमरे से वाहर निकल गया। मै दिन भर भीतर ही भीतर घुटती रही कि हम लोगो के कारण उसे रोना पडा। हम लोगो ने क्या उसके रोने की आशा नही की थी? हमारा अभिप्राय क्या उसे रुलाना नही था? हमने अपनी मूर्खता से उस गरीव आदमी को उसकी वदकिस्मती की याद दिला कर रोने को वाध्य कर दिया था! मै इतनी उत्तेजित थी कि मै रात भर सो नही सकी—सताप और पश्चात्ताप से भरी रही। सुना था कि पश्चात्ताप से हृदय हलका हो जाता है। लेकिन झूठ। किसी न किसी तरह मेरे उस सताप मे गर्व का भी कुछ

अश छिपा हुआ था। मुझे यह पसद नही था कि वह मुझे बच्ची समझे क्योंकि उस समय मेरी अवस्था पन्द्रह साल की थी।

उस दिन से मेरे दिमाग़ में हज़ारो योजनाएँ किलबिलाने लगी कि किस तरह अपने प्रति पोक्रोव्सकी की धारणा को बदल सकूँ। लेकिन मै बहुत शर्मीली और कायर थी। मै अस्पष्ट सपनो के सिवा किसी निश्चित धारणा पर पहुँच नही पायी (और वे सपने भी कैसे थे!) मैं इतना ही कर सकी कि साशा की चुहलबाज़ियो में मै साथ नही देती; और पोक्रोव्सकी का क्रोध जाता रहा। लेकिन मेरे गर्व की तसल्ली के लिये इतना ही काफी नही था।

अब मै एक विचित्र, दिलचस्प और दयनीय आदमी के बारे में दो-चार शब्द लिखना ज़रूर चाहूँगी। यहाँ पर उसके बारे में उल्लेख इस लिये करना है कि अब तक मैंने उसकी ओर कोई भी ध्यान नही दिया था और ध्यान तब देने लगी जब पोक्रोव्सकी से सम्बन्धित सभी चीज़ें काफी दिलचस्प मालूम पड़ने लगी।

समय समय पर हमारे घर एक ठिगना सा बूढा आदमी आता रहता था, जिसके कपड़े गन्दे और फटे, बाल उजले और बेतरतीब होते और वह खुद भी विचित्र सा लगता था। वह सब से झेंपता हुआ—अपने आपसे झेंपता हुआ जान पडता। इसकी वजह से उसकी सारी हरकते ऐसी होती जिनसे सदेह होता कि उसका दिमाग ठीक नही था। यहाँ पहुँचने पर, वह शीशे के दरवाजे के बाहर खड़ा रहता और भीतर घुसने से डरता। जब उधर से कोई गुजरता—मैं या साशा या कोई रहमदिल नौकर—तो वह हमारा ध्यान आकृष्ट करने के लिये सहमते हुए भिन्न-भिन्न सकेत करता। जब हमारे रुख से उसे यकीन हो जाता कि मकान में कोई अजनबी नही है और वह अन्दर दाखिल हो सकता है, तब वह बडी सावधानी से दरवाजा खोलता और अपने हाथो को खुशी से रगडते हुए पोक्रोव्सकी के कमरे मे पजो के बल दाखिल होता। वह पोक्रोव्सकी का पिता था।

उसकी पूरी कहानी मुझे बाद में मालूम हुई। कभी वह किरानी के पद पर नियुक्त था, लेकिन काम को

निबाह न सका, अत उसे बहुत मामूली काम पर लगा गया था। जब उसकी पहली पत्नी, पोक्रोव्सकी की माँ का देहान्त हो गया तो उसने फिर से शादी करने का इरादा किया। नयी पत्नी के आते ही गडबडियो का सिलसिला शुरू हो गया। वह किसी को भी नही छोडती और सभी को अपने दबदबे मे रखती। उस समय पोक्रोव्सकी दस साल का था। उसकी सौतेली माँ उससे घृणा करने लगी थी, लेकिन किस्मत नन्हे पोक्रोव्सकी के साथ थी। बीकोव नामक एक जिमीदार ने जो पोक्रोव्सकी के पिता को अच्छी तरह जानता था और कभी उसका मददगार रह चुका था, पोक्रोव्सकी की देख-भाल का जिम्मा लेते हुए उसे पढने के लिये स्कूल भेज दिया। लडके में उसकी दिलचस्पी इसलिये थी कि वह उसकी मृत माँ को जानता था। युवावस्था मे पोक्रोव्सकी की माँ पर अन्ना फ्योदोरोवना का अनुग्रह था और वह बाद में पोक्रोव्सकी के पिता से ब्याही गई थी। उदारता से प्रेरित होकर अन्ना फ्योदोरोवना के मित्र मिस्टर बीकोव ने ५ हजार

रूबल दहेज के रूप में दिये थे। उस रूपए का क्या हुआ, यह अब तक नहीं मालूम। यह सब मुझे अन्ना फ्योदोरोवना से मालूम हुआ। पोक्रोव्स्की खुद अपने परिवार के बारे में कभी भी कुछ नहीं कहता था। सुना था कि उसकी माँ बहुत सुन्दर थी और तब ताज्जुब हुआ कि उसके लिये ऐसी जोड़ी क्यों खोजी गई। अपने विवाह के चार वर्ष बाद वह मर गई।

स्कूल की पढ़ाई खतम करने के बाद पोक्रोव्स्की विश्वविद्यालय में भर्ती हुआ और मिस्टर बीकोव ने, जो प्राय सेंट पीटर्सबर्ग आया करते थे, उसकी मदद करनी जारी रखी। जब खराब स्वास्थ्य के कारण पोक्रोव्स्की को अपनी पढ़ाई स्थगित करनी पड़ी तो मिस्टर बीकोव ने उसे अन्ना फ्योदोरोवना के पास भेज दिया। अन्ना फ्योदोरोवना ने साशा को पढ़ाने के बदले पोक्रोव्स्की के लिए भोजन और आवास की मुफ्त व्यवस्था कर दी।

इस बीच पोक्रोव्स्की का पिता अपनी दूसरी पत्नी से तंग आकर सभी दुर्गुणों को अपनाने लगा और हमेशा नशे में धुत्त रहता। उसकी पत्नी उसे मारती-पीटती और रसोईघर में बंद कर देती। आखिरकार वह इन

ज्यादतियों का आदी हो गया और उसने नूं करना भी बन्द कर दिया। हालाकि वह वस्तुत बूढ़ा नहीं था, लेकिन बुरी लतों के कारण उसका दिखा जाता था। उसकी बची-खुची मानवता का दर्शन, पुत्र के प्रति उसके प्रेम में किया जा सकता था। पोक्रोव्स्की अपनी माँ की जीती-जागती मूर्ति था। शायद प्रथम सुलक्षणा पत्नी की स्मृति ही रह रह कर उसके हृदय में हिलोरें मारने लगती और तब वह अपने बेटे के बारे में सोचते और बातें करते कभी नहीं थकता। वह हफ्ते में दो बार बेटे को देखने के लिए आता था। इससे अधिक बार आने की वह हिम्मत नहीं करता था, क्योंकि पोक्रोव्स्की को उसका आना-जाना पसंद नहीं था। पोक्रोव्स्की के दोषों में सबसे बड़ा दोष यह था कि वह अपने पिता के प्रति ज़रा भी आदर का भाव नहीं रखता था। लेकिन बूढ़ा कभी कभी विचित्र जीव जैसी हरकतें करता। पहले तो वह प्रश्नों की झड़ी लगा देता। दूसरे यह कि बहुत ही मामूली, बेकार और छोटे छोटे प्रश्नों और बातचीत के कारण वह पोक्रोव्स्की की पढ़ाई में बाधा पहुँचाता था। और अन्तत, यह कि

वह अक्सर होश में न होता। बेटा अपने बाप को उसकी बुरी लतों, बेकार की बातचीत आदि से छुटकारा दिलाने की कोशिश करता। परिणाम यह हुआ कि वह बेटे को फ़रिश्ता समझने लगा और बिना उसकी ज़रा इजाज़त के मुंह खोलने की भी हिम्मत न करता।

और वह बूढ़ा, पेतेन्का (अपने बेटे को दुलार से वह इसी प्रकार पुकारता) की तारीफ़ करते कभी नहीं थकता। जब वह बेटे से मिलने के लिये आता तो उसके चेहरे पर मुर्दनी और भय छाया रहता। उसे खुद नहीं मालूम रहता कि उसका स्वागत किस प्रकार किया जायेगा। वहाँ वह हिचकते हुए खड़ा रहता और जब मैं उधर से गुज़रती तो पूरे बीस मिनट तक अपने पेतेन्का के बारे में पूछ-ताछ करता रहता' उसकी सेहत कैसी है? अभी वह किस मूड में है? क्या वह किसी महत्वपूर्ण काम में व्यस्त है? यदि हाँ, तो वह काम किस तरह का है? क्या वह लिख रहा है या केवल चिन्तन कर रहा है? जब मैं उसे पूरा-पूरा जवाब देकर तसल्ली बँधा देती तो वह दरवाज़ा खोलता—

लेकिन, ओह कितनी सावधानी से और धीरे से। पहले वह दरार से झाँकता और जब उसे विश्वास हो जाता कि बेटा गुस्से में नहीं है और उसने सर हिला कर एक तरह से स्वीकृति भी दे दी है, तब वह बिना आहट किये कमरे मे दाखिल होता और अपने गर्द, सिकुड़े और अनगिनत छेद वाले कोट और टोप को उतार कर रख देता। वह सावधानी से अपनी चीजों को टांग कर सहमते हुए कुर्सी में धँस जाता और अपने बेटे के चेहरे पर आँखे जमा देता मानो उसके मनोभावों को पढने की कोशिश कर रहा हो। यदि रोनेल्ड के दिमाग का पारा चढा होता तो वह तुरत भाप जाता और यह बुदबुदाते हुए उठ खडा होता कि वह इधर से गुजर रहा था तो जरा सा दम लेने के लिये यहाँ आ गया। तब अपने फटे-पुराने कोट और टोप को उठाकर उतनी ही सावधानी से वह दरवाजा खोलता, बिना आहट किये बाहर निकल जाता और मुसकान बिखेरते हुए अपनी घोर निराशा और पीडा को छिपा लेने की कोशिश करता।

[illegible] में किया जाता तो वह कुर्सी में पूरा न समाता था। उसके लिये तो लोग [illegible] और उसकी हैरत भाव-भंगिमा में [illegible] और [illegible] का अन्यत्र दर्शन करना सम्भव था। यदि [illegible] उससे बातचीत करने की उत्सुकता दिखाता तो वह अपनी जगह से उठ कर खड़ा हो जाता और बहुत ही नम्रता से एक आज्ञाकारी सेवक की तरह बहुत शिष्ट ढंग से जवाब देने की कोशिश करता। वह बोलचाल में गड़बड़ा जाता और घबड़ा उठता। वह समझ ही नहीं पाता कि वह अपने हाथों को क्या करे, अपने आंखों का क्या करे और तुतलाते हुए अपने जवाब को सुधारने के लिये बेचैन रहता। लेकिन यदि सही सही जवाब दे पाता तो वह अपने कंधों को उचका देता और अपने वेस्टकोट और टाई को ठीक करने लगता तथा गौरव से चमकने लगता। कभी कभी तो वह इतनी हिम्मत दिखाता कि उठकर टहलते हुए किताबों की अलमारी तक पहुँच जाता और कोई न कोई किताब निकाल कर उसके पन्ने उलटने-पुलटने लगता। ऐसे कुछ अवसरों

पर वह बहुत सौम्य और असाधारण रूप से शान्त नजर आता, मानो वह बेटे की किताबों को छूने का आदी हो। लेकिन मैं एक बार संयोग से यह देखने के लिये वहाँ उपस्थित थी कि बेटे के यह कहने पर कि वह किताब को हाथ नहीं लगाये, वह कितना घबरा गया था। घबडाये और सहमे हुए उसने किताब को उल्टा रख दिया और तब गलती सुधारने की जल्दी में उसे गलत खाने में रख दिया, पर इस बीच वह लगातार मुसकराते हुए यह जाहिर करने की कोशिश करता रहा मानो यह बहुत ही मामूली और छोटी बात थी। अपने पिता के रवैये को बदलने की कोशिश में पोक्रोव्सकी उस बूढ़े को पचीस, पचास या उससे भी अधिक कोपेक इनाम के रूप में दे देता, यदि बूढ़ा बिना पिये हुए लगातार उससे मिलने के लिये तीन बार आ जाता। या वह बूढ़े को एक जोड़ा नया जूता, एक टाई या वेस्टकोट ही इनाम में दे देता जिसे पाकर बूढ़ा घमंड से मोर की तरह नाचने लगता। बूढ़ा कभी कभी हमारे पास भी आता। मेरे और साशा के लिये नाशपाती और सेब लाता और पेतेन्का के बारे में गप्प करता। वह बार

वार सलाह देता कि हमे अपना पाठ ठीक से याद करना चाहिये और इस बात पर बहुत जोर देता कि पेतेन्का नेक बेटा है, आदर्श बेटा है और साथ ही साथ पढा-लिखा बेटा। यह कह कर वह इस ढग से मुँह बनाने और आँखें नचाने लगता कि हमारी हँसी फूट पडती। माँ को भी वह बहुत अच्छा लगता था। लेकिन बूढा अन्ना फ्योदोरोवना से बडी नफरत करता था गोकि उसकी उपस्थिति मे वह चूँ करने की भी हिम्मत नही करता था।

मेरे साथ पोक्रोव्स्की का अध्यापन कार्य खतम हो रहा था। फिर भी, वह मुझे साशा की तरह ही बच्ची और नादान समझता था। इससे मुझे तकलीफ होती थी क्योकि मै अपनी पुरानी गलतियो को भरने की कोशिश करती आ रही थी। लेकिन उधर उसका ध्यान ही नही जाता था। इसलिये मुझे और भी चिढ हो जाती थी। सबक के बाद मै उससे कभी नही बोलती थी और मौका आने पर बोल भी नही सकती थी, क्योकि मै लाल हो उठती, ज़बान पर ताला लग

6*

जाता और तव गुस्से के अतिरेक से किसी कोने में जाकर रो पडती।

भगवान जाने, यदि वह विलक्षण घटना नहीं घटती तो इसका अन्त क्या होता। एक शाम जब माँ अन्ना प्योदोरोवना के यहाँ गई हुई थी, मैं चुपके से पोक्रोव्स्की के कमरे में घुस गई। मैं जानती थी कि वह घर से वाहर गया हुआ था। आखिर मैंने ऐसा क्यों किया, मैं खुद नही जानती। इसके पहले मैं उसके कमरे में कभी नही गई थी, गोकि हम एक दूसरे के पडोस में एक साल से रह रहे थे। मेरा हृदय जोरों से धडक रहा था। मैंने चारो तरफ उत्सुकता और सतर्कता से देखा। कमरा वहुत गडवड और अस्तव्यस्त था। दीवाल के सहारे पुस्तको की पाँच कतारे दिखाई पडी। मेज और कुर्सियो पर कागज के ढेर लगे थे। हर जगह किताव और कागज़! तव मेरे दिमाग में एक अजीव विचार आया। वह मेरी दोस्ती और स्नेह की परवाह क्यों करे? वह विद्वान है और मैं अनपढ–मुझे न कुछ ज्ञान है और न कभी मैंने कोई किताव ही पढने की कोशिश की है। कितावो से भरी उन अलमारियो को

मैंने इसे पाने का निश्चय किया था।

लेकिन जब उस पुस्तक को अपने कमरे में लाकर मैंने खोला और पाया कि यह बड़ी पुरानी और दीमक लगी जिल्द में सिली मोटी पुस्तक थी तो मेरी सारी आशाओं पर पानी फिर गया। समय खोये बिना, मैं तुरन्त लौट पड़ी और किताब को दराज़ में रखने ही वाली थी कि गलियारे में आवाज़ और पदध्वनि सुनाई पड़ी। मैं जल्दी से उसे किताबों के बीच में रखने की कोशिश करने लगी लेकिन वह किताबों के बीच में इस प्रकार घुसा कर रखी हुई थी कि उसे निकाल लेने के बाद

उसकी जगह पास-पड़ोस की किताबों ने दबा रखी थी। मैं फिर उसे किताबों के बीच घुसा नहीं पाई। मैं जोर-जोर से ताकत के साथ उसे किताबों के भीतर घुसाने की कोशिश कर रही थी कि तब लगी पाटी, जिसके सहारे अलमारी टँगी थी, उखड़ गई और अलमारी गिर पड़ी तथा साथ ही साथ किताबें भी जमीन पर बिखर गयी। तभी दरवाजा खुला और कमरे में पोक्रोव्स्की दाखिल हुआ।

यहाँ यह कह देना जरूरी है कि वह किसी को भी अपनी किताबों के साथ खिलवाड़ करने बर्दाश्त नहीं कर सकता था। भगवान खैर करे, उसकी किताबों को हाथ लगाने की कोई हिम्मत ही कैसे कर सकता था! मेरे भय की कल्पना कीजिये जब सभी किताबें—मोटी, पतली, छोटी, बड़ी—भरभराती हुई फर्श पर, कुर्सी और मेज के नीचे फैल गईं। मैं भाग कर निकल जाना चाहती थी लेकिन अब क्या हो सकता था। मैंने सोचा सारा किस्सा तमाम हुआ। मुझे काठ मार गया। मैं रगे हाथो पकड़ी गई थी। मेरी मूर्खता और नादानी पर पक्की मुहर लग चुकी थी। पोक्रोव्स्की

गुस्से से पागल हो उठा था। "और क्या करने की इच्छा है?" वह चिल्लाया। "इस बेवकूफी पर तुम्हें शर्म आनी चाहिये! तुम्हें कब अक्ल होगी?" वह किताबों को बटोरने के लिये झुका। मैं भी मदद करने के लिये झुकी। "तुम्हारी मदद की कोई जरूरत नही," उसने कहा। "बिना बुलाये तुम्हें यहाँ आना ही नही चाहिये था।" लेकिन उसने मेरी विनम्रता, मेरी भाव-भंगिमाएँ देख ली थी और अब डांट-डपट करने वाले शिक्षक के लहजे में बोलने लगा था "आखिर तुम्हे होश कब आयेगा? जरा सोचो तुम बच्ची नही हो, तुम पन्द्रह साल की हो चुकी हो।" और मानो अपने को विश्वास दिलाने के लिये उसने मेरी ओर देखा और अचानक लाल हो गया। मै कुछ नही समझ पाई और खडी-खडी उसका मुँह ताकती रही। वह भी खडा हो गया। मेरे पास सरक आया और तब सहमते हुए क्षमा माँगने लगा—शायद उसे तभी ही पक्का यकीन हुआ था कि मै बड़ी हो चुकी थी। आखिर सारी बाते मेरी समझ में भी आ गई। मै उससे भी अधिक लाल और गर्म हो उठी और

अपने चेहरे को हाथों से ढँक कमरे में भाग निकली।

मैं शर्म से गड़ी जा रही थी। यह सोच कर कि उसने मुझे अपने कमरे में देखा था, मुझे तीन दिन तक उसके सामने जाने की हिम्मत नहीं हुई। उसे देखते ही मैं इतना लाल हो उठती कि मेरे आँसू फूट पड़ते।

विचित्र-विचित्र ख़याल मेरे दिमाग में आते रहे। सबसे विचित्र खयाल था कि उसके सामने जाकर सारी बातें साफ साफ कह दूँ—सारी सफाई देकर यह विश्वास दिला दूँ कि मैंने जान-बूझकर बेवकूफी नहीं की थी बल्कि मेरा इरादा कुछ और था। मैंने ऐसा करने का लगभग पक्का इरादा भी कर लिया था, लेकिन भगवान का शुक्र है कि मेरी हिम्मत ने जवाब दे दिया। मैं कल्पना कर सकती हूँ कि उस मौके पर मेरी हालत क्या होती! अभी भी मुझे उसके बारे में सोचने पर बहुत शर्म आती है।

कुछ दिनों के बाद मेरी माँ बहुत सख्त बीमार पड़ी। वह बिछावन से जा लगी और तीसरे दिन, रात में

उसे बहुत बुखार हो आया और वह बेहोशी में अट-सट बकने लगी। मैं एक मिनट के लिये भी उसके पास से अलग नही हुई। उसे पानी पिलाती रही और दवा देती रही। दूसरी रात तक मैं बिलकुल थक गई और नीद के बोझ से मेरी पलके झपने लगी। मेरी आंखो के सामने हरे-हरे धब्बे दिखाई पड़ने लगे और मेरे चारो ओर की चीजें तैरती हुई सी जान पडने लगी। मैं किसी भी क्षण सोने के लिये वहाँ से उठकर जा सकती थी लेकिन माँ की दुर्बल कराह के कारण वैसा नही कर सकी। मैं बार-बार सिहर उठती लेकिन कुछ ही देर बाद नीद पहले की ही तरह आ धमकती। बडी मुसीबत थी। नीद और जागरण के बीच झूलते हुए मैंने एक भयानक स्वप्न देखा और मैं सिहर कर उठ गई। कमरे में अंधेरा छाया था, केवल मोमबत्ती की पीली लौ की रोशनी दीवाल पर पड रही थी। डर, एक अजीब डर मुझमें समा गया—मेरे विचार बुरे स्वप्न मे उलझ गये थे और मेरा हृदय सन्न रह गया था। मैं पीडा से, असहनीय व्यथा से चीत्कार करती हुई कुर्सी से उछल

पडी। दरवाजा खुला और पोक्रोव्स्की भीतर आ गया।

मुझे याद है कि जब मेरी चेतना लौटी तो मैं उसकी बांहों में थी। उसने सावधानी से मुझे कुर्सी पर बिठा दिया, एक गिलास पानी दिया और सवाल पर सवाल करने लगा। मैंने उसे कुछ जवाब जरूर दिया—लेकिन याद नहीं रहा। "तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं," उसने मेरे हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा। 'तुम्हारी तबीयत बहुत खराब है। बुखार जैसा लग रहा है, अपनी तन्दुरुस्ती चौपट कर रही हो। तुम्हें आराम की जरूरत है। जाओ, सो जाओ। मैं तुम्हें दो घंटे के बाद बुला लूंगा। जाओ, अब कृपया सो जाओ।" मुझे विरोध करने का मौका दिये बिना वह जिद्द करता रहा। मैं थकावट से बेजान हो रही थी, मेरी पलकें बोझिल हो गई थीं। आधे घंटे तक तनिक आराम करने के लिये मैं कुर्सी पर ही ऊंघ गई, लेकिन सुबह होने तक जब मेरी आँखें नहीं खुलीं तो पोक्रोव्सकी ने मुझे जगाया क्योंकि माँ को दवा देने का समय हो गया था।

अगली रात मैं यह दृढ़ निश्चय करके आग के पास बैठी कि नींद को पास फटकने नहीं दूँगी। उस रात ग्यारह बजे के लगभग पोर्भांग्यवी ने दरवाजा खटखटाया। "क्या यहाँ अकेले बैठे बैठे तुम्हें बुरा नहीं लगता?" दरवाजा खुलते ही उसने पूछा। "यह किताब लो, इससे समय कट जायेगा।" मैंने उसे ले लिया। मुझे याद भी नहीं कि वह कौनसी किताब थी। मैंने उसे खोला भी या नहीं, क्योंकि उस रात एक पल के लिये भी मेरी आँखें नहीं झपी। एक अजीब हुलास से मैं जगी रही। मैं बेचैन थी, चुपचाप बैठ नहीं सकती थी और बार बार उठकर कमरे में टहलने लगती थी। अपने शरीर में एक सुखद गर्मी महसूस कर रही थी। सन्तोष के साथ साथ मुझे खुशी भी थी कि उसका ध्यान मेरी ओर गया था। अपने प्रति उसकी चिन्ता देख कर मैं गर्व से फूली न समाती थी। सारी रात मैं सोचती रही और सपने देखती रही। वह फिर नहीं आया और मुझे मालूम था कि वह आयेगा भी नहीं। लेकिन मैं चाहती थी कि वह अगली रात आये।

अगली रात जब सभी सोने चले गये, पोक्रोव्सकी दरवाजा खोलकर देहली पर खड़े खड़े मुझसे बाते करता रहा। मुझे ज़रा भी याद नही कि आपस मे हमारी क्या बाते हुईं। मै बहुत शर्माती रही, अँटक-अँटक कर बोलती रही और मेरी इच्छा होती रही कि बातो का सिलसिला तुरत खतम हो जाय, गोकि मैं सारे दिन उसके लिये ललक रही थी, सपने देख रही थी और अपने प्रश्नो और उत्तरो का अभ्यास कर रही थी। उसी रात से हमारी मित्रता आरभ हुई। माँ के बीमार रहने तक हर रात हम लोग घटो साथ साथ बैठे रहते। धीरे-धीरे मेरी शर्म जाती रही, गोकि मै अपने आप पर अपनी बातो से ही खीझ उठती थी। लेकिन मुझे यह देख कर बेहद खुशी हो रही थी कि वह अपनी मनहूस किताबो को भूलता जा रहा था। एक बार मज़ाक ही मजाक मे किताबो की अलमारी के गिरने की बात चल पडी। उस समय मेरे मनोभाव विचित्र थे और मै स्पष्ट-वादिता से काम लेना चाहती थी। मैंने भावनाओ में बहकर साफ तौर पर स्वीकार कर लिया कि मै पढना चाहती थी, कुछ सीखना चाहती थी और यह भी

चाहती थी कि मेरे प्रति पोपोल्मनी की धारणा में परिवर्तन हो जाय कि मैं एक नादान बच्ची नहीं थी। अवश्य ही मेरी मनःस्थिति बहुत विचित्र रही होगी। मैं काँप रही थी और मेरे आँखों में आँसू भर आये थे। मैंने उसे सब कुछ बता दिया—उसके प्रति अपने मैत्रीपूर्ण भावों के बारे में और यह भी कि मैं उसकी परवाह करना चाहती थी, उससे घनिष्ठ होना चाहती थी, उसे आराम और स्नेह देना चाहती थी। वह मेरी ओर हक्का-बक्का सा देखता रहा लेकिन बोला कुछ नहीं। अचानक मैंने बड़ी पीड़ा और निराशा का अनुभव किया। बात उसकी समझ में नहीं आई थी और शायद वह मुझपर हँस भी रहा था। मैं बच्चों की तरह फूट फूट कर रोने लगी। उसने मेरे हाथ अपने हाथ में ले लिये और उन्हें चूमते हुए अपने सीने से लगा लिया। वह शायद सांत्वना के शब्द भी बुदबुदा रहा था। वह विचलित हो उठा था। उसने मुझे क्या कहा, मुझे याद नहीं। मुझे केवल यही याद है कि मैं रोती और हँसती और फिर रोने लगती। मेरे गाल जल रहे थे और मैं आनन्द के अतिरेक से बोल नहीं पा रही थी। उत्तेजित होते हुए

भी उसने आत्मसंयम नहीं खोया। शायद वह मेरे आकस्मिक आह्लाद पर आश्चर्यान्वित रह गया था। शायद वह पहले केवल ठगा-ठगा सा रह गया लेकिन बाद में उसने मेरी निष्ठा और अनुराग को मेरी ही तरह तीव्रता और सहृदयता के साथ स्वीकार किया—एक सच्चे मित्र या भाई की तरह। मुझे कितनी खुशी हुई थी! अब कोई भी दुराव-छिपाव रखने की जरूरत नहीं थी। उसने भी यह महसूस किया और दिनोंदिन मेरे निकटतर होता गया।

क्या ऐसी भी कोई बात रही होगी जिसका प्रसंग, माँ की चारपाई की बगल में, मोमबत्ती की लौ में, सुख और चिन्ता के उन क्षणों में हमने न उठाया हो? हमारे दिमाग में जो कुछ भी आता, उसके बारे में हम बातें करते और निहाल हो उठते। वे सुख के दिन थे गोकि चिन्ता से मुक्त नहीं। उनकी याद से सुख और पीड़ा दोनों की अनुभूति होती है। स्मृतियाँ—सुखद या दुःखद—हमेशा कष्टदायिनी होती हैं, मेरा तो अपना यही ख्याल है। लेकिन वह कष्ट या दर्द बड़ा मीठा

होता है। जब मेरा हृदय उदासी और गम मे डूबा रहता हूं तो वे स्मृतियाँ मुझमे ताजगी और आह्लाद भर देती है—ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार सध्या के ओसकण, सूरज की तप्त किरणो से मुर्झाये हुए फूल को नव-जीवन प्रदान कर देते है।

माँ धीरे धीरे चगी हो रही थी, फिर भी मै उसकी खाट की बगल में बैठी रहती। पोत्रोव्सकी मेरे लिये अक्सर किताबे लाता। पहले केवल मै नीद भगाने के लिये उन्हे पढा करती थी लेकिन बाद मे मै उन्हे ध्यान और जिज्ञासा से पढने लगी। उनमे इतनी नई नई बाते रहती कि मेरा हृदय नवीन अनुभूतियो से भर जाता। विषय जितने ही जटिल होते, वे उतने ही मेरे मन को भाते, मेरे हृदय में उमडते-घुमडते, मुझे विस्मय की भूल-भुलैयाँ मे डाल देते। भाग्य से उस आध्यात्मिक अभिक्रमण से मैने अपना सन्तुलन नही खोया। वह सब कुछ मुझे स्वप्निल सा लगता था।

जब मां नीरोग हो गई तो हम लोगों को रात्रि-जागरण से छुटकारा मिला। वह तब भी सोचा करती कि हम एक दूसरे से ऐसी बातें कर पाते थे जिनमें काफी गूढ़ और विशेष अर्थ निहित रहते, पर उतना अर्थ वे अपने ढंग से लगाती। कई सप्ताह तक मैं खुश, बेहद खुश रही

एक दिन पोकोल्नाकी का पिता हम लोगों से मिलने के लिये आया। मस्ती तो वह पहले से था ही लेकिन उस दिन वह असाधारण रूप से आह्लाद, उल्लास और वाक्-चातुर्य से भरा हुआ था। काफी हँसने हँसाने और मजाक कर लेने के बाद उसने अपनी खुशी के रहस्य का उद्घाटन किया और हमें बताया कि अगले ही हफ्ते में पेतेन्का की सालगिरह थी और उस मौके पर वह अपने नये वेस्टकोट और जूते पहन कर, जिन्हें खरीदने का वादा उसकी पत्नी ने किया था, पेतेन्का के पास आने का इरादा कर रहा था। बूढ़ा बहुत खुश था और लगता था जैसे उसकी गप्प का सिलसिला खतम ही नहीं होगा।

उसकी सालगिरह! ओह, रात-दिन मैं उसी के बारे में सोचा करती। मै भी, मित्र के नाते उसे उपहार देना चाह रही थी। लेकिन क्या उपहार देना चाहिये? आखिरकार, मैंने कुछ पुस्तके भेट करने का निश्चय किया। मुझे मालूम था कि वह अपनी पुस्तकों के सग्रह में पुश्किन की कृतियो का नया सस्करण शामिल करने के लिये लालायित था। अत मैंने पुश्किन की कृतियां ही उपहार स्वरूप देने का पक्का इरादा कर लिया। सिलाई करके मैंने तीस रूबल जमा किये थे और उनसे एक फ्रॉक खरीदना चाहती थी। लेकिन अब मैंने रसोईघर की नौकरानी बूढी मत्र्योना को बाजार भेजा ताकि वह पुश्किन की पुस्तको के पूरे सेट की कीमत पूछ कर आये। हे भगवान! जिल्द सहित ग्यारह पुस्तको का मूल्य लगभग ६० रूबल था। इतनी बडी रकम मैं कहाँ से लाती? मै सोचते सोचते थक गई लेकिन कोई रास्ता नज़र नही आया। मै माँ से भी नही कहना चाहती थी। वस्तुत', वह मेरी मदद कर देती, लेकिन वैसी हालत में घर का एक-एक व्यक्ति इसके बारे में जान जाता और तब मेरा उपहार,

7—500

पोक्रोव्सकी के अध्यापन की कृतज्ञता के रूप में दिया गया समझा जाता। मैं उपहार को विलकुल निजी बना कर अपनी ओर से देना चाहती थी। क्योंकि उसने मेरे लिये जो कष्ट उठाया था, उसके लिये मैं चिर ऋणी रहना चाहती थी और उसका वदला केवल अपनी मित्रता से देना चाहती थी। आखिर, मुझे रास्ता नजर आ ही गया।

मुझे मालूम था कि गोस्तीनी द्वोर में जहाँ पुस्तक-विक्रेता पुरानी कितावें वेचते है, वहाँ वहुत सी नयी कितावें ठीक से मोल-तोल करने पर आधे दाम पर ही मिल जाती है। अत मैंने यथाशीघ्र गोस्तीनी द्वोर पहुँचने का निश्चय किया। वह मौका दूसरे दिन हाथ लगा। बाजार से कोई जरूरी चीज खरीदनी थी और चूंकि माँ अस्वस्थ थी और अन्ना पयोदोरोवना को आलस्य लग रहा था, इसलिये यह काम मुझे ही सौंपा गया।

मैं मत्र्योना के साथ वाजार गई। भाग्य से शीघ्र ही सुन्दर जिल्द सहित पुश्किन का पूरा सेट नजर आ गया। मैं मोल-तोल करने लगी। विक्रेता ने तो

पहले बहुत अधिक कीमत माँगी। लेकिन काफी हीले-हवाले और लौट जाने के अभिनय के बाद वह दस रूबल के चाँदी के सिक्को मे सेट देने के लिये राजी हो गया। मोल-तोल भी अजीब चीज है! बेचारी मञ्योना की समझ में नही आ रहा था कि मै उन किताबो के लिये क्यो इतनी जान लडा रही थी? और उतनी ढेर सी किताबे लेकर क्या करूगी? लेकिन मुसीबत यह थी कि मेरे पास तीस रूबल के नोट थे और विक्रेता तो पहले माँगी गई रकम से एक कोपेक भी कम लेने के लिये हर्गिज तैयार नही था। मै हीला-हुज्जत करती रही और कई बार जाकर लौट आई तब दूकानदार पर कुछ असर पड़ा और उसने कीमत में ढाई रूबल और घटा दिये। साथ ही साथ वह ईश्वर की कसम खाकर कहने लगा कि केवल मेरी खातिर उसने कीमत कम कर दी है, दुनिया मे किसी दूसरे के लिये वह हर्गिज वैसा नही करता। यह सोच कर कि केवल ढाई रूबल की कमी से किताबें छोड देनी पडेंगी, मै दुख से रो ही पडने को थी कि अचानक परिस्थिति मेरे अनुकूल हो गई।

7*

पास ही, किताब की दूसरी दूकान पर, मैंने पोक्रोव्सकी के पिता को चार-पाँच पुस्तक-विक्रेताओं से घिरा हुआ पाया जो उसका ध्यान अपनी अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश कर रहे थे। प्रत्येक अपनी अपनी किताबों की तारीफ का पुल बांध रहा था। और पुस्तकें भी कैसी! हौसले से भरा बूढ़ा उन सभी पुस्तकों को ले लेने के लिये लालायित हो रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या पसंद करे और क्या न करे। जब मैंने पास जाकर पूछा कि वह क्या कर रहा है तो वह बेहद खुश हुआ। वह मुझे पेतेन्का से कम प्यार नहीं करता था। "मैं पेतेन्का के लिये कुछ किताबें खरीद रहा हूँ, वरवारा अलेक्सेयेवना। उसकी सालगिरह निकट आ रही है और मैं उसके लिये कुछ किताबें ले रहा हूँ क्योंकि किताबों में उसे बहुत प्यार है।" बूढ़ा हमेशा मसखरेपन के साथ बातें करता था पर, इस बार वह थोड़ा परेशान और व्यग्र दिखाई दिया। कोई भी किताब वह पसंद करता उसकी कीमत एक, दो या तीन रूबल होती। बड़ी किताबों की कीमत उसने पूछी ही नहीं, केवल

हसरत भरी निगाहो से देखता रहा या उनके पन्नो को उलट-पुलट कर फिर से रख दिया। "नही, नही, ये काफी महँगी है," वह बुदबुदाना, "शायद वे अच्छी हो।" और फिर वह पत्रिकाओ, सगीत-पुस्तको या सस्ती पुस्तको के सूचीपत्र के साथ सर खपाने लगता। "इन्हे खरीदने की क्या जरूरत?" मैंने पूछा। "ये तो किसी काम की नही है!" "ओह, नही, नही, यहाँ अच्छी किताबें भी है, काफी अच्छी," उसने जवाब दिया। अन्तिम शब्द उसने इस प्रकार अटकते हुए कहे कि मैंने सोचा वह रो पडेगा क्योकि अच्छी पुस्तके बहुत महँगी थी। मुझे लगा जैसे आँसू की एक मोटी बूँद लुढक कर उसकी लाल नाक पर गिर पडेगी। मैंने पूछा कि उसके पास कितनी रकम थी। "ओह, रकम," वह बुदबुदाया और पुराने अखबार के टुकडे मे लिपटी अपनी सारी पूँजी उसने मेरी ओर बढा दी। "एक एक रूबल के दो नोट है, बीस कोपेक का सिक्का और लगभग बीस कोपेक की रेजगारी।" मै खीचे खीचे उसे अपने पुस्तक-विक्रेता के पास ले गई। "यहाँ ये ग्यारह पुस्तके है जिनकी कीमत साढे बत्तीस रूबल पडती है।

मेरे पास तीस रूबल है। तुम्हारा यदि ढाई रूबल मुझे मिल जाय तो शामिलात से पुस्तकें खरीद कर हम लोग साथ-साथ उन्हें उतार दें।" वह खुशी से नाच उठा और उसने अपनी पूंजी दूकानदार के हाथ पर रख दी। दूकानदार ने तुरन्त किताबों का बंडल हमें सौंप दिया। किताबों को जेबों में भरे और बगल में दबाये बूढ़े ने वादा किया कि दूसरे दिन वह मेरे पास आकर चुपके से किताबें दे जायेगा और खुशी से झूमता हुआ मेरी अमूल्य धरोहर के साथ घर चला गया।

दूसरे दिन बूढ़ा अपने बेटे से मिलने के लिये पहुंचा, और वहां घंटा भर ठहरने के बाद हम लोगों से भी मिलने आया। वह अपने चेहरे पर काफी भेदभरापन और विचित्र भाव लिये हम लोगों के पास आकर बैठ गया। खुशी से हँसते और हाथ रगड़ते हुए, जैसा कि गूढ़ रहस्य का उद्घाटन करने वाला व्यक्ति करता है, उसने मुझे बताया कि किताबें चुपके से उसने रसोईघर में मत्र्योना को दे दी है। तब इधर-उधर की दिलचस्प बातें होने लगी और बूढ़े ने विस्तारपूर्वक बताया कि

किस ढग से पेतेन्का को किताबें भेंट की जायेगी। लेकिन इस सम्बन्ध में जितनी अधिक बाते वह करता गया मेरी धारणा उतनी ही पक्की होती गई कि उसके दिमाग में कोई ऐसी बात ज़रूर नाच रही थी जिसे कहने की हिम्मत वह नही कर रहा था। मै कुछ नही बोली लेकिन मैंने प्रत्यक्ष देखा कि उसकी सब खुशियाँ धीरे धीरे तिरोहित होकर चिन्ता और बेचैनी में परिणत होने लगी।

"बरबारा अलेक्सेयेवना," आखिर उसने डरते डरते दबी आवाज में कहा, "तुम्हे मालूम है, मै क्या सोच रहा हूँ?" वह बुरी तरह झेंपता जा रहा था। "मेरा ख्याल यह है कि दस पुस्तके तुम अपनी ओर से दो और ग्यारहवी पुस्तक मै अपनी ओर से स्वय भेंट करूँ। इस प्रकार हम दोनो की ओर से अलग अलग उपहार हो जायेंगे और . ." वह इतना सिटपिटा गया था कि आगे कुछ नही बोल सका और मेरे उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा। "हम दोनो की ओर से शामिलात उपहार देने में तुम्हे क्यो आपत्ति है, ज़खार पेत्रोविच?" मैंने पूछा। "बात यह है, बरबारा

अलेक्सेयेवना, कि. " वह तुतला रहा था, आवाज लडखडा रही थी और वह बिलकुल लाल हो गया था। "बात यह है ." उसने फिर कहना शुरू किया, " कि मैं जब-तब पी लेता हूँ, वरवारा अलेक्सेयेवना, याने कि मैं पीने का आदी हो गया हूँ। मैं समझता हूँ कि कभी कभी मैं ठीक ढग से पेश नही आता हूँ क्योंकि कभी आदमी दुखी रहता है, या कोई चिन्ता जान खाये रहती है या कोई गम सताता रहता है या कोई न कोई मुसीबत या गड़बड़ी ही रहती है तो ऐसे मौके पर कुछ जरूरत से ज्यादा छननी है। और तुम्हे मालूम है कि पेतेन्का को यह पसद नही। वह नाराज हो जाता है, डांटता-फटकारता है और अच्छा-खासा भाषण दे बैठता है। अत मेरे उपहार को देखकर वह यह अनुमान लगायेगा कि मै ठीक रास्ते पर आ रहा हूँ। वह यही समझेगा कि मैं सब पैसे बहुत दिनो से जमा करता आ रहा हूँ क्योकि वह जो कुछ मुझे देता है उसके अलावा मुझे और कही से एक छदाम भी नही मिलता। उसे यह मालूम है. अत' यह देखकर कि मैंने केवल

उसी के लिये पैसे जमा किये है, वह खुशी से फूला नही समायेगा।"

मै बूढे को ओर मेरे उत्तर की प्रतीक्षा में उसकी उत्सुक आँखो को देखकर विचलित हो गई और मैंने तुरत निर्णय कर लिया।

"लेकिन जखार पेत्रोविच," मैने कहा, "तुम खुद सभी किताबें दे दो।" "सब? क्या तुम्हारा मतलब सभी किताबो से है?" "निस्सन्देह।" "बिलकुल मेरी ओर से उपहार स्वरूप?" "हाँ।" "सभी पुस्तकें मेरी ओर से?" "हाँ, सभी पुस्तके तुम्हारी ओर से।" बहुत देर तक यह बात उसकी समझ में नही आई।

"ओह," मानो वह स्वप्न में बुदबुदा रहा था, "यह तो वस्तुत बडा अच्छा होगा, बहुत ही सुन्दर। लेकिन तुम? तब तुम क्या दोगी, वरवारा अलेक्सेयेवना?" "मेरी तरफ से कोई उपहार नही दिया जायेगा, बस!" मैने कहा। "कोई उपहार नही?" वह लगभग भय से चिल्ला उठा। "तुम्हारी तरफ से कोई उपहार नही, कुछ नही?" हताश होकर वह

हमारे साथ रहा लेकिन उस दिन चुपचाप नहीं बैठ सका — हँसता-खेलता, गप और मज़ाक करता तथा साशा के साथ खिलवाड़ करता रहा। मुझे चूम लेता या चिकोटियाँ काट लेता था। अन्ना फ्योदोरोवना को पीछे से मुंह चिढ़ाता रहा। अन्त में अन्ना फ्योदोरोवना के खदेड़ने पर ही वह वहाँ से हटा। उसके पहले मैंने कभी उसे उतना ज़िन्दादिल नहीं देखा था।

सालगिरह के मौक़े पर वह ठीक ग्यारह बजे दरवाज़े पर आ धमका — पैवंद लगा हुआ कोट लेकिन

नया वेस्टकोट और चमकदार जूते। दोनों हाथों में किताबों के बंडल थे। हम लोग अन्ना येगोरोवना के कमरे में बैठ कर कॉफी पी रहे थे (उस दिन रविवार था)। वह अपनी बातों से यह प्रमाणित करने की कोशिश करने लगा कि पुश्किन महान कवि था लेकिन तुरत ही वह सब कुछ भूल गया और भटक कर दूसरी बात पर चला आया और कहने लगा कि आदमी को आदर्श जीवन बिताना चाहिये, बुरी लतो से दूर भागना चाहिये और अन्त मे उसने विश्वास दिलाने की कोशिश की कि वह कुछ दिनो से ठीक रास्ते पर आ गया है और उसने आदर्श जीवन व्यतीत करने का निश्चय कर लिया है। वह हमेशा अपने बेटे की बातो की कद्र करता आया है और उसी की बदौलत वह अच्छा बन सका है। इसके प्रमाणस्वरूप उसने बेटे के सामने किताबें बढा कर उन्हे स्वीकार करने का उससे अनुरोध किया—वे किताबें, जिन्हे उसने अपने बेटे से मिले पैसो को जमा कर खरीदा था।

बूढे की बातो को सुनकर मैं हँसे बिना नही रह सकी। साथ-साथ मेरी आँखो में आँसू

उमड आये। वह ऐसे मौको पर किस्से गढना अच्छी तरह जानता था। किताबें उसके बेटे के कमरे में पहुँच गई और वहाँ अलमारी मे सजा दी गई। पोक्रोव्सकी को सत्यता का पता लग गया था। बूढे को हमारे साथ ही भोजन करने के लिये आमन्त्रित किया गया। कितना मजेदार दिन था वह! भोजन के वाद हम लोगो ने ताश खेले। साशा धमा-चौकडी मचा रही थी और मै भी उससे कुछ कम नही थी। पोक्रोव्सकी मेरी ओर बहुत ध्यान दे रहा था और अकेले में बोलने की कोशिश कर रहा था लेकिन मै खुद बढावा नही दे रही थी। चार वर्षों के दरमियान वह सब से अधिक खुशी का दिन था।

लेकिन अब मनहूस और दुखद स्मृतियो का, मेरे अभिशप्त दिनो का सिलसिला शुरु होता है। शायद, इसलिये, मेरी कलम धीरे धीरे चल रही है, अनमने ढग से आगे बढ रही है। मैंने अपने सुख के दिनो की छोटी-मोटी बाते भी वडे विस्तार से लिख डाली हैं। उसके वाद मेरी मुसीबतो और क्लेशो

का सिलसिला शुरू होता है जो मालूम नही कब खतम होगा।

मेरा दुर्भाग्य पोक्रोव्सकी की बीमारी और मृत्यु के साथ साथ शुरू हुआ।

जिस सुखद दिन का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है, उसके दो महीने के बाद वह खाट से जा लगा। उन दो महीनो के अन्दर उसने एक नौकरी ढूंढने की जी-तोड़ कोशिश की थी। वह अब तक बेकार था। अपनी आखिरी साँस तक हर तपेदिक के रोगी की तरह उसे भी यह आशा बनी रही कि उसे बहुत दिनो तक जीना है। उसे शिक्षक की नौकरी मिल सकती थी लेकिन वह इसे पसद नही करता था। जहाँ तक सैनिक सेवा में भर्ती होने का सवाल था, वह उसके खराब स्वास्थ्य के कारण स्वप्न मात्र ही था। इसके अलावा उसे अपनी पहली तनख्वाह के लिये एक लम्बे अरसे तक इन्तजार करना पड़ता। वह दिनोदिन निराशावादी होता गया, उसका स्वास्थ्य गिरता गया और उसने उधर ध्यान देना भी छोड दिया। पतझड के मौसम में भी वह एक पतला सा कोट पहने नौकरी की तलाश

ऐसे भी मौके आते, हालाकि बहुत कम, जब कि पोक्रोव्स्की मुझे पहचान पाता। अधिकतर वह बेहोशी की हालत में ही रहता था। कभी कभी वह रात भर लम्बे लम्बे अस्पष्ट वाक्य बडबड़ाता रहता. उसकी मोटी आवाज़ उस छोटे से कमरे में अजीब सी लगती थी। मैं बहुत डर जाती थी। अन्तिम रात तो वह अत्यन्त उन्माद की हालत में रहा, उसे बडी तकलीफ थी और वह कराहता रहा। हर कोई डर गया था और अन्ना फ्योदोरोवना ने तो भगवान से प्रार्थना की कि वे उसे जल्दी से उठा लें। डाक्टर ने एलान कर दिया था कि सुबह होते होते मरीज खतम हो जायेगा।

पोक्रोव्स्की के पिता ने दरवाज़े पर बैठे बैठे रात काट दी। उसके लिये दरवाजे पर एक चटाई बिछा दी गई थी। वह रात भर कमरे में आता-जाता रहा, उसका चेहरा बडा डरावना हो गया था। उसका दिल चूर-चूर था, कष्ट और व्यथा से वह पाषाणवत् हो गया था। भय से उसका सर काँप रहा था, सारे शरीर में कँपकँपी समा गई थी और रात भर वह अपने

आप बडबडाता रहा। मै भी उसकी हालत देखकर डरने लगी। पूर्ण रूप से क्लान्त होकर सुबह होने के ठीक पहले वह गाढी नीद में सो गया।

सात बजते-बजते मैंने देखा कि मौत नजदीक आ गई थी, इसलिये पोनकोव्सकी के पिता को जगाया। बेचारा मरीज बिलकुल होश में था और उसने हम सबो से विदा माँगी। मै खुल कर रो नही पाई हालाकि मेरा हृदय फटा जा रहा था।

आखिरी क्षण तो बड़ा हृदयविदारक रहा। वह लडखडाती जबान से किसी बात पर जोर देता रहा लेकिन उसका अर्थ मै साफ-साफ समझ नही पाई। यह मेरे लिये असहनीय हो उठा। घटे भर वह बहुत बेचैन रहा। मेरी ओर दीनतापूर्वक देखता रहा और इशारे से कुछ कहने की चेष्टा करता रहा। तब उसने अपनी मोटी और अस्पष्ट आवाज़ में कुछ कहने की कोशिश की। फिर भी मै कुछ नही समझ पाई। बारी बारी से मैंने सबको उसके पास बुला दिया, उसे पानी दिया। लेकिन उसने उदासी के साथ अपना सर हिला दिया। अन्तत मैंने महसूस किया कि वह क्या चाहता था

वह सूरज, दिन की रोशनी तथा ससार की सभी चीजो का अन्तिम दर्शन करने के लिये मुझसे पर्दा खीच कर हटा देने के लिये कह रहा था। मैंने पर्दा हटा दिया लेकिन सुवह की रोशनी उतनी ही उदास और मरियल लग रही थी जितना कि मौत की सेज पर सोया हुआ पोक्रोव्सकी। सूरज की रोशनी घने कुहासे के पीछे छुपी हुई थी। आसमान उदास और नीचे लटका हुआ जान पडता था और छोटी छोटी फूहियाँ खिडकी के शीशे पर ढुलक रही थी, तथा उदासी और भी घनीभूत होती जा रही थी। सूर्य की क्षीण किरणे दीप की काँपती हुई लौ से जूझ रही थी। मरनेवाले ने मुझे हसरत भरी निगाह से देखा और दूसरे क्षण वह मौत की नीद सो गया।

अन्ना फ्योदोरोवना ने उसकी अत्येष्टि क्रिया का प्रवध किया। वहुत ही मामूली कफन और भाड़े की साधारण गाडी का इन्तजाम हो गया था। अन्ना फ्योदोरोवना ने मृतक की सव पुस्तको और चीजो पर कब्जा कर लिया और इस प्रकार उसने अपनी क्षति की पूर्ति कर ली। बूढ़े वाप ने अन्ना फ्योदोरोवना के

साथ बडी लडाई की और उसने यथासम्भव अधिक से अधिक पुस्तकें वापस लेकर उन्हें अपनी जेबों और टोप में भर लिया। वह तीन दिनों तक उनसे जुदा नहीं हुआ। वह गिरजाघर भी जाता तो उन्हें अपने साथ साथ लिये जाता। उन दिनों वह बिलकुल सुध-बुध खो बैठा था। वह शव के पास लगातार मँडराता रहा, कभी वेन्चिक* ठीक करता, कभी मोमबत्ती बुझाता और जलाता। उसका मस्तिष्क भटकता रहा। गिरजाघर में शव के साथ न माँ गई और न अन्ना पयोदोरोवना। माँ अस्वस्थ थी और अन्ना पयोदोरोवना जाने के लिये तैयार हुई लेकिन बूढे से झगडा हो जाने के कारण उसने अपना इरादा बदल दिया। मेरे और बूढे के सिवा और कोई नही गया। प्रार्थना के समय मेरे हृदय में एक अज्ञात भय समा गया। भविष्य की विभीषिका से मैं सिहर उठी। मैं बडी कठिनाई से अन्त तक अपने

---

* वेन्चिक—ग्रीक गिर्जाघर की रीति-रस्म के अनुसार शव के सर पर रखा जाने वाला मुकुट।—अनु०

को वहाँ रोक पाई। अन्त मे शव को ढँक कर बन्द कर दिया गया और गाडी पर रख दिया गया। गाडी चल पडी। मै सडक के मोड तक गाडी के साथ साथ गई। गाडीवान ने घोडे को तेज दौडा दिया था और बूढा हाँफते और सुबकते हुए उसके पीछे दौडा चला जा रहा था। उसका टोप गिर पडा लेकिन वह उठाने के लिये नही मुडा। बारिश से उसके बाल भीग चले थे और तेज हवा उसके चेहरे पर आघात कर रही थी। वह दुनिया से बेखबर गाडी के पीछे पीछे दौडता रहा और उसका पुराना कोट फडफडाता रहा। किताबे उसकी जेबो से बाहर निकली आ रही थी और एक मोटी सी किताब वह अपने सीने से दबाये रहा। राहगीर अपने टोप उतार लेते और छाती पर 'क्रास' का चिन्ह बना लेते, कुछ बूढे को देखने के लिये रुक जाते। किताबें जेबो से निकल निकल कर कीचड मे गिरती रही। जब कोई रोक कर उसे गिरी हुई पुस्तके दिखाता तो वह झपट कर उन्हे उठा लेता और गाडी का साथ पकडने के लिये दौड पडता। सडक की नुक्कड पर उसका साथ एक फटेहाल बूढी भिखारिन ने पकड लिया। जब

8*

गाडी आँखो से ओझल हो गई तो मै घर दौडी और फूट फूट कर रोते हुए मा की छाती पर गिर पडी। मैने उसे चूमा, अपनी बाहो मे कस लिया मानो मै अपने अन्तिम सहारे को जुदा होने देना नही चाहती थी। लेकिन मौत बिलकुल उसके सर पर भी मंडरा रही थी।

११ जून

कल की सैर के लिये मै बहुत कृतज्ञ हूँ, मकार अलेक्सेयेविच! कितने मनोहर और सुन्दर है वे द्वीप, चारो तरफ ताज़गी और हरियाली ही हरियाली! घास और पेड, बहुत दिनो से मुझे देखने को नही मिले थे। जब मै बीमार थी तो यही सोचा करती थी कि अब उन्हे फिर से देखने के लिये मै जिन्दा नही रहूँगी, अब तुम खुद सोच सकते हो कि कल मुझे कैसा लगा होगा! कृपया इसलिए परेशान नही होना कि मै कल उदास-उदास सी लगती थी। सच्ची बात तो यह है कि मै बहुत ही खुश थी, मेरा हृदय हलका हो

चला था लेकिन पता नही क्यो सुख के क्षणो मे, मैं हमेशा उदासी से अभिभूत हो जाती हूँ। यदि मैं रोई भी तो उससे क्या! मुझे कभी कभी रोना आ जाता है, मालूम नही क्यो। जिन वस्तुओ से मुझे कुछ अपनापन लगता है, उनसे मुझे सहज ही चोट भी पहुँचती है, उनकी छाप मेरे लिये बहुत दु खदायिनी होती है। निरभ्र, उदास आकाश, अस्तगामी सूर्य और सायकाल की नीरवता–जाने क्यो–इन सबो ने मुझे सहज ही विचलित कर दिया, मेरा हृदय भारी हो चला और आँसू निकल पडे। लेकिन यह सब मै क्यो लिख रही हूँ? मेरे हृदय में भी यह सब अस्पष्ट और धुधला है और कागज पर तो बिलकुल निरर्थक, लेकिन शायद तुम समझ जाओगे। रुदन और हास्य! कितने नेक, कितने दयालु हो तुम मकार अलेक्सेयेविच! जब कल तुम मेरी ओर देख रहे थे तो मै तुरत जान गई कि तुम मेरी आँखो को पढने की, मेरी खुशी को पकडने की कोशिश कर रहे थे। मेरी आँखें चाहे झाडियो पर लगी रहती या नन्हे पौधो पर, या पेडो की कतार पर या जल की लहरियो पर, तुम बडे गर्व

से मेरा निरीक्षण करते रहे मानों चारों तरफ तुम्हारा ही साम्राज्य छाया हुआ था। इससे स्पष्ट है कि तुम्हारे पास एक बहुत ही दयावान् हृदय है, मकार अलेक्सेयेविच और उसके लिये तुमने मुझे बहुत प्यार है। विदा, मेरे प्रियवर! मैं आज फिर अस्वस्थ हूँ। मेरे पैर भीग जाने के कारण मुझे सर्दी हो गई है। फेदोरा की भी तबीयत ठीक नहीं। इसलिये हम दोनों आज अपंग हैं। हम लोगों को भूलना नहीं और जब जब मौका मिले आते रहना।

तुम्हारी व० दो०

१२ जून

मेरी प्यारी वरवारा अलेक्सेयेवना,

क्या तुम्हें मालूम है कि कल मुझे तुम्हारी चिट्ठी के काव्य से परिपूर्ण और रस में डूबी होने की आशा थी? पर, इसके ठीक विपरीत, तुमने एक छोटा सा पुर्जा लिख भेजा है। फिर भी तुम्हारी वह थोडी सी ही लिखावट मेरे लिये बहुत बडी नियामत है। उसमें

प्रकृति के प्रति अनुराग है, दृश्य-दृश्यावली का वर्णन है और अनुभूतियो की तीव्रता है—मतलब कि तुमने वडे अच्छे ढग से सब कुछ चित्रित किया है। जहाँ तक मेरा सवाल है, मुझमे वह प्रतिभा ही नही है। दर्जनो पृष्ठ लिख डालने पर भी उनमें ऐसी वात आ ही नही सकती। मैं आजमा कर देख चुका हूँ और मुझे यह अच्छी तरह मालूम है। तुम कहती हो, मेरी प्रिया, कि मैं वहुत दयालु और परोपकारी हूँ तथा प्रकृति में निहित ईश्वर प्रदत्त सभी सद्‌गुणो के प्रति चेतन हूँ, मतलब कि वहुत वहुत ढग से तुम मेरी प्रशसाएँ करती हो। यह सब सत्य है, मेरी प्रियतमा, ध्रुव सत्य! मैं ठीक वैसा ही हूँ जैसा कि तुमने वर्णन किया है। मैं अपने आप को अच्छी तरह जानता हूँ। जो कुछ तुम लिखती हो उसे पढकर हृदय उद्वेलित हो उठता है और दुखद विचार और भावनाएँ फिर से जीवित हो उठती है। अव मैं तुम्हे अपने वारे में कुछ वताना चाहता हूँ, मेरी वरवारा अलेक्सेयेवना।

जब मैंने पहली बार दफ्तर का मुंह देखा, तब मैं सत्रह साल का था। तब से तीस साल और बीत गये हैं। इस बीच नौकरी की मेरी बहुत सी वर्दियाँ चिथडे-चिथडे हो चली। लेकिन मैं अनुभवी और बुद्धिमान भी हो चला हूँ, आदमियो को पहचानने लगा हूँ। एक समय आया, जब मुझे पदक से सुशोभित करने के लिये चुना गया। तुम्हे विश्वास भले ही न हो लेकिन ईश्वर साक्षी है। बदकिस्मती से बुरे लोग हर जगह टपक पडते है। मैं शायद अज्ञानी और निपट गँवार हूँ, लेकिन मेरे पास भी एक हृदय है–ठीक दूसरो की ही तरह। हाँ, तो तुम्हे मालूम है, वारेन्का, कि उस बुरे आदमी ने मेरे साथ क्या बुराई की? मुझे कहते हुए शर्म आ रही है–बेहतर होता कि तुम यह पूछती कि उसने ऐसा किया क्यो? केवल इसलिये कि मैं भीरु हूँ, चुपचाप रहना पसद करता हूँ और मेरा हृदय बहुत ही कोमल है। यह सब उसे भाता नही था। बस कारण यही था। इसकी शुरुआत छोटी छोटी बातो से हुई "मकार अलेक्सेयेविच ऐसा है, मकार अलेक्सेयेविच वैसा है।" उसके बाद यह कि "मकार

अलेक्सेयेविच से और आशा ही क्या की जा सकती है? "
और अन्तत यह कि "किसको दोष दिया जाय? वस्तुत मकार अलेक्सेयेविच को ही।" और इस प्रकार, मेरी प्रिया, हमेशा मकार अलेक्सेयेविच को ही दोषी ठहराया जाने लगा। यही उन लोगो ने किया मन्त्रालय भर में मेरी बुराइयो का डका पीट दिया। लेकिन इतने ही से उन्हे सतोष नही हुआ। शीघ्र ही मेरे जूतो, वर्दियो, मेरे बालो और मेरे शरीर की नुकताचीनी की जाने लगी। कहा गया ये सब ऐब से भरे हुए थे और इन सभी को बदलने की जरूरत थी। यह सिलसिला वर्षों तक चलता रहा, कोई भी दिन इससे खाली नही जाता। अब मै इसका आदी हो चला हूँ। मै किसी भी चीज का आदी हो सकता हूँ क्योकि मै छोटा आदमी हूँ, बहुत ही तुच्छ हूँ। पर मेरे साथ ये ज्यादतियाँ क्यो? मैंने क्या बुराई की है? क्या मैंने किसी की वाजिब तरक्की छीन ली है? क्या किसी की निन्दा अपने अधिकारियो के सामने की है? क्या अपनी तरक्की के लिये कोई जाल-फरेब किया है? किसी के खिलाफ क्या कभी कोई षड्यन्त्र रचा है? इन सब बातो को

सोचने से भी तुम्हे शर्म आनी चाहिये। इन सब की मुझे जरूरत ही क्या थी? और जरा सोचो, मेरी प्रियतमा, क्या मुझमें महत्वाकांक्षा और छल-कपट के बीज मौजूद है? भगवान क्षमा करे, लेकिन आखिर मेरी किस गलती के कारण मुझे यह सब भुगतना पड़ा है? तुम्हारी नजर में मै एक योग्य व्यक्ति हूं, हूं या नही? और तुम, मेरी प्रिया, सब किसी से बहुत, बहुत अच्छी। सबसे बडा नागरिक-गुण क्या है? येवस्ताफी इवानोविच कल आपसी बातचीत में कह रहा था कि सबसे बड़ा नागरिक-गुण है पैसे बनाना, चाहे उनके लिये कोई भी सूरत अख्तियार करनी पडे। येवस्ताफी इवानोविच दरअसल मजाक कर रहा था (मुझे विश्वास है वह मजाक ही कर रहा था)। लेकिन नैतिकता तो यही है कि एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति पर बोझ बन कर नही रहना चाहिये और मै किसी पर बोझ बन कर नही हूं। मै अपनी रोटी खुद कमा लेता हूं, बासी ही सही, लेकिन ईमानदारी और मेहनत के साथ। आदमी को करना ही क्या है? कागज-पत्रो की नकल करना कोई बडा कौशल नही है लेकिन फिर भी मुझे इसके

लिये गर्व है क्योंकि मै अपने पसीने की कमाई खाता हूं। कागज़-पत्रो की नक़ल करने मे बुराई ही क्या है? क्या यह पाप है? "वह वहां बैठे बैठे नकल कर रहा है।" "दफ्तर का चूहा नकल कर रहा है।" इसमे बुराई ही क्या है? मेरी लिखावट बहुत सुन्दर और साफ रहती है तथा महामहिम बहुत खुश रहते है—महामहिम के लिये महत्त्वपूर्ण कागज-पत्रो की नकल करने का मुश्किल काम मेरे ज़िम्मे ही सौंपा जाता है। जहाँ तक शैली का सम्बन्ध है, भगवान भला करे, वह मेरे पास है ही नही। मै यह अच्छी तरह जानता हूँ, और यही कारण है कि नौकरी में मुझे तरक्की नही मिली। यहाँ तक कि तुम्हारे पास भी, मेरी वारेन्का, मै उसी ढग से लिखता हूँ जैसा कि अभी लिख रहा हूँ—भावनाओ और अलकार से कोई वास्ता नही। क्या मै यह पूछ सकता हूँ कि यदि सब लोग कविता रचने लगे तो क्या होगा? तब नकल करने का काम कौन करेगा? मुझे उत्तर चाहिये, मेरी प्रिया! क्या तुम नही देखती, मेरी वारेन्का? तब मेरा अस्तित्व अनिवार्य है। उन्हे नुकताचीनी करने दो, फबतियाँ कसने दो।

उन्हे मुझे "दफ्तर का चूहा" भी कहने दो, यदि मै वैसा लगता होऊँ। लेकिन क्या उनके पास यह देखने के लिये आँखें नही है कि मेरा अस्तित्व जरूरी है, कि यह चूहा आवश्यक है, उपयोगी है, इस चूहे की प्रशंसा होती है, इसकी गणना होती है। मै एक वैसा ही चूहा हूँ। खैर, चूहो के बारे में काफी हो चुका। यह सब उल्लेख करने का मेरा अभिप्राय नही था, यह मेरे स्वभाव का दोष है। मै बिलकुल ही भूल गया। बिदा, मेरी प्रिया, मेरी प्रेरणा। निश्चय ही मै तुमसे मिलने के लिये शीघ्र ही आऊँगा, मेरी नन्ही अप्सरा। अकेलापन महसूस करने की जरूरत नही। मै तुम्हारे लिये एक पुस्तक भी लाऊँगा। बिदा, वारेन्का।

तुम्हारा शुभचिंतक,

मकार देवुश्किन।

२० जून

मेरे प्रिय मकार अलेक्सेयेविच,

मै अपना काम समय पर पूरा कर लेने के अभिप्राय से यह जल्दबाजी में लिख रही हूँ। मुझे

कहना यह है कि एक बड़े अच्छे सौदे का मौका हाथ लगा है। फेदोरा कहती है कि कोई वेस्टकोट, ट्राउजर और टोपी के साथ अपना नया सूट बेचना चाहता है—काफी सस्ता। क्या तुम उसे नही खरीद सकते? अब तो तुम्हारी हालत बेहतर है, जैसा कि तुमने खुद स्वीकार किया है। इसलिये कृपया यह न कहना कि तुम्हारे पास पैसे नही। ये चीजे बहुत ही आवश्यक है। जरा अपने को देखो, अपने कपडो की ओर देखो। वे कितने गये-गुजरे है, बहुत शर्म की बात है। तुम्हारे पास कोई नया कपडा नही। मुझे पक्का यकीन है गोकि तुम हमेशा कहते आये हो कि तुम्हारे पास नये कपडे है। भगवान जाने, तुम्हारे वे नये कपडे क्या हुए। अत कृपया मेरी बात मान लो, मेरे लिये ऐसा करो ताकि मुझे विश्वास हो जाय कि तुम मुझे प्यार करते हो।

तुमने मेरे पास कुछ मलमल उपहारस्वरूप भेजा है लेकिन तुम अपने को बर्बाद करने पर क्यो तुले हुए हो? जिस तरह से तुम पैसे लुटा रहे हो, उससे बडा डर लगता है। कितने शाहखर्ची हो तुम! ये चीजे सचमुच

अनावश्यक हैं। मैं जानती हूँ, मुझे पक्का विश्वास है कि तुम मुझे प्यार करते हो। उपहारों के जरिये उसे प्रमाणित करने की कोई जरूरत नहीं, खासकर जब मुझे उन्हें स्वीकार करने में बड़ी कठिनाई होती है। मुझे मालूम है कि तुम्हें उनके लिये क्या कीमत देनी पडती हैं। फिर कभी ऐसी गलती नहीं करना। मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ। कभी नहीं। तुमने इच्छा प्रगट की है, मकार अलेक्सेयेविच कि मैं तुम्हारे पास अपनी डायरी के शेषांश भेज दूँ और उसको पूरी कर दूँ। पर सच्ची बात तो यह है कि मैं सोच भी नहीं सकती कि उतना भी मैं कैसे लिख पाई। मैं अपने अतीत के बारे में कुछ कहना या सोचना भी बर्दाश्त नहीं कर सकती। मैं पीछे की ओर देखना भी नहीं चाहती, मुझे बहुत डर लगता है। अपनी गरीब माँ के बारे में भी कुछ कहना मेरे लिये मुश्किल है जो अपनी बेटी को शैतानों के पजो में छोड कर चल बसी। उसकी याद से ही मेरे कलेजे से खून निकलने लगता है। यह सब कुछ इतना ताजा है कि मैं अभी तक होश में नही आ सकी

हूँ। एक साल बीत जाने पर भी शान्ति मुझसे दूर भागती नजर आती है। तुम्हे यह सब कुछ मालूम है!

मैं तुम्हे बता चुकी हूँ कि अन्ना फ्योदोरोवना अब क्या सोचती है। वह मुझे कृतघ्न कहती है और साफ इन्कार करती है कि मिस्टर बीकोव की कार्रवाइयो से उसका कोई सरोकार था। वह मुझे वापस ले जाना चाहती है और कहती है कि मुझे भिखमगी की हालत मे रहना शोभा नही देता। वह कहती है कि यदि मैं वापस चली जाऊँगी तो वह मिस्टर बीकोव को प्रायश्चित्त करने के लिये बाध्य करेगी और उनसे मुझे दहेज भी दिलायेगी। भगवान, उन लोगो को माफ करे। मैं यहाँ तुम्हारे साथ काफी सुखी हूँ और दयालु फेदोरा को पाकर मुझे अपनी नानी की बहुत याद आती है। तुम दूर के सम्बन्धी हो, लेकिन तुम्हारा नाम ही मेरी रक्षा के लिये यथेष्ट है। मैं उन लोगो के बारे में सोचना भी नही चाहती और यदि सभव हुआ तो उन्हे भूल जाने की कोशिश करूँगी। मुझसे

और वे चाहते ही क्या है! फेदोरा कहती है कि यह केवल बकवास है और वे मुझे फिर अकेली छोड देगे। ईश्वर करे, ऐसा ही हो!

व० दो०

२१ जून

मेरी प्रिया, मेरी नन्ही कपोती,

मुझे मालूम नही, मै कैसे आरभ करूँ। कितनी अजीब बात है, मेरी प्रियतमा, कि हम लोग यहाँ, इस तरह रहते है। ऐसे सुख के दिन मुझे कभी नसीब नही हुए थे। मुझे तो ऐसा लगता है जैसे भगवान की अनुकम्पा से ही मुझे यह घर और परिवार मिला है। प्रियतमा! मेरी प्यारी प्यारी सी नन्ही वारेन्का! मैंने जो चार ब्लाउज तुम्हारे लिये भेजे है, उनके लिये तुम अपनी कीमती साँसे क्यो जाया कर रही हो? तुम्हे उनकी जरूरत थी, फेदोरा ने मुझे सब कुछ बता दिया था। तुम्हे कुछ देकर मुझे कितनी खुशी होती है! यह सब कुछ मै अपनी खुशी के लिये, केवल अपनी खुशी के लिये करता हूँ। अत वह खुशी मुझसे न

छीनो, मेरी प्रिया। मुझे दुख पहुँचाने, तकलीफ देने से क्या लाभ? मेरी जिन्दगी पूरी हो चुकी है। मै दो प्राणियो के लिये जी रहा हूँ—अपने लिये और तुम्हारे लिये। अब तो समाज मे भी मेरा प्रवेश आरभ होनेवाला है। मेरा पडोसी रतज्यायेव, वही अफसर जो साहित्यिक गोष्ठियो का आयोजन करता रहता है, आज शाम को मुझे चाय-पान पर निमन्त्रित कर स्वय ले जानेवाला है। साहित्यिक कृतियो का पाठ करने के लिये वहाँ सभी एकत्र होगे। यही हम लोगो का रवैया है। अच्छा, विदा मेरी प्रियतमा। मैंने यह सब यूं ही लिख डाला है ताकि तुम्हे पता चल जाय कि मै सकुशल हूँ। तेरेजा से मुझे मालूम हुआ है कि तुम्हे कसीदाकारी के लिये रगीन सिल्क की जरूरत है। मै उसे खरीदूंगा, जरूर खरीदूंगा, मेरी प्रिया। कल तक तुम्हारी इच्छा की पूर्ति जरूर हो जायेगी, मेरी वारेन्का। मुझे यह भी मालूम है कि उसे कहाँ से खरीदा जा सकता है।

तुम्हारा सच्चा मित्र,

मकार देवुश्किन।

२२ जून

मेरी प्रिय वरवारा अलेक्सेयेवना,

मुझे खेद है कि मैं तुम्हें एक शोकपूर्ण, बहुत ही शोकपूर्ण घटना के बारे में लिखने जा रहा हूँ जो हमारे मकान में घटी है। गोरश्कोव का नन्हा लड़का आज सुबह चार बजे चल बसा। मुझे उसकी मृत्यु का ठीक ठीक कारण मालूम नहीं शायद सिन्दूर ज्वर से या इसी तरह के किसी ज्वर से उसकी मृत्यु हुई। मैं उन्हें सांत्वना देने के लिये उनके यहाँ गया था। वे बहुत गरीबी से रहते हैं और उनका कमरा कितना गन्दा था। कोई आश्चर्य की बात नहीं बीच में केवल कई पर्दे डालकर वे सब एक ही कमरे में रहते हैं। काफिन तैयार था— साधारण लेकिन साफ-सुथरा। उन्होंने बना-बनाया ही खरीद लिया था। लड़का नौ साल का था और लोग कहते हैं कि बहुत ही होनहार। उन्हें देखकर बड़ी चोट पहुँची, वारेन्का। माँ चिल्ला-चिल्ला कर रो नहीं रही थी बल्कि मुरझा कर बेजान हो गई थी।

शायद वे लोग उस बच्चे से मुक्त होकर राहत महसूस कर रहे थे क्योकि उसे वे भरपेट खिला नही सकते थे। उनके अभी भी दो बच्चे और है–एक दुधमुंहा बच्चा और छ साल की एक नन्ही लडकी। बच्चो की तकलीफ देखना सहन नही होता, खासकर जब वे हमारे अपने हो और हम उन्हे मदद देने से लाचार हो। पिता एक फटे-पुराने कोट में लिपटा हुआ टूटी कुर्सी पर बैठा था। आँसू उसके गालो पर से ढुलक रहे थे। शायद व्यथा से नही, बल्कि आदतन्। उसकी आखो के साथ कोई बात अवश्य है। वह विचित्र जीव है। जब उससे बाते करो तो वह हमेशा झेपता, घबडाया और मूक नजर आता है। नन्ही बच्ची, उसकी बेटी, काफिन के पास खड़ी थी–पीली और मरियल सी लेकिन चिन्तामग्न। मैं उस तरह चिन्ता में डूबी हुई नन्ही बच्ची को देखने की हिम्मत नही कर सकता, वारेन्का। मुझे उससे बडी तकलीफ होती है। उसकी गन्दी और पुरानी गुडिया फर्श पर अकेली

9*

मादाम [illegible]।

२५ जून

मेरे प्रिय मादाम अर्नेग्रेगेनिन,

मैंने तुम्हारी किताब, वाहियात किताब, लौटा दी है। ऊब उठी थी मैं उससे। ऐसा रत्न तुमने कहाँ से खोद निकाला? लेकिन मज़ाक से परे, मैं तुमसे पूछना चाहती हूँ कि क्या सचमुच तुम ऐसी किताबें पसन्द करते हो? मुझे शीघ्र ही एक किताब मिलने वाली है। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगी। और अब विदा! अधिक लिखने की मुझे फुरसत नहीं।

व० दो०

२६ जून

प्रिय वारेन्का,

सच्ची बात तो यह है कि मैंने वह किताब पढ़ी ही नहीं। मैंने कुछ पृष्ठ उलट-पुलट कर देखे और मुझे पता चला कि उसमें हँसाने के लिये काफी मसाला है। मैंने सोचा, शायद उससे तुम्हारा मनोरंजन हो, वह तुम्हें पसंद आये, इसलिये मैंने उसे भेज दिया था।

लेकिन रतज्यायेव ने कुछ अच्छी पुस्तकें देने का वादा किया है। तुम्हें पढ़ने के लिये काफी सामग्री मिल जायेगी, प्रिया। वह रतज्यायेव है न, वह काफी विद्वान है, प्रकांड पंडित है। वह खुद लिखता भी है। हे भगवान, वह लिखता कैसा है! उसके पास जादू की कलम है जिससे वह शैली गढ़ता चला जाता है, प्रत्येक शब्द में, यहाँ तक कि खोखले, मामूली और गँवारू शब्दों में भी, जिनका प्रयोग मैं फाल्दोनी या तेरेजा के साथ बातचीत में करता हूँ, वह शैली का निखार ला देता है। मैं हमेशा उसकी गोष्ठियों में जाता

हूँ। हम लोग वहाँ बैठे बैठे धूम्रपान करते रहते हैं और वह अपनी चीजें सुनाता रहता है। कभी कभी तो हम वहाँ पाँच बजे सुबह तक बैठे रह जाते हैं। साहित्यिक गोष्ठी! अत्युत्तम! मानो फूल बरस रहे हों! हरेक वाक्य से गुलदस्ता बनाया जा सकता है! और वह कितना सहृदय, उदार और विनम्र है! मुझसे उसकी कोई तुलना नही। बिल्कुल नहीं! उसकी अपनी प्रतिष्ठा है! और मेरी? सोचना ही बेकार है! मानो मेरा कोई अस्तित्व ही नही है! फिर भी वह मेरे प्रति बहुत उदार है। वह अपने लिये कुछ नकलें कर देने की भी मुझे इजाजत दे देता है। लेकिन इसका अर्थ यह नही, मेरी प्रिया, कि वह केवल एक चाल है, और वह उदार इसलिए है कि मुझे नकलें करने देता है। यह वाहियात विचार है, यह तोहमत है! मैं यह इसलिये करता हूँ कि मुझे खुद अच्छा लगता है, और वह मेरी खुशी की खातिर ऐसा करने देता है, इसलिये उदार है। मै शिष्टता की प्रशसा किये बिना नही रह सकता, मेरी प्रियतमा। वह बहुत ही नेक और दयालु है। हाँ, और सिद्धहस्त लेखक भी!

नाना? केवल सुनता हुआ वहाँ बैठ सकता हूँ (दूसरों की नकल शुरू का साहस खोता हुआ), लेकिन जब वे वाद-विवाद करते हैं तो मैं कतराने की कोशिश करता हूँ, वारेन्का। वह मेरे दिमाग के बाहर की बात है। वस्तुत., मैं बुद्धिमान बने रहने की जैसी चेष्टा करता हूँ। लेकिन दरअसल, मुझे अपने ऊपर शर्म आती है: सारी शाम लकड़ी के कुन्दे की तरह बैठे बैठे एक उपयुक्त शब्द के लिये माथापच्ची करता हूँ। और दुर्भाग्य ऐसा कि वह उपयुक्त शब्द दिमाग में कभी नही आता। उसका आधा भी नही। और तब यह सोचकर कितनी ग्लानि होती है, वारेन्का, कि मैं उस मडली के योग्य

नही हूँ और वह कहावत चरितार्थ होने लगती है "बूढे मूर्ख से बढकर कोई दूसरा मूर्ख नहीं होता"। मैं अपने अवकाश के समय मे क्या करता हूँ? मैं मुर्दे की तरह सोता हूँ। तब मुझे करना ही क्या चाहिये? मुझे कोई अच्छा काम करना चाहिये। मुझे कुछ लिखने बैठ जाना चाहिये' यह मेरे लिये उपयोगी होगा और दूसरो के लिये उपदेशात्मक। यह यथार्थ है, मेरी प्रिया। तुम्हे मालूम है इसके लिये वे कितने पैसे कमाते है? भगवान उनका भला करे! रतजयायेव को ही ले लो, एक ताव कागज लिख डालना उसके लिये कोई बडी बात नही है। वह दिन भर मे पाच ताव कागज लिख डालने की क्षमता रखता है। तुम्हे मालूम है इसके चलते उसकी क्या आमदनी है? एक ताव के लिये तीन सौ रूबल! खुद वही बताता है! और यदि कहानी मनोरजक हुई या पाठको की उत्सुकता बढाने वाली हुई तो पाँच सौ के लगभग। और यदि लोगो ने उसे इतना देने से इन्कार कर दिया तो दूसरी बार वह एक हजार की माग करेगा! तुम्हारी क्या राय है वरवारा अलेक्सेयेवना? उसके पास कविताओ से भरी एक कॉपी है जिसकी कीमत वह सात हजार

लगाता है—एक जमीदारी या महल की कीमत। वह कहता है कि उसके लिये उसे पाच हजार मिल रहे है पर वह वास्तविक कीमत जानता है। वह राजी नही होता। मैने कितनी दलील की उससे कि भगवान के नाम पर उन शैतानो से पाँच हजार ही ले लो। पाँच हजार रूबल नगद क्या कम होते है? लेकिन वह अपनी जिद् पर अडा हुआ है। "वे मुझे सात हजार देकर ही रहेगे।" क्या वह चालाक नही, मेरी प्रिया?

मै फिजूल अपने शब्द क्यो लिखूं? उसकी एक किताब 'इटालियन वासना' से कुछ पक्तियाँ ही उद्धृत करके भेज रहा हूँ और तुम स्वय निर्णय कर लेना

" व्लादिमीर काँप उठा। उसकी शिराओ मे वासना की अग्नि प्रज्वलित होकर भयानक हो उठी थी

'महारानी,' वह चिल्लाया, 'आपको मालूम है कि मेरी यह भक्ति कितनी भयकर है और पागलपन कितना अनत? नही, मेरे सपनो ने मुझे धोखा नही दिया है! मै आपको विक्षिप्त की तरह, पागल की तरह

आधे घटे के बाद वयोवृद्ध महाराज अपनी पत्नी के कक्ष मे प्रविष्ट हुए।

'मेरी प्रिया!' उन्होने कहा। 'अपने आदरणीय अतिथि के स्वागत के लिये हमे तैयारियाँ करनी चाहिये न?' और उन्होने उसके गालो को धीरे से थपथपा दिया।"

अब तुम इसके बारे मे क्या सोचती हो, वारेन्का? शायद किंचित अश्लील? लेकिन साथ ही अच्छा भी। अब 'येर्माक और जुलेईका' नामक उसकी कहानी से कुछ उद्धरण देता हूँ।

कल्पना करो, मेरी प्रिया, कि साइबेरिया का बर्बर और भयानक विजेता, साइबेरिया के जार कुचुम की पुत्री जुलेईका से प्यार करता है। जुलेईका उसकी कैद में है। भयकर इवान के दिनो की स्मृतियाँ ताजी हो उठती हैं।

" 'तुम मुझे प्यार करती हो, जुलेईका! एक बार फिर कहो कि तुम मुझे प्यार करती हो, मुझे प्यार करती हो!'

'मै, निस्सन्देह, तुम्हे प्यार करती हूँ, येर्माक,' जुलेईका धीरे से बोली।

'शुक्र है भगवान तुम्हारा! तुमने मुझे खुशी दी! तुमने मुझे वह सारी खुशी दे दी जिसके लिये मैं जन्म जन्मातर मे तरसता आ रहा था। शायद इसी के लिये तुमने मुझे इधर का रास्ता दिखाया था, मेरे भाग्य-सूर्य, इसी के लिये तुमने मुझे उराल की दुर्गम पहाड़ियों के पार भेजा! सारी दुनिया अब मेरी जुलेईका को देखेगी। कोई भी मुझे 'ना' नही कहेगा, न मनुष्य और न शैतान। ओह, यदि मनुष्य उसके कोमल हृदय के रहस्यमय भावो को समझ पाते और उसके आँसू की नन्ही नन्ही बूँदो से टपकती कविता को देख पाते। मुझे स्वर्ग की उन बूंदो को पीकर धन्य धन्य होने दो!'

'येर्माक,' जुलेईका बोली, 'दुनिया बडी बेरहम है और इन्सान बडा अन्यायी। वे अपने बीच से हमें दूर कर देंगे—वे हमारी निन्दा करेगें, मेरे प्यारे येर्माक! एक बदकिस्मत लडकी, जो अपने पिता के बर्फ से घिरे तम्बू में पल कर बडी हुई है, तुम्हारे दभ और पाखड से

मेरे झूठ और रुदन समाज में मुरझा जायेंगी। वे मेरे हृदय की भाषा को कभी नहीं समझ सकेंगे।'

'क्या यह सत्य है?' तब कज़ाकों की तलवार उनके सर पर सनसनायेगी।' जलती हुई आँखों से येर्माक चिल्लाया।"

कल्पना करो, मेरी वारेन्का, उसकी क्या हालत हुई होगी, जब उसे मालूम हुआ होगा कि जुलेईका की किसी ने हत्या कर दी। रात की कालिमा में अंधे वृद्ध कुचुम ने येर्माक के शिविर में चोरी चोरी घुस कर अपनी बेटी की हत्या कर दी। उसे मालूम था कि जिस व्यक्ति ने उसका सिंहासन और ऐश्वर्य छीन लिया है उससे वह प्राणघातक बदला लेने जा रहा है।

" 'पत्थर से तलवार टकरा कर मैं अपनी तलवार की चमक देखना पसंद करता हूँ,' अपनी तलवार से पत्थर पर भरपूर आघात करते हुए गुस्से से पागल येर्माक चिल्लाया। 'मुझे उसके जिगर का खून चाहिये, मैं उसे टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा!' "

अश्लील है, लेकिन इसमें सादगी है तथा मुक्त विचारों और तीव्र कल्पनाओं का कोई समावेश नहीं। लेकिन मैं यह जरूर कहूँगा, वारेन्का, कि रतज्यायेव अच्छे चरित्र का व्यक्ति है और यही कारण है कि वह सिद्धहस्त लेखक है—यह गुण बहुत कम लेखकों में पाया जाता है।

यदि मैं कोई किताब लिख डालूँ तो जरा सोचो तुम्हें कैसा लगेगा! मान लो यदि अचानक ही तुम्हें मकार देवुश्किन रचित कोई काव्य-संग्रह देखने को मिल जाय तो उस पुस्तक को देख कर तुम क्या सोचोगी, मेरी नन्ही अप्सरा? तुम्हें कैसा लगेगा? जहाँ तक मेरा सवाल है, मेरी प्रिया, मैं तो नेव्सकी प्रोसपेक्ट पर निकलने की हिम्मत ही नहीं करूँगा। मुझे कैसा लगेगा जब सब लोग मेरी ओर देखते हुए कहेंगे "वहाँ वह जा रहा है, कवि और साहित्यिक देवुश्किन! साक्षात् देवुश्किन!" उस वक्त मैं अपने जूतों को कहाँ छिपाऊँगा? यह बता देना जरूरी है कि उनमें अनगिनत चिप्पियाँ लगी रहती हैं और घिसे हुए तल्ले विचित्र तरह से फटफटाते रहते हैं। बड़ी मुसीबत हो

मुझे इसके बारे में लिखना तो नही चाहिये लेकिन इससे मेरे सबंध में कोई गलत बात न सोचना। यह केवल बकवास है। मै तुम्हारे लिये किताबें भेज दूंगा, अवश्य ही भेज दूंगा। पाल-ड-कौक की लिखी हुई एक किताब यहाँ लोग पढ रहे हैं। लेकिन वह किताब तुम्हारे लायक नही है! उसके पन्ने तुम्हारी सरसरी निगाह के काबिल भी नही है। लोगो का कहना है कि लेखक ने सेंट पीटर्सबर्ग के सभी आलोचको के रोष को भडका दिया है। मै तुम्हारे लिये एक पौंड मिठाइयाँ भेज रहा हूँ। ये खासकर मैंने तुम्हारे लिये ही खरीदी है। खूब प्रेम से खाना और एक-एक मिठाई के साथ मुझे याद कर लेना। इन मिठाइयो को केवल चूसना, मेरी प्रिया, दाँत से कभी नही काटना अन्यथा तुम्हारे दाँत खराब हो जायेंगे। क्या तुम्हे टीन में बन्द फल अच्छे लगते है? यदि हाँ, तो लिख कर सूचित करना। अच्छा विदा, मेरी वारेन्का, विदा। भगवान की कृपा तुमपर बनी रहे, मेरी नन्ही प्रियतमा!

तुम्हारा सच्चा मित्र,

मकार देवुश्किन।

२७ जून

मेरे प्रिय मकार अलेक्सेयेविच,

फेदोरा कहती है कि यदि मैं चाहूं तो ऐसे लोग भी मिल सकते हैं जो मेरी मदद कर सकें और मेरे लिये अध्यापिका की नौकरी ढूंढ सकें। मैं अपनी रजामंदी दूं या नहीं? तुम क्या राय देते हो? यदि मैं राज़ी हो जाऊँ तो तुम्हारा बोझ हलका हो जायेगा और तनख्वाह भी अच्छी है। लेकिन एक अपरिचित घर में आश्रय लेने के विचार से ही मुझे भय सा लगता है। वे जमींदार हैं और जरूर ही मेरे अतीत के बारे में पूछ-ताछ करेंगे। तब मैं क्या जवाब दूंगी? सबसे बड़ी बात तो यह है कि मैं एक बनैले जन्तु की तरह हूँ—जिसे आदमी की परछाईं से भी डर लगता है। बहुत दिनों तक एक स्थान में रह लेने के बाद मैं उस स्थान की आदी हो जाती हूँ और जीवन कठिन होते हुए भी मुझे अब उतना बुरा नहीं लगता। लेकिन भविष्य में क्या होगा, कौन जाने, शायद बच्चों को भी खेलाना पड़े। उनके साथ टिकना भी मुश्किल जान पड़ता है क्योंकि दो वर्षों के भीतर उन्होंने दो

अध्यापिकाएँ वदली है। तुमसे मेरी प्रार्थना है कि तुम मुझे इस मामले में सलाह दो, मुझे जाना चाहिये या नहीं? तुम यहाँ क्यो नही आते? इधर हम लोगो ने तुम्हे वहुत दिनो से नही देखा है। केवल रविवार को गिरजाघर में मुलाकात होती है। तुम भी मेरे जैसे वनैले जीव की तरह हो! और मुझसे तो तुम्हारा रिश्ता है ही। मकार अलेक्सेयेविच, क्या तुम्हे मुझपर प्यार नही आता? मुझे अकेले कितना वुरा लगता है! कभी कभी, खासकर शाम को, मैं विलकुल अकेली रह जाती हूँ। फेदोरा काम से वाहर चली जाती है और मैं वैठे वैठे सोचा करती हूँ, केवल सोचा करती हूँ-पुराने दिनो की वाते याद आने लगती हैं। क्या दुखद और क्या सुखद-ये वाते आँखो के सामने नाचने लगती है, पुराने चेहरे दिखाई पड़ने लगते है (वे चेहरे विलकुल असली होते हैं)। माँ का तो चेहरा, औरो के चेहरो से वहुत अधिक साफ और स्पष्ट दिखाई पडने लगता है। मेरे सपने भी कैसे अजीव होते है! मुझे लगता है कि मेरा स्वास्थ्य जाता रहा है, मैं वहुत कमजोर हो चली हूँ।

10*

आज जब मैं उठी तो मुझे अचानक मूर्च्छा आ गई। मैं कुछ दिनों से बडी बुरी तरह खांसी से पीड़ित हूँ। मैं सोचती हूँ कि मेरी मौत निकट है। और तब किसे मेरी परवाह रहेगी, कौन मेरे लिये रोयेगा और कौन मेरे शव के साथ-साथ कब्रिस्तान तक जायेगा? और सभवत मेरी मौत अपरिचित मकान में, अनजान स्थान में हो! हे भगवान, कितना दुखद है! तुम मेरे लिये हमेशा मिठाइयाँ भेजा करते हो, मकार अलेक्सेयेविच! मेरी समझ में नही आता तुम्हे इतने पैसे कहाँ से मिल जाते है? पैसे बचाने की कोशिश करो, मेरे प्रिय मित्र। फेदोरा एक दरी बेचने जा रही है जिस पर मैंने कसीदे का काम किया है। उसके लिये पचास रूबल मिल रहे है। यह काफी अच्छी कीमत है, मैंने इतनी रकम की आशा भी नही की थी। मैं फेदोरा को तीन रूबल दे दूंगी और अपने लिये एक फ्रॉक सीऊँगी—सीधा-सादा लेकिन गर्म। मैं तुम्हारे लिये भी एक वेस्टकोट बनाऊँगी, मैं खुद तैयार करूंगी और कपडा काफी अच्छा होगा।

फेदोरा पुश्किन की एक किताव लाई है जिसका नाम 'इवान वेल्किन की कहानियाँ' है। उसे मैं तुम्हारे पास भेज रही हूँ। यदि जी चाहे तो पढना। लेकिन इसे रखे रखे सड़ा मत देना। यह मेरी नही है। दो साल पहले मैंने और माँ ने ये कहानियाँ साथ-साथ पढी थी और अब अकेले पढने के वाद मुझमे उदासी भर गई है। यदि तुम्हारे पास किताव हो तो मेरे लिये भेज देना—लेकिन रतज्यायेव की किताबें नही। सम्भव है यदि उसकी कृतियाँ छप गई होगी तो वह अपनी ही पुस्तके तुम्हे भेंट करे। पता नही तुम्हे वे कैसे पसद आती है, मकार अलेक्सेयेविच? वे कूडा-कर्कट है. . अच्छा, अब विदा। मै काफी वकवास कर चुकी। अपनी उदासी के क्षणो में वकवास करने की मेरी इच्छा कभी कभी वहुत प्रवल हो उठती है। यह दवा का काम करती है क्योकि ऐसा करने से जी हलका हो जाता है। विदा, मेरे मित्र, विदा।

तुम्हारी

व० दो०

२८ जून

वरवारा अलेक्सेयेवना, मेरी कपोती,

वेकार की बातो मे तुम्हे अपना सर गपाते हुए शर्म नही आती? मेरी देवागना, तुम्हारे दिमाग मे ऐसे विचार ही क्यो उठते है? तुम तनिक भी अस्वस्थ नही हो, बिलकुल नही। तुम तो खिल रही हो, केवल खिलती जा रही हो! शायद तनिक पीली पड गई हो लेकिन खिलती तो अवश्य ही जा रही हो। तुम्हारी वे कल्पनाएँ और सपने क्या है? तुम्हे शर्म आनी चाहिये, मेरी नन्ही प्रिया! उनकी जरा भी परवाह करने की जरूरत नही। यह कैसे कि मै अच्छी तरह से सोता हूँ और मुझे कोई चिन्ता नही, दुख नही? मेरी ओर देखो! मै कुत्ते की नीद सोता हूँ और एक जवान की तरह स्वस्थ और सबल हूँ। सुनो, सुनो मेरी वारेन्का! मेरी तनिक भी चिन्ता न करो। मुझे मालूम है कि तुम्हारे छोटे से दिमाग मे क्या है। कोई मामूली सी बात भी तुम्हारा दिमाग़ कमजोर कर देती है और तुम सपने देखने लगती हो। भगवान के लिये तुम ऐसा न किया करो। जहाँ तक अध्यापिका

भी नौकरी का सवाल है, नहीं, नहीं, हर्गिज नहीं! आखिर तुमने ऐसा सोचा ही क्यों? और वह स्थान भी तो बहुत दूर है। नहीं, नहीं, मेरी प्रिया! मैं यह हर्गिज़ बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं अपनी सारी शक्तियों से इसका विरोध करूँगा। मैं पहले अपना पुराना कोट बेच डालूँगा और केवल कमीज़ पहनकर बाहर निकलूँगा लेकिन तुम्हें तकलीफ में नहीं रहने दूँगा। नहीं, नहीं, वारेन्का, यह सब नादानी ठीक नहीं। यह भूल है, मूर्खता है। मुझे यकीन है कि सब दोष फेदोरा का है, उसी बेवकूफ औरत ने तुम्हारे दिमाग में यह खुराफात भरी होगी। उसका विश्वास न करो, मेरी प्रिया। उसके बारे में तुम सब कुछ ठीक ठीक नहीं जानती। वह बेवकूफ है और बकवासी भी। उसके कारण उसका पति मर गया। शायद उसने तुम्हें नाराज़ भी कर दिया है? नहीं, नहीं, मेरी प्रिया, किसी भी हालत में नहीं! मैं तब क्या करूँगा, मेरे लिये क्या रह जायेगा? नहीं, नहीं, मेरी वारेन्का, कभी नहीं। ये सब विचार दिमाग से बाहर निकाल दो। आखिर तुम्हें यहाँ किस चीज़ की कमी है? तुमसे हम लोगों को—मुझे और फेदोरा

मैं लाचार हूँ। वह बहुत अच्छा लिखता है, सचमुच बहुत अच्छा। यहाँ पर मैं तुम्हारे विचार से सहमत नही हूँ। कैसी लच्छेदार भाषा में, कितनी सरसता और गभीरता से वह लिखता है। अभूतपूर्व! शायद तुमने सहृदयता से उसकी चीजें नही पढ़ी, मेरी वारेन्का। या सभव है, तुम्हारा मूड खराब रहा हो— फेदोरा ने तुम्हे नाराज कर दिया हो या कोई अरुचिकर वात हो गई हो। फिर से पढो, मेरी वारेन्का, अधिक ध्यानपूर्वक और सहृदयता से। जव तुम प्रसन्न और सन्तुष्ट रहो तभी उसे पढ़ने की कोशिश करो। पढते समय मिठाई की एक गोली अपने मुँह में रखकर जरूर चूसते रहना। मैं यह इन्कार नही करता कि रतज्यायेव से भी अच्छे, काफी अच्छे अन्य लेखक है, वे अच्छे है, पर रतज्यायेव भी अच्छा है, वे अच्छा लिखते है पर रतज्यायेव भी वुरा नही लिखता। वह विलकुल मौलिक लिखता है, उसके लिखने का ढग ही अलग है। अच्छा, विदा, मेरी प्रियतमा। मैं और अधिक नही लिख सकता। आज

मै व्यस्त हूँ। अब ध्यान रखना, मेरी नन्ही गुडिया, वाहियात बातो में अपना दिमाग खराब मत करना। भगवान तुम्हे मदद करे।

तुम्हारा सच्चा मित्र,

मकार देवुश्किन।

पुनश्च—पुस्तक के लिये वहुत वहुत धन्यवाद, मेरी प्रिया। मैं भी पुश्किन को पढ़ूँगा। दिन मे विलब से, शाम के लगभग, मै तुमसे मिलने आऊँगा।

१ जुलाई

मेरे प्रिय मित्र, मकार अलेक्सेयेविच,

मैं सोचती हूँ कि तुम लोगो के बीच मेरी जिन्दगी कोई जिन्दगी नही। बहुत सोचने-विचारने के बाद मुझे ऐसा लगता है कि ऐसी अच्छी नौकरी को ठुकरा देना बुद्धिमानी नही। कम से कम मैं अपनी रोज की रोटी तो कमा सकूँगी; और अनजाने परिवार का रहम हासिल करने की भरसक

कोशिश भी करूँगी। यदि जरूरत पडी तो मै अपना स्वभाव बदलने की भी कोशिश करूँगी। वस्तुत., अजनबियो के बीच रहना, उन्हे खुश रखना और रहस्य कायम रखना बहुत मुश्किल होगा। लेकिन शायद भगवान हमारी मदद करे। मै जीवन भर भीरु और जगली बनी नही रह सकती। इन अवस्थाओ से मै पहले ही गुजर चुकी हूँ। मै स्कूल के छात्रावास की जिन्दगी कभी नही भूल सकती। मुझे वे रविवार खूब याद है, जब मै घर पर रहकर खेल-कूद किया करती थी और माँ के डाँटने-फटकारने पर भी मेरा हृदय खुशी से नाचा करता था। लेकिन शाम होते होते मै उदासी और पीडा से भर उठती थी: मुझे ६ बजे तक स्कूल लौट जाना पडता था जहाँ सब कुछ सख्त, नीरस और पराया-पराया सा लगता और सोमवार को शिक्षिकाओ के चेहरे पर फिर कठोरता विराजने लगती। मेरी चीखने और चिल्लाने की इच्छा होती। किसी कोने में मै चुपचाप रो लेती—क्योकि डर था कि वे मुझे आलसी और सुस्त कहती। लेकिन मै अपने पाठो के कारण नही रोती थी। और बाद मे क्या हुआ? कुछ

दिन बाद मुझे स्कूल से इतना अपनापन और मोह हो गया कि उसे छोडते समय तथा अपनी सहेलियों से विदा होते समय मैं खूब जोर जोर से रोई थी। सबसे बड़ी बात तो यह है कि मेरे लिये तुम्हारे और फेदोरा के ऊपर भार बनकर रहना उचित नही। यह विचार ही कष्टदायक है। मे सभी बाते खुलकर इसलिये कह रही हूँ कि मैं तुमसे सब कुछ साफ साफ कहने की आदी हूं। क्या यह मैं नही देखती कि फेदोरा दिन भर अपनी सफाई का काम करने के लिये सुबह के धुंधलके में ही प्रति दिन उठ जाया करती है? और तुम्हे मालूम है कि बुढापे के शरीर को आराम की जरूरत होती है। क्या यह मै नही देखती कि तुम अपनी सारी कमाई, यहाँ तक कि आखिरी कोपेक भी, हमारे ऊपर खर्च कर रहे हो? तुम्हारी आमदनी कितनी कम है! तुमने यहाँ तक लिख डाला कि मेरी जरूरतो को पूरा करने के लिये तुम अपना कोट भी बेचने पर तुले हुए हो। मुझे विश्वास है, मेरे प्रिय, मुझे तुम्हारी उदारता का विश्वास है। लेकिन अभी ही तुम ऐसा कह रहे हो— जब कि तुम्हे आकाशवृत्ति के रूप में बोनस मिला

है! लेकिन इसके बाद? तुम्हे मालूम है कि मैं सदा बीमार रहती हूँ। जिस तरह तुम काम करते हो इस तरह मैं नही कर सकती हालाँकि वैसा कर सकने पर मुझे बहुत खुशी होती। अलावा इसके, काम भी हमेशा काफी नही रहता। मेरे लिये तब रह ही क्या जाता है? केवल समय बर्बाद करना! तुम दोनो के लिये आखिर मेरा उपयोग ही क्या रह जायेगा? तुम लोगो के लिये मेरी आवश्यकता ही क्या है? मैंने तुम लोगो का हित ही क्या किया है? मैं अपने हृदय से तुम पर न्योछावर हूँ। तुम मेरे लिये बहुत, बहुत प्रिय हो— लेकिन मेरा भाग्य ही ऐसा है. मैं प्यार कर सकती हूँ लेकिन अपने प्यार को सत्कर्मो में परिणत नही कर सकती—तुम्हारी कृपा का बदला नही दे सकती। अब मुझे अधिक शरण देने की कोशिश न करो। इसपर विचार करके अपनी अन्तिम राय दो। तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा में—

तुम्हारी प्रिया,

व० दो०

१ जुलाई

कैसी वाहियात वाते, कैसी कल्पनाएँ, वारेन्का! जव तुम अकेली होती हो कि तुम्हारी छोटी सी खोपडी में सभी वाहियात वाते भरने लगती है। तुम्हे यह पसद नही, तुम्हे वह पसद नही और इस प्रकार सव कुछ उलटा-पुलटा! जरा यह वताओ कि तुम्हे और क्या चाहिये, तुम्हे किस वात की कमी है? हम एक दूसरे को कितना चाहते है, कितने खुश और सतुष्ट है –अव और क्या चाहिये? अजनवियो के वीच तुम्हे क्या मिलेगा? तुम्हे मालूम नही अजनवी कैसे होते है, मेरी प्रिया! तुम्हे उनके वारे में मुझसे पूछना चाहिये था। मुझे मालूम है वे कैसे होते है, वे कैसे हैं। मै यह अच्छी तरह जानता हूँ। मै उनकी रोटियो का स्वाद ले चुका हूँ। वे वहुत वुरी होती है, वहुत कडवी, मेरी वारेन्का। वे तुम्हे कडी नजर और जली-कटी वातो से जख्मी कर देंगे। और यहाँ तुम हम लोगो के स्नेह और प्यार की गरमी से उतनी ही सुखी हो जिस प्रकार अपने घोसले में एक नन्ही चिडिया। और यदि तुम उड ही जाओगी तो हम क्या कर सकेगे? हमारा

हृदय ही हमारे पास नही रह जायेगा! मैं, एक बूढा आदमी, क्या करूंगा? तुम कहती हो कि तुम बिलकुल बेकाम हो। बेकाम? यह कैसे हो सकता है? तुम बिलकुल बेकाम नही हो! जरा सोचो! तुम्हारा कितना बडा उपयोग है. उदाहरणार्थ, मैं अभी तुम्हारे बारे में सोच रहा हूं और मुझे कितनी खुशी हो रही है कभी कभी मैं अपनी सारी भावनाओ को पत्र में उतार डालता हूं और तब विस्तृत उत्तर पाता हूं। मैं भी तुम्हारे पहनने के लिये सुन्दर चीजे खरीद सकता हूं—मैंने तो तुम्हारे लिये एक सुन्दर हैट भी खरीद लिया है . या ऐसे और भी काम हैं जिन्हे तुम मुझसे करवा सकती हो। यह तुम कैसे कह सकती हो कि तुम बेकाम हो? और मुझे क्या करना चाहिये, एक बूढे आदमी को जो बिलकुल अकेला हो? मेरा क्या काम है? शायद तुमने इसके बारे में नही सोचा, वारेन्का। लेकिन तुम्हे सोचना चाहिये था। तुम्हे यह भी ध्यान में रखना चाहिये तुम्हारे बिना यह बूढा आदमी क्या कर सकेगा? मै तुम्हारे सामीप्य का आदी हो चुका हूं। और अब यदि तुम जुदा

हो जाओगी तो एक ही काम मै कर सकता हूँ नेवा नदी मे पैठकर सारा किस्सा ही खतम कर दूँ। और तब करना ही क्या रह जायेगा? आह, वारेन्का, मेरी प्रियतमा वारेन्का, ऐसा लगता है कि तुम्हारी यह इच्छा है कि मुझे कोई गाडी पर डाल दे और मै बिलकुल अकेले वोलकोवो कब्रिस्तान पहुँच जाऊँ जहाँ केवल एक बूढा भिखमगा मेरी कब्र पर बालू डालते देख सके और तब मुझे सदा सदा के लिये बिसार कर वहाँ से दूर हट जाय। यह पाप है, मेरी प्रिया, ऐसा ख्याल ही बहुत बडा पाप है। मै तुम्हारी किताब लौटा रहा हूँ, मेरी वारेन्का, और यदि तुम मेरा मत चाहती हो तो मुझे यही कहना है कि सारी जिन्दगी मे इससे अच्छी किताब अबतक मैने नही पढी है। मै अपने आप से पूछता रहता हूँ, मेरी प्रिया, कि मै इतना गँवार कैसे रह गया? भगवान मुझे माफ करे। मै अपने आप से क्या करता रहा? किस जगल से मेरा आविर्भाव हुआ? ईमान से, मै कुछ नही जानता, बिलकुल नही जानता! साफ तौर से मै यही कहूँगा, वारेन्का मै बिलकुल अज्ञानी हूँ। मैने बहुत कम किताबें पढी है, बहुत ही

कम, बल्कि नही के बराबर 'आदमी की तसवीर', एक बहुत ही ज्ञानवर्द्धक पुस्तक, और 'एक लड़का जो घंटियां बजाया करता है' तथा 'इंशीक के नारग', बस इन्ही पुस्तको से मेरा कुछ ताल्लुक रहा है। बस इतनी ही किताबें मैंने पढी है। और अब मैंने तुम्हारी पुस्तक मे 'पोस्ट मास्टर'* नामक कहानी पढी है। इससे जाहिर है कि सारी जिन्दगी खतम कर देने के बाद भी इन्सान को यह पता नही चल पाता कि ठीक पास ही एक ऐसी किताब पडी है जिसमे उसकी जिन्दगी की सही सही तसवीर उतार डाली गई है। जो चीजें हम पहले देख नही सके थे, वे पढने के साथ साथ स्पष्ट दिखाई पडने लगती है, भूली बातें याद आने लगती है, सब बाते समझ मे आने लगती है। पुस्तक के बारे में मुझे जो चीज सबसे अधिक पसद है, वह यह है कि इसके विपरीत, कुछ किताबें इतनी गभीर होती है कि लाख पढने पर भी मेरी समझ में नही आती। मेरी प्रकृति

---

* इवान बेल्किन की एक कहानी।—स०

ही कुछ ऐसी है कि वैसी पुस्तकें मेरे लिये नहीं है जो बहुत ही महत्त्वपूर्ण हों। लेकिन यह किताब पढ़ो तो लगेगा कि तुमने उसे खुद लिखा है, बोलचाल के ढंग में। तुम्हारा हृदय ही वहां बोल रहा हो—जो भी हो—यह किताब सबके पढ़ने लायक है। ऐसी ही है यह किताब। वस्तुत, यह बहुत सरल है। मैं खुद ऐसी किताब लिख सकता हूं। क्यों नहीं? लेखक की अनुभूति जैसी ही मेरी अनुभूति हो रही है। क्या बेचारे साम्सोन वीरिन* के अनुभवों से मेरे अनुभव मेल नही खाते? हम लोगो के बीच कितने बदकिस्मत वीरिन होंगे! और क्या उसने इनका वर्णन पूरी कुशलता से नही किया है? मुझे यह पढ़कर रोना आ गया, मेरी प्रिया, कि उसने किस प्रकार पीने की लत डाली, किस प्रकार वह पीकर अपने को खोने की कोशिश करता था और भेड की खाल पर पड़े पडे दिन भर सोया रहता था या अपनी भटकी हुई गरीब

---

* 'पोस्ट मास्टर' का एक पात्र।—स०

लड़की को याद करके कोट की बाँह से अपने आँसुओ को पोछा करता था। यही जिन्दगी है! इसे फिर से पढो। ज़िन्दगी की यह जीती-जागती तसवीर है! इसे मैने अपनी आँखो से देखा है। इससे मै चारो तरफ से घिरा हुआ हूँ। उदाहरण के लिये तेरेजा को या उस गरीब किरानी को ही ले लो। क्या वह दूसरा साम्सोन वीरिन नही है गोकि उसका नाम गोरश्कोव है? हम सब वैसे ही है और हमारे साथ भी वही बाते घट सकती है। यह बात नेव्सकी या तटबन्ध पर रहनेवाले काउंट के साथ भी घट सकती है, भले ही उसका रंगरूप दूसरा हो और वह भिन्न लगे। हाँ, कुछ भी हो सकता है। मै भी उससे मुक्त नही। तुमने देखा, मेरी प्रिया' तुम हम लोगो का परित्याग करने की बात कैसे सोच सकती हो? वीरिन के दुर्गुण मेरे ऊपर भी भूत बनकर सवार हो जायेंगे और तब हम दोनो का सर्वनाश अवश्यम्भावी है। इसलिये भगवान के नाम पर ऐसे खुराफाती विचारो को दिमाग से निकाल दो और मुझे अधिक सताने की कोशिश न करो। मेरी नन्ही चिड़िया, तुम बुराइयो से और दुष्ट जनो से अपनी रक्षा करने में

कैसे समर्थ हो सकोगी? सुनो, सुनो, मेरी वारेन्का। बुरी सलाह की ओर ध्यान न दो। अपनी किताब फिर से और ध्यान से पढने पर तुम्हारा भला होगा उसी मे तुम्हारी भलाई है।

मैंने रतज्यायेव को 'पोस्ट मास्टर' के बारे में बताया है। उनका मत है कि यह पुराने ढर्रे की कहानी है और आजकल की अच्छी किताबों मे चित्राकन और विविध वर्णन पर्याप्त मात्रा मे रहते है। मै उनकी बात अच्छी तरह से समझ नही सका। उसने स्वीकार किया कि पुश्किन बहुत अच्छा लेखक था, उसने रूस की गौरव-वृद्धि की और उसने बहुत कुछ काफी दर्प के साथ कहा। हाँ, वारेन्का, यह बहुत अच्छी किताब है, बहुत अच्छी। तुम्हे ध्यान से उसे एक बार फिर से पढना चाहिये। मेरी राय मानो और अपनी आज्ञाकारिता से इस बूढे को खुशी हासिल करने दो। भगवान तुम्हे सुखी रखें, मेरी प्रियतमा। उसकी कृपा तुम पर अवश्य बनी रहेगी।

तुम्हारा विश्वसनीय मित्र,

मकार देवुश्किन।

६ जुलाई

मेरे प्रिय मकार अलेक्सेयेविच,

आज फेदोरा ने मुझे पन्द्रह रूबल के चाँदी के सिक्के लाकर दिये और जब मैंने उसे तीन रूबल दे दिये तो वह कितनी खुश हुई! मैं यह बहुत जल्दबाजी में लिख रही हूँ मैं तुम्हारे लिये एक वेस्टकोट का पैटर्न काट रही हूँ—कपड़ा बेहतरीन है उसका रंग पीला है और उसपर फूल कढ़ा हुआ है। मैं तुम्हारे लिये एक दूसरी किताब—कहानी-संग्रह—भेज रही हूँ। मैंने कुछ कहानियाँ पढ़ी हैं। 'सर्विसकोट'* शीर्षक कहानी पढ़ना। तुम अपने साथ थियेटर चलने के लिये मुझे जोर दे रहे हो। क्या उसमें काफी खर्च नहीं बैठेगा? यदि जाना ही चाहते हो तो गैलरी का टिकट खरीदना। मुझे थियेटर गये इतने दिन हो गये हैं कि मुझे कुछ याद ही नहीं। लेकिन मुझे फिर डर लग रहा है कि यह काफी महँगा पड़ेगा। फेदोरा हमेशा शिकायत करती रहती है कि तुम अपनी

---

*१८४२ में नि० व० गोगोल द्वारा लिखित कहानी।—स०

औकात से अधिक खर्च करते हो। मैं खुद भी देख रही हूं—तुम केवल मुझपर कितना खर्च करते हो! मुझे भय है कि यदि तुम्हारा यही रवैया रहा तो कुछ ऐसी-वैसी बात न हो जाय। किराये को लेकर मकान-मालकिन से तुम्हारी जो बहस हुई थी उनके बारे में बहुत सी अफवाहें फेदोरा ने सुनी है। मुझे तुम्हारे लिये बहुत डर लगता है, मकार अलेक्सेयेविच! विदा! अभी मैं जल्दी में हूं। कुछ ऐसे छोटे-मोटे काम है जिन्हें करना बहुत जरूरी है मुझे अपने हैट की रिबन अवश्य बदलनी है।

व० दो०

पुनश्च—यदि हमें थियेटर जाना ही है तो मेरा विचार है कि मुझे अपने नये हैट के साथ काली पोशाक पहननी चाहिये। यह पोशाक अच्छी जंचेगी। है न?

७ जुलाई

मेरी प्रियतमा, वरवारा अलेक्सेयेवना,

कल की वातचीत के प्रसग में मुझे यह कहना है कि किसी ज़माने में मै भी एक विचारहीन युवक था, एक अभिनेत्री के प्रेम में विलकुल पागल। लेकिन केवल इतना ही नही। सवसे वडी वात तो यह है कि मैंने उसे केवल एक वार थियेटर में छोड़कर कही और विलकुल ही नही देखा था। फिर भी, मुझे उससे प्यार हो गया था– अवा प्यार। उस वक्त मेरे पडोस मे लगभग आधे दर्जन ज़िन्दादिल नवयुवक रहते थे जिनसे मुझे अपने मन के खिलाफ दोस्ती करनी पडी थी। मै वडी शिष्टता के साथ उनके कारनामो से अपने को अलग रखता या। साथ-संगत के लिहाज़ से मै उनके साथ हँसी-मजाक कर लिया करता था। उस अभिनेत्री के वारे में वे कैसी कैसी वाते करते थे। हर शाम, जव तमाशा हुआ करता था, वे पूरी जमात के साथ गैलरी मे आसन जमा लिया करते थे। जीवन की सावारण आवश्यकताओ की पूर्ति के लिये भी उनके पास पैसे नही

होते थे। फिर भी, वे गैलरी में बैठे बैठे तालियाँ पीटते, बारबार अभिनेत्री को पर्दे के बाहर बुलाने के लिये शोर मचाते और पागलो की तरह खुशी मे चीखते-चिल्लाते। उसके बाद सोने का प्रश्न ही नही उठता था। वे रात भर अपनी प्यारी ग्लाशा के बारे मे बाते करते एक एक कर सभी उससे प्यार करते थे। प्रेम का अकुर सभी के हृदय में लग गया था। उन्होंने मुझे भी फदे में घसीट लिया और जब मुझे इसका आभास मिला तो मैंने अपने को उनके साथ गैलरी मे बैठा पाया। जहाँ मै बैठा था वहाँ से पर्दे का केवल थोडा सा भाग दिखाई पडता था, फिर भी मेरे कान सब कुछ सुन रहे थे। वस्तुत प्रेम की वह चिडिया बहुत अच्छा गा रही थी, उसके स्वर से मधु टपक रहा था। हम गला फाड फाडकर चिल्लाये, जोर से तालियाँ पीटते रहे। जनसाधारण का ध्यान हमारी ओर आकर्षित हो गया और अन्त मे हममें से एक को वस्तुत बाहर निकाल दिया गया। मै कगाल होकर घर लौटा, मेरी जेब में केवल एक रूबल बच गया था और वेतन मिलने में दस

८ जुलाई

मेरी आदरणीया घरवाली अर्धांगिनी,

इस महीने की छठी तारीख को मिली किताब लौटाने में मैं शीघ्रता कर रहा हूँ और साथ ही साथ अपनी सफाई देने के मौके से भी लाभ उठा रहा हूँ। ऐसी किताब भेजने में क्या तुमने शैतानी नहीं की है? भगवान ने हरेक मनुष्य को उसके योग्य स्थान दिया है। किसी के भाग्य में सेनापति का सम्मान है तो किसी के भाग्य में किरानी का काम, कुछ को केवल हुक्म चलाना और कुछ को केवल हुक्म मानना, इसका और जबान भी न खोलना किस्मत में बदा है। यह सब कुछ इन्सान की सामर्थ्य के अनुसार व्यवस्थित है। कुछ की योग्यता एक काम करने के लिये होती है तो दूसरे की अन्य काम करने के लिये और इसकी व्यवस्था स्वयं भगवान करते हैं। मैं तीस वर्षों से अपने दफ्तर में काम करता आ रहा हूँ। मेरे काम में कोई नुक्स या मेरे वर्ताव के बारे में कोई शिकायत नही पाई गई। मैं अपने को त्रुटियो से पूर्ण इन्सान मानता हूँ पर साथ ही

साथ यह भी मानता हूँ कि मुझ मे अच्छाइयाँ भी है। मेरे उच्च अधिकारी मेरा सम्मान करते है और महामहिम तो मुझसे बहुत ही प्रसन्न रहते है। हालाकि उन्होने अब तक मेरे साथ कोई कृपा नही दिखाई है, फिर भी मुझे विश्वास है कि वे मुझसे प्रसन्न रहते है। मै सोचता हूँ कि इस बुढापे तक मुझसे कोई घोर पाप नही हुआ है। जहाँ तक छोटी-मोटी गलतियो का सवाल है, उनसे कौन बचा है? छोटी-मोटी गलतियाँ सभी करते है, तुमने भी की होगी। लेकिन मेरे ऊपर कोई, किसी का अपमान करने या नियम का उल्लघन करने या शान्ति भग करने का दोष नही लगा सकता। नही, कभी नही। एक समय ऐसा भी आया था जब मुझे सम्मानित करने के लिये मेरी सिफारिश की गई थी। लेकिन इन बातो का उल्लेख ही क्यो किया जाय? तुम्हे यह सब कुछ जानना चाहिये था यहाँ तक कि लेखक को भी। यदि कोई व्यक्ति सब कुछ वर्णन करने की इच्छा रखता हो तो उसे सब कुछ जानना भी चाहिये। मैने कम से कम तुम से ऐसी आशा नही की थी, मेरी प्रिया।

इसका क्या यही मतलब है कि किसी को अपने छोटे से कोने में शान्तिपूर्वक रहने का भी अधिकार नही? किसी के निजी जीवन का पता लगाने का दूसरों को क्या अधिकार है? दूसरो को यह परवाह करने की क्या जरूरत कि कोई अच्छा वेस्टकोट पहनता है या नही, उसके पास पूरे वस्त्र है या नही, जूतों का जोड़ा ठीक है या नही, उसके तले सही-सलामत है या नही? यह जानने की क्या जरूरत कि कोई क्या खाता है, क्या पीता है या क्या करता है? यदि रास्ते की गन्दगी के कारण अपने जूतो को बचाने के लिये मै पंजे के बल चलूं तो क्या हुआ? लेखक के लिये अपने पाठकों को यह बताना क्यों जरूरी है कि उसके साथी की कभी ऐसी तंग हालत हो जाती है कि उसे चाय पिये बिना रह जाना पडता है? मानो सब के लिये चाय पीना जरूरी ही हो। क्या मै अपने पड़ोसियो के हरेक ग्रास पर निगरानी रखता हूं? कौन कह सकता है कि मै ऐसा करता हूं? तब दूसरे क्यो करते है? मेरा मतलब यह है, वरवारा अलेक्सेयेवना कोई आदमी पूरे जोश

और उत्साह के साथ अपना काम कर रहा हो, उसे अपने मुख्य अधिकारी का सम्मान भी प्राप्त हो (तुम जो भी कहो, लेकिन यह सत्य है)--और अचानक कोई दुष्टात्मा उसे उल्लू बनाने के लिये बीच मे आ टपके। वह यदा-कदा अपने लिये नये कपडे सिलवा लेता हो। और उसे इतनी खुशी होती हो कि रात भर उसे नीद न आती हो। उदाहरण के लिये, ऐसा ही अनुभव मुझे हुआ था जब मैने नये जूते पहने थे। ऐसे अच्छे चमडे के जूतो में अपने पैरो को देख कर कितनी खुशी हुई थी। यह मानता हूँ कि लेखक ने वडी खूबी से इसका वर्णन किया है। फिर भी मुझे सचमुच वडा आश्चर्य हो रहा है कि हमारे मुख्य अधिकारी फ्योदोर फ्योदोरोविच ऐसी किताबो को बहुत पसद करते है। उन्हे क्रोध आना चाहिये था और अपनी सफाई देनी चाहिये थी। यह सत्य है कि वे एक युवक अफसर है और किताब मे उल्लिखित अफसर की तरह कभी कभी हम लोगो पर बरस भी पडते है। लेकिन ऐसा वे करे क्यो नही? यदा-कदा तुच्छ हस्तियो पर निगरानी रखना जरूरी है। ऐसा वे अधिकार की बदौलत करते है।

और वे करे क्यो नही? उन्हे हम लोगो को अपनी जगह पर व्यवस्थित रखना है, हममें भगवान का भय बनाये रखना है क्योकि वारेन्का, हम तुच्छ हस्तियाँ, भगवान के डर के बिना निरर्थक है। हम अपना अस्तित्व तनख्वाह पर बनाये रखना चाहते है, काम करने पर नही। अलग अलग कोटि के अनुसार अधिकार का रोब जमाने के भी भिन्न भिन्न तरीके है और अधिकारी लोग अपने अपने तरीको से काम लेते है। ससार का यही रवैया है, मेरी प्रियतमा। इन्सान एक दूसरे को कुचलता हुआ ऊपर उठने की कोशिश करता है। यदि इसपर अकुश नही लगाया जाय तो ससार का ही नाश हो जायेगा और व्यवस्था भग हो जायेगी। सचमुच मुझे बडा आश्चर्य है कि फ्योदोर फ्योदोरोविच ऐसी धृष्टता को सहन कैसे कर सके।

लेकिन यह सब लिखने से क्या फायदा? इसका उपयोग क्या है? क्या पाठक हमें नया कोट भेंट में दे देंगे या जूतो का नया जोडा ही? कुछ भी नही, मेरी वारेन्का। वे केवल पढेंगे और जिज्ञासा करेगे। मनुष्य अपनी कमजोरियों को छिपाने मे बडा सावधान रहता है। वह

बातचीत में भी सतर्क रहता है. राई से पर्वत बन जाता है—और उसे इसका पता चलने के पहले ही उसके नागरिक और पारिवारिक जीवन का रहस्य किताब में खुल कर रह जाता है। उसके बाद वह सडक पर निकल कर अपना मुँह दिखाने की हिम्मत कैसे कर सकता है? उस किताब में ऐसा सागोपाग वर्णन रहता है कि बेचारा किरानी अपने ढग से ही पहचान लिया जा सकता है। यह उतना बुरा न हुआ होता यदि किताब खतम करते करते लेखक होश मे आ गया होता और मृदुल वाक्यो से उसपर सहानुभूति की वर्षा कर देता ' इस वर्णन के बाद कि उस पर कागज के टुकडे फेंके गये, लेखक यह लिखता कि जो भी हो, वह भला और सदाचारी व्यक्ति था, अपने साथियो से ऐसे दुर्व्यवहार के योग्य नही था, अपने श्रेष्ठजनो का सम्मान करता था (यहाँ कुछ उदाहरण दे देना अच्छा होता), किसी से मनोमालिन्य नही रखता था, भगवान में आस्था रखता था और (यदि लेखक उसकी मृत्यु का वर्णन करना चाहता हो) उसकी मृत्यु से उसके मित्रो को बडा

सदमा पहुँचा। उसकी मृत्यु का जिक्र न करना ही अच्छा होता। बेहतर यह होता कि उसका ओवरकोट वापस मिल जाता, महामहिम उसे [illegible] और आवश्यक जाँच-पडताल के बाद उसकी सच्चाइयों की बदौलत उसकी तरक्की कर देते और तनख्वाह बढ़ा देते—ताकि अच्छाई की विजय और बुराई की पराजय साबित हो जाती और उसके साथियों के मुँह पर कालिख पुत जाती। मैं तो इसी ढंग से लिखता। दूसरे ढंग से कहानी लिखने से आखिर फायदा ही क्या हुआ? उसने हमारे दैनिक जीवन की एक मामूली घटना को केवल पन्नों पर उतार दिया है। आखिर, तुमने मेरे पास ऐसी किताब भेजने की बात कैसे सोची? यह तो काल्पनिक कहानी है। यह बिलकुल झूठ है। ऐसा किरानी तुम्हें इस संसार में कभी नही मिलेगा। मुझे तो ऐसी किताब के खिलाफ शिकायत करनी चाहिये, वारेन्का।

तुम्हारा आज्ञाकारी सेवक,

मकार देवुश्किन।

२७ जुलाई

मेरे प्रिय मकार अलेक्सेयेविच,

इधर हाल की घटनाओ से और तुम्हारे आखिरी पत्र से मुझे इतनी चिन्ता और आश्चर्य हुआ है कि मै क्या बताऊँ! अन्त में फेदोरा ने सारी बातो पर रोशनी डाली। इतना हताश और दुखी होने की क्या जरूरत है, मकार अलेक्सेयेविच? तुम्हारी सफाइयो से मुझे सतोष नही हुआ। जैसा कि अब जाहिर है, मुझे उस अच्छी नौकरी को ठुकराना नही चाहिये था। हाल में जो बाते हुई है, उनसे मै बहुत डर गई हूँ। तुम कहते हो कि मेरे प्यार की खातिर तुम बहुत सी बाते छिपाते रहे हो। मै सदा तुम्हारा आभार मानती रही हूँ हालाकि मुझे यही विश्वास रहा है कि तुम बैंक से पूजी निकाल कर मुझपर खर्च करते रहे हो। बताओ, मुझे अब यह जानकर कैसा लग रहा है कि तुम्हारी कोई भी पूजी बैंक में नही थी और तुम केवल मेरी हालत पर रहम खाकर अपनी तनख्वाह

पेशगी लेते रहे हो। मेरी बीमारी में तुम्हें अपने कोट से भी जुदा होना पड़ा। मैं क्या कहूँ, मेरे प्यारे अलेक्सेयेविच? सहानुभूति और अपनेपन के कारण पहली बार जो तुमने मेरी मदद की थी उसके बाद यह सिलसिला बंद कर देना चाहिये था। तुम्हें इतना पैसा बर्बाद नहीं करना चाहिये था। तुम इतने धनी नहीं हो। तुमने मेरे साथ स्पष्टवादिता से काम नहीं लिया, मकार अलेक्सेयेविच। और अब मुझे मालूम है कि तुम्हारे बचे-खुचे पैसे पोशाक, मिठाइयों, थियेटर के टिकटों, पुस्तकों, मनोरंजन आदि पर खर्च हुए। मुझे अपनी अक्षम्य नादानी पर बहुत क्षोभ है। (क्या मैंने तुम्हारी जरूरतों का खयाल किये बिना ही तुम्हारे सारे उपहार स्वीकार नहीं किये?) उन सब चीजों से, जिनके जरिये तुमने मुझे खुशी देने की कोशिश की थी, मुझे हार्दिक पीड़ा और दुःख पहुँचा है। मैं पश्चात्ताप की अग्नि में झुलस रही हूँ। मैंने हाल की तुम्हारी मनोव्यथाओं को देखा था और मैं बेचैन भी हो उठी थी लेकिन जो कुछ हुआ उसकी मैंने आशा भी

नही की थी। हे भगवान! तुम आत्मसयम कैसे खो बैठे, मकार अलेक्सेयेविच? लोग क्या कहेगे! विनम्रता, बुद्धिमानी और सहृदयता के लिये तुम्हारा कितना सम्मान था और अब तुममे ऐसी बुराई कैसे चली आई जिसकी तरफ पहले तुम्हारा जरा भी झुकाव नही था! मुझे कैसा लगा जब फेदोरा ने मुझे यह बताया कि तुम सडक पर नशे मे बेहोश पडे थे और पुलिस तुम्हे घर उठाकर ले आई? मुझे अपने कानो पर विश्वास नही हुआ, हालाकि मैं कुछ असाधारण घटना की आशका कर रही थी, क्योकि पिछले चार दिनो से तुम मुझसे नही मिले थे। क्या तुमने यह नही सोचा, मकार अलेक्सेयेविच, कि तुम्हारी गैरहाजिरी का असल कारण ज्ञात होने पर तुम्हारे उच्च अधिकारी तुम्हे क्या कहेगे? तुम लिखते हो कि तुमपर लोग हँस रहे हैं, उन्हे हमारी दोस्ती का पता चल गया है और तुम्हारे पड़ोसी हँसी-ठट्ठे में मेरे नाम का भी जिक्र कर देते है। भगवान के नाम पर मेरे मकार

अलेक्सेयेविच, उनकी बातो का ख्याल न करो और आत्मसयम से काम लो। फौजी अफसरो के साथ जो घटनाएँ हुई है, उनके कारण भी तुम्हारे लिये मुझे बड़ी चिन्ता हो गई है। कुछ अफवाहें मेरे पास पहुँच भी चुकी है। कृपया इसके बारे में मुझे विस्तृत रूप से बताना। तुमने लिखा है कि तुम सारी सच्ची बाते कहने में डरते थे, मुझसे दोस्ती छूट जाने का तुम्हे डर था, तुम हताश हो गये थे क्योकि तुम्हे मालूम नही था कि तुम मेरी मदद कैसे कर सकोगे और मुझे नीरोग कैसे रख सकोगे, तुम काफी कर्ज से लद गये थे और मकान-मालकिन के साथ तुम्हारा बुरी तरह झगडा भी हो गया था। इन सारी बातो को छिपाकर तुमने बहुत बडा गुनाह किया है। और अब तो मुझे इन सब का पता चल ही गया है। मुझे यह सुनते हुए शर्म आती है कि सारी मुसीबतो की जड मै ही हूँ। तुमने अपनी कार्रवाइयो से मेरे दुख और सताप को दुगुना कर दिया है। यह असह्य है, मकार अलेक्सेयेविच! आह, मेरे

दोस्त, बदकिस्मती सङ्क्रामक है। जो गरीब और दुःखी हैं उन्हे एक दूसरे से अलग रहना चाहिये। मैंने तुम्हारे सुखद जीवन में दुःख भरा है। इस विचार से ही मेरा हृदय टूक-टूक हो चला है।

साफ साफ बताओ कि यह सब क्या हुआ है और इस हालत में तुम कैसे पहुँच गये? यदि सभव हो, तो मुझे सात्वना देनेवाली कोई बात कहो। इस अनुनय में मेरा स्वार्थ नही है बल्कि मेरी मित्रता का तकाजा है जिसे कोई भी मेरे हृदय से अलग नही कर सकता। बिदा! मैं तुम्हारे उत्तर के लिये बेचैन हूँ। मेरे बारे में ऐसी बाते सोचना तुम्हारी गलती है, मकार अलेक्सेयेविच।

तुम्हारी स्नेहिनी,

वरवारा दोब्रोस्योलोवा।

है। मेरी मकान-मालकिन की बक-झक कुछ कम हो गई है क्योंकि तुमने जो दस रुबल भेजे थे उन्हें मैंने उसी हवाले कर दिया है। जहाँ तक दूसरों का सवाल है, उनसे मुझे कोई कष्ट पहुँचने का डर नहीं क्योंकि उनसे मैं उधार लेने की कोशिश ही नहीं करता। मुझे अपनी आखिरी सफाई में यह कहना है, मेरी प्रिया तुम्हारा सम्मान इस संसार में मेरे लिये बहुत मूल्यवान है और

मेरी सारी कमी की पूर्ति उससे हो जाती है। भगवान की दया है, विपत्ति का पहला झोंका खतम हो चुका है और तुम मुझे स्वार्थी व्यक्ति और झूठा मित्र नही समझती हो क्योंकि मैंने तुम्हारी जुदाई से घबड़ाकर तुम्हे जाने नही दिया और इस तरह तुमसे छल-कपट किया, मेरी नन्ही देवांगना। मै अपने काम पर दुगुने उत्साह के साथ लौट आया हूँ और पूर्ण तत्परता से काम कर रहा हूँ। येवस्ताफी इवानोविच की बगल से कल मै गुजरा तो उन्होंने एक शब्द भी नही कहा। मै यह नही छिपा सकता, मेरी प्रिया, कि मै कर्ज से कुचला जा चुका हूँ और अपने कपड़ो की हालत देखकर चिन्तित हूँ। लेकिन कोई बात नही, तुम्हे चिन्ता करने की जरूरत नही। पचास कोपेक की रेजगारी जो तुमने भेजी है, उसे पाकर मेरा हृदय टूक-टूक हो गया है। हालत यहाँ तक पहुँच जाती है! सच्ची बात तो यह है कि मै तुम्हारी मदद नही कर रहा हूँ बल्कि तुम—एक लाचार और अनाथ इन्सान—मेरी मदद कर रही हो। फेदोरा ने उन पैसो को लेकर बुद्धिमानी दिखाई है। फिलहाल, कही से पैसे मिलने की गुंजाइश नही। यदि कोई गुंजाइश हुई तो मै तुरत सूचित करूँगा।

मकार देवुश्किन।

२८ जुलाई

ओह, वारेन्का, वारेन्का!

मुझे नहीं, बल्कि तुम्हें, अपने आप पर शर्म आनी चाहिये! इसकी चेतना तुम्हें सदा बनी रहेगी। तुम्हारे अन्तिम पत्र से मैं व्यग्र हो उठा, लेकिन अपना हृदय टटोलने पर मैंने पाया कि मैं ठीक था, बिलकुल ठीक।

मै, निस्सन्देह, अपने रास-रग के वारे मे जिक्र नही कर रहा हूँ (उसके वारे मे बहुत हो चुका, मेरी प्रिया) वल्कि यह कह रहा हूँ कि मुझे तुमसे मोह है और तुम्हारे लिये मोह होना कोई गुनाह नही, विलकुल नही। इसके वारे में तुम्हे कोई पता नही है, मेरी प्रिया। यदि तुम्हे पता चल पाता कि मै तुम्हारे विना क्यो नही जी पाऊँगा तो तुम ऐसी बाते फिर कभी कहने का नाम नही लेती। यह तुम्हारा केवल मस्तिष्क वोल रहा है। मुझे विश्वास है तुम्हारा हृदय कुछ दूसरी ही वात कहेगा।

सत्य तो यह है मेरी प्रिया, कि मुझे याद नही कि मेरे और अफसरो के वीच क्या वाते हुई। मै यह जरूर कहूँगा कि मै दु खद स्थिति में था। यूँ कहना ठीक होगा कि पूरे महीने भर मै एक धागे के सहारे हवा में लटका रहा, वडी सकटपूर्ण स्थिति थी। मैने तुमसे और अपने पडोसियो से भी वाते छिपाई। लेकिन मेरी मकान-मालकिन ने भयानक उपद्रव मचाना शुरू किया। मैने जरा भी परवाह न की। सोचा, उस वूढी डायन को जी भर कह लेने दो। लेकिन पहली बात तो यह कि वह बडा अपमानजनक

और इस प्रकार, वारिन्का, दुर्भाग्य की गाथा ने मुझे लगभग कुचल ही दिया। इसी पर गजब ढाने के लिये फेदोरा ने मुझसे यह भी कहा कि कोई शैतान तुम्हारे घर पर आकर तुम्हें अपने निर्लज्ज प्रस्तावों से बेइज्जत कर गया। मैं अपनी तकलीफ से ही समझ सकता हूँ कि तुम्हें कितनी चोट हुई होगी। उस मौके पर मेरा दिमाग अपने वश में नहीं रहा और मैं पतन की आखिरी मंजिल पर पहुँच गया। मैं पागलपन की हालत में उस शैतान के पास दौड़ा। मैं खुद नहीं समझ सका कि मैं क्या करने जा रहा था, पर मैं यह नहीं बर्दाश्त कर सका कि तुम्हारी इज्जत पर कोई हमला करे। चारों तरफ उदासी छाई थी, जोरों की बारिश हो रही थी और सड़कों

पर कीचड और फिसलन भरी थी। मैंने अपना विचार वदल लिया और लौटने ही वाला था कि मैं गर्त में आ गिरा। मेरी मुलाकात येमेल्या अर्थात् येमेल्यान इल्यीच से हो गई। वह किरानी है, मतलव कि वर्खास्त होने तक वह एक किरानी था, और वह अपनी जीविका के लिये अव क्या करता है, यह मै क्या वताऊँ! अत. हम एक ही दिशा में साथ साथ चल पडे। लेकिन अपने मित्र के दुर्भाग्य और लालचो के वारे में कहानी पढकर तुम्हे क्या आनद मिलेगा, वारेन्का? तीसरे दिन शाम को येमेल्या ने मुझे उस अफसर के पास जाने के लिये उत्तेजित किया। द्वारपाल से मुझे उस अफसर का पता मालूम हो गया था। मैं वहुत दिनो से देखता आ रहा था कि उस अफसर के साथ कोई गडवडी जरूर थी जव वह हमारे मकान में रहता था तो मैंने यह गौर किया था। अव मैं सोचता हूँ कि मैंने वुद्धिमानी से काम नही लिया था और मै आपे में नही था। मुझे इसके सिवा कुछ भी याद नही कि कमरा अफसरो से भरा हुआ था या शायद मेरी आँखें ही दोहरी सूरते देख रही थी— भगवान जाने। मै क्या-क्या कह गया, मुझे याद नही

लेकिन इतना निश्चित है कि मै गुस्से और सनक में वहुत कुछ कह गया। तव उन्होंने मुझे कमरे से वाहर निकाल दिया या यूं कहो कि सीढी से नीचे धकेल दिया। उन्होने मुझे सीढी से नीचे ही नही फेंक दिया वल्कि मकान से वाहर निकाल दिया। उसके वाद तो तुम्हे मालूम ही है कि मै घर कैसे पहुंचा और वस, इससे आगे कहने के लिये कुछ नही है। मेरे सम्मान को धक्का जरूर पहुंचा लेकिन किसी को इसके वारे में कुछ मालूम नही, अजनवी भी कुछ नही जानते। चूंकि यह वात केवल तुम्हे मालूम है, इसलिये मै समझता हूं कि यह घटना ही कभी नही घटी। ठीक है न, वारेन्का? मै निश्चित रूप से जानता हूं कि पिछले साल अक्सेन्ती ओसिपोविच ने दफ्तर में प्योतर पेतरोविच के सम्मान पर आघात पहुंचाया था। लेकिन यह सव कुछ चुपचाप हुआ, वहुत ही चुपचाप। उन्होने पहले उसे द्वारपाल के कमरे में वुलाया—यह सव कुछ मै किवाड की दराज से देख रहा था—और तव उन्होने उसे खरी-खोटी सुनाई लेकिन वडे ही शिष्ट ढग से—अकेले में। मैने भी इसका जिक्र किसी से नही किया।

उसके बाद प्योतर पेतरोविच और आकन्तेन्ती ओसिपोविच ऐसे रहने लगे मानो कुछ हुआ ही नही हो। प्योतर पेतरोविच बहुत गभीर आदमी है, उसने इसके बारे में मौन धारण कर लिया। इसके बाद उन्होंने एक दूसरे से हाथ मिलाये और एक दूसरे के सम्मान में झुक गये।

मैं बहस करना नही चाहता, वारेन्का, मेरी हिम्मत नही। मैं बहुत नीचे गिर गया हूँ, सचमुच बहुत नीचे। सबसे बडी बात यह है कि मैं अपनी नजर में भी गिर गया हूँ। यह भाग्य का ही दोष है। भाग्य के हाथो से बचकर कोई कैसे भाग सकता है? अत, तुम्हे मेरे दुर्भाग्य और विपत्तियो के बारे में पूरी कहानी मालूम हो चुकी, वारेन्का। वह पढने योग्य हर्गिज नही। मै बिलकुल स्वस्थ नही हूँ, मेरी प्रिया; मेरी सब मस्ती खतम हो चुकी है। तुम मेरे सम्मान, प्यार और स्नेह का विश्वास रखना, मेरी प्यारी बरबारा अलेक्सेयेवना।

तुम्हारा आज्ञाकारी दास,

मकार देवुश्किन।

२६ जुलाई

मेरे प्रिय मकार अलेक्सेयेविच,

मैंने तुम्हारी दोनो चिट्ठियां पढी है और मैं स्तब्ध रह गई हूँ। मेरे नादान दोस्त! या तो तुम अपनी कुछ चिन्ताओ मे अभी भी चिपके हुए हो या . . सचमुच, मकार अलेक्सेयेविच तुम्हारी चिट्ठी से यही पता चलता है कि अभी भी तुमको कुछ ऐसी तकलीफ है जिसे तुम मुझसे छिपाने की कोशिश कर रहे हो। आज निश्चित रूप से हम लोगो से मिलने के लिये आओ। बेहतर होगा कि आज रात का भोजन हम लोगों के साथ ही करो। तुमने मुझे यह नही बताया कि तुम्हारे दैनिक जीवन की गाडी किस तरह चल रही है और मकान-मालकिन के साथ तुम्हारी कैसी निभ रही है। तुमने जान-बूझकर इस मामले में चुप्पी साध ली है। बिदा, मेरे दोस्त, आना अवश्य। अच्छा होता कि तुम रात का भोजन सदा हम लोगो के साथ ही करते। फेदोरा बहुत अच्छा खाना बनाती है। बिदा।

तुम्हारी

वरवारा दोब्रोस्योलोवा।

दुःख करने की मेरी जरा भी इच्छा नहीं—मैंने बुढ़ापे की गुस्सा दूर करने की कोशिश की थी। अच्छा भई, यदि तुम्हीं ज़ोर देकर कहती हो तो मान लिया कि वह एक बहुत बड़ा अपराध था। तुमने यह सुनकर मेरे हृदय को बड़ी पीड़ा पहुँचायी है, मेरी नन्ही नागिनी। ऐसी बातें कहकर अपना गुस्सा मुझपर प्रगट न किया करो। मेरा हृदय घावों से भरा है। गरीब तो शक्की होते ही हैं। मेरी समझ से वे शक्की पैदा ही होते हैं। मैंने पहले भी इसे महसूस किया है। गरीब आदमी बहुत शक्की होता है। वह हमेशा हर चीज पर और सब आदमियों पर, जो उसकी नजरों से गुज़रते हैं, चौकसी रखता है और जानने की कोशिश करता है कि वे उसके बारे में क्या कह रहे

है–शायद वे कह रहे है "कैसा गया-गुज़रा आदमी है! क्या सोचता रहता है? बगल से देखने पर कैसा मनहूस सा लगता है!" और यह सर्वविदित है, वारेन्का, कि गरीब आदमी की कोई कीमत नही, कोई इज्जत नही–इसलिये कोई कुछ कहे तो कोई परवाह नही–सब कुछ पहले की ही तरह चलता रहेगा। और क्यो? क्योकि दुनिया गरीब आदमी का सब कुछ साफ साफ देखना चाहती है, उसकी कोई भी बात गोपनीय नही, उसके लिये गोपनीय शब्द कोई अर्थ ही नही रखता। जहाँ तक आत्मसम्मान का सम्बन्ध है –वह उसके लिये नही है। हाल ही में येमेल्या ने मुझे बताया था कि उसके लिये चदा इकट्ठा किया गया था लेकिन हर दस कोपेक चदे के लिये सरकारी जाँच-पडताल हुई थी। उन्होंने सोचा कि वे पैसे फेंक रहे है लेकिन वस्तुत वे एक गरीब आदमी का तमाशा देखने के लिये पैसे दे रहे थे। आजकल दान देने के भी नये तरीके है। या शायद हमेशा से ही यही तरीके रहे है, कौन जाने। शायद लोगो को इसका पता नही या इसके बहुत आगे की बात मालूम हो। दूसरी बातो के बारे में हम बहुत थोडा जानते है लेकिन इसके

वारे में वहुत कुछ मालूम है। और क्यो? अनुभव के कारण, क्योकि जलपान-गृह को जाते हुए किसी भद्र पुरुप को हम अपने आप से यह कहते हुए सुन सकते है "मुझे ताज्जुव है कि वह गदा किरानी आज क्या खायेगा? मैं स्वादिष्ट भोजन करूँगा और वह शायद विना घी के खिचडी खायेगा।" ऐसे भद्र पुरुप सचमुच वहुत से मिलेगे, वारेन्का। मैं क्या खाता हूँ, उसे देखने की क्या जरूरत? ऐसी दुष्टात्माएँ तुम्हे वहुत सी मिलेगी जो सदा यह देखती रहती है कि तुम्हारे पैर ठीक से जमीन पर पड रहे है या नही या अमुक विभाग का किरानी ठीक से चल रहा है या नही, पतलून से उसके घुटने निकले हुए है या नही और तव वह घर जाकर यह सव कुछ लिख डालता है और उस कूडा-कर्कट को छपवा डालता है। मेरे प्रिय महाशय, आपको इससे क्या मतलव कि मेरे पैर ठीक से पड़ रहे है या नही? मेरी अशिष्टता को माफ कर देना, वारेन्का, लेकिन एक गरीव आदमी को एक कुमारी की तरह ही लाज लगती है। तुम वुरा न मानना, मेरी अशिष्टता को माफ कर देना—जिस तरह तुम अजनवी के सामने कपडे नही उतार सकती उसी तरह गरीव आदमी यह वर्दाश्त नही

कर सकता कि कोई उसके निजी मामलो मे, उसके पारिवारिक सम्बन्ध मे दखल दे। और यही तो दुःख है। इसी कारण से मुझे अपने दुश्मनो से चोट पहुँची है—उन्होने मेरी नेकनामी और आत्मसम्मान पर कीचड उछाला है।

दफ्तर मे भी मै एक गँवार की तरह, रूखे आदमी की तरह पेश आया हूँ। मै यह सोचकर ही शर्म से जमीन में गडने लगता हूँ। मै अपनी केहुनियो को कमीज़ की बाँहो से बाहर झाँकते हुए और बटनो को धागे के बल घंटी की तरह झूलते हुए कैसे बर्दाश्त कर सका? लेकिन आज तो हद हो गई। यहाँ तक कि स्तेपान कार्लोविच की भी नज़र पड गई। काम-काज की बातचीत के सिलसिले में उसने अचानक कह दिया "मेरे ग़रीब मकार अलेक्सेयेविच!" और तब हठात् रुक गया। लेकिन मैंने उसके आखिरी शब्दो का अनुमान लगा लिया और मै इस प्रकार झेंप गया कि मेरी गजी खोपडी भी जल उठी। इसमें कोई खास बात नही लेकिन बुरा तो जरूर लगता है। क्या उन्हे कोई भनक मिल गई है? भगवान न करे कि यह सच हो। सच्ची बात यह है कि एक

ही आदमी ऐसा है जिसपर मेरा पक्का सन्देह बना रहता है। वकवासियो के लिये यह कोई वड़ी वात नही। एक पैसे की कीमत पर वे शैतान किसी के वैयक्तिक जीवन का परदाफाश कर सकते है।

मुझे मालूम है कि यह किसका हथकडा है। केवल रतज्यायेव का, दूसरे और किसी का नही। हमारे मत्रालय मे उसकी किसी से जान-पहचान है जिसे वह सव कुछ वता सकता है—काफी वढा-चढा कर भी। या शायद उसने अपने मत्रालय में ये वाते कही हो और वहाँ से फैलते फैलते हमारे मत्रालय में पहुँच गई हो। हमारे पडोसी एक एक कर इसके वारे में जानते है। मैंने उन्हें तुम्हारी खिडकी की ओर उँगली उठाते भी देखा था। जव मैं तुम्हारे यहाँ भोजन करने के लिये जा रहा था तो लोग खिडकियो से सर निकाल कर देख रहे थे और मकान-मालकिन ने तो तुम्हे वहुत कुछ भला-वुरा कहा। लेकिन रतज्यायेव की करनी की तुलना में तो यह कुछ नही। उसने चुभते हुए व्यगो के साथ हम लोगो को किताब में उतार डालने की ठान रखी है। उसने वहुत कुछ कह रखा है और भले लोगो से मुझे चेतावनी भी मिल चुकी

है। मैं भरसक अपनी चालाकी से काम ले रहा हूँ। हमें क्या करना चाहिये? भगवान हम लोगों को दण्ड देना चाहता है, मेरी देवागना। तुमने समय काटने के लिये मुझे एक किताब भेज देने का वादा किया था। जाने दो किताब को। आखिर किताब में रखा ही क्या है? केवल प्रलापों का ढेर। उपन्यास क्या है? निकम्मे व्यक्तियों के लिये मसाला और वाहियात बातों का पिटारा। मेरा अनुभव तो यही है। यदि लोग शेक्सपियर की चर्चा करें और कहें "साहित्य मे शेक्सपियर का अपना विशिष्ट स्थान है," तो यकीन मानो कि वहाँ भी वाहियात बातो का ढेर है। यह सब कुछ वाहियात है और केवल निकम्मो के काम की चीज!

तुम्हारा

मकार देवुश्किन।

२ अगस्त

मेरे प्रिय मकार अलेक्सेयेविच,

किसी बात के लिये चिन्ता न करो। भगवान की दया से सब ठीक हो जायेगा। फेदोरा ने हम दोनो के

लिये काफी काम का बन्दोवस्त कर लिया है और हम लोग उसमें दिल से जुट गये हैं। शायद अब हम लोग सब कुछ ठीक कर लेंगे। उसे सन्देह है कि मेरी हाल की मुसीबतो का सम्बन्ध किसी न किसी तरह अन्ना फयोदोरोवना से है, लेकिन फर्क क्या है? आज मैं बहुत प्रसन्न हूँ। मैंने सुना है कि तुम फिर कर्ज लेने की बात सोच रहे हो। भगवान न करे कि यह सत्य हो। कर्ज वापस करने के समय तुम्हें अनन्त कष्टो का सामना करना पडेगा। यह याद रखो कि तुम हम लोगो के घनिष्ठतम मित्र हो, हम लोगों से मिलने के लिये अक्सर आया करो और मकान-मालकिन की बातो का ख्याल न करो। जहाँ तक तुम्हारे अन्य अहित-चिन्तको और दुश्मनो का सवाल है, तुम्हारा भय काल्पनिक है, मकार अलेक्सेयेविच! मैं तुम्हें बता चुकी हूँ कि तुम्हारे लिखने का ढग बडा अजीब होता है और अभी भी है। विदा। विश्वास है तुम शीघ्र ही मिलने आओगे।

तुम्हारी

व०दो०

वरवारा अलेक्सेयेवना, मेरी नन्ही गुड़िया,

मैं तुम्हें यह वता देना जरूरी समझता हूँ, मेरे प्राणों की प्राण, कि मेरी आशाएँ पनप रही है। लेकिन यह तुम कैसे कह सकती हो कि मुझे कर्ज लेना ही नही चाहिये? यह तो बिलकुल असभव है, मेरी प्रिया। इधर मेरा हाथ बिलकुल खाली है और भगवान न करे, यदि उधर तुम्हे कुछ हो गया तो मैं क्या कर सकूँगा? तुम बहुत ही नाजुक हो। इसलिये मेरे विचार से थोडा कर्ज लेना बहुत जरूरी है।

तुम्हे यह वता दूं कि मैं दफ्तर में येमेल्यान इवानोविच की वगल मे बैठता हूँ। यह येमेल्यान वह व्यक्ति नही है जिसके वारे में मैं तुम्हे वता चुका हूँ। वह नाममात्र का सलाहकार* है। इस जगह मैं और वह, ये दो ही व्यक्ति, सवसे पुराने कर्मचारी है। वह दयालु और निस्स्वार्थी

---

* नौकरशाही शासन की चौदह श्रेणीवाली प्रणाली की एक निम्नतम श्रेणी।—स०

व्यक्ति है लेकिन वह वहुत कम वोलता है और निपट देहाती की तरह लगता है। वह वहुत योग्य है और लिखता क्या है मानो मोती के दाने विखेरता है। मेरी लिखावट से जरा भी उन्नीस नही। वह वहुत काविल आदमी है। हम लोग एक दूसरे से वहुत घनिष्ठ नही रहे है केवल अभिवादन तक का सम्वन्ध रहा है। इसलिये स्वभाविक है कि जव मुझे पेन्सिल वनाने के लिये चाकू की जरुरत पड़ती हे तो मै उससे कहता हूँ—"क्या आप अपना चाकू देने की कृपा करेगे, येमेल्यान इवानोविच?" लेकिन आज उसने मुझसे अचानक कहा—"वलिहारी है तुम्हारी वुद्धि की, मकार अलेक्सेयेविच?" मैंने यह अनुभव किया कि वह मेरा भला चाहता था, इसलिये मैंने उसे सव कुछ वता दिया। सव कुछ नही। मुझमें उतनी हिम्मत नही। केवल इतना कि मै वुरी परिस्थिति में था और यही सव "लेकिन मेरे प्रिय दोस्त," येमेल्यान इवानोविच ने कहा, "तुम प्योतर पेतरोविच से कुछ कर्ज क्यो नही ले लेते? वह सूद पर कर्ज देता है। मै खुद उससे कर्ज लिया करता था। वह सूद भी वहुत अधिक नही लेता है।" यह सुनकर मेरा हृदय

कितना उछलने लगा, वारेन्का! शायद भगवान प्योतर पेतरोविच को मुझे कर्ज देने के लिये प्रेरित करें। मैं हिसाब-किताब भी करने लगा हूँ कि मकान-मालकिन को किराया कैसे दिया जाय, तुम्हे कैसे मदद दी जाय और मेरी जरूरतों की चीजें कैसे खरीदी जायें। मुझे अपनी जगह पर बैठने हुए भी शर्म आती है। सतानेवाले मुझपर फब्तियाँ कसते रहते हैं। भगवान उन्हें क्षमा करे। महामहिम भी कभी कभी हमारी मेज की बगल से गुजर जाते हैं। भगवान न करे, कही उनकी नजर मेरे कपडो पर पड गई तो वे क्या सोचेंगे! वे सफाई के मामले में बहुत सख्त है। वे भले ही मुझे देख कर बिना कुछ कहे हुए चले जायें लेकिन मैं तो ग्लानि से मर जाऊँगा। इसी लिये अन्त में मुझे एक जिन्दा लाश की तरह लेकिन पूरी आशा के साथ, प्योतर पेतरोविच के पास जाकर हाथ फैलाना पडा। और जरा कल्पना करो, वारेन्का, कि इसका कोई फल नही निकला। प्योतर पेतरोविच, फेदोसेई इवानोविच के साथ बाते करने में मशगूल था। मैंने उसकी कमीज की बाँह जरा खीचकर कहा "प्योतर पेतरोविच!" जब वह मुखातिब हुआ

तो मैंने कहा कि मुझे केवल तीस रूबल की जरूरत है और . पहले तो ऐसा लगा कि उसने मेरी बात ही नहीं समझी और जब मैंने अपनी बात फिर से दुहराई तो वह केवल हँसकर रह गया। मैंने फिर से अपनी बात समझाने की कोशिश की लेकिन उसने बीच में ही रोक-कर पूछा: "तुम्हारे पास जमानत के लिये क्या है?" तब वह अपने कागज-पत्र में व्यस्त हो गया और लगा जैसे मेरे बारे में वह सब कुछ भूल गया हो। इससे मुझे बड़ा क्षोभ हुआ। "नहीं, प्योतर पेतरोविच," मैंने उत्तर दिया, "मेरे पास कोई जमानत नहीं। लेकिन अपना वेतन मिलने पर मैं आपकी रकम तुरत लौटा दूंगा। मैं निश्चय ही लौटा दूंगा। आपको मेरा यकीन होना चाहिये।" इसी मौके पर उसे किसी ने बुला लिया और मैं खड़े खड़े उसका इन्तजार करता रहा लेकिन वापस आने पर वह अपनी कलम साफ करने लगा मानो मेरी उपस्थिति का उसे कोई ज्ञान ही नहीं था। इसलिये मैंने फिर कहना शुरू किया "क्या कोई गुंजाइश नहीं, प्योतर पेतरोविच?" लेकिन जैसे उसने मेरी बात ही नहीं सुनी। मैं खड़ा खड़ा थक गया और तब आखिरी कोशिश करने का इरादा

किया और उसकी कमीज़ की बाँह खींचकर उसे मुख़ातिब करने की कोशिश की। लेकिन उसके मुंह से एक शब्द भी नही निकला। वह कलम साफ कर लेने के बाद लिखने लगा। अत मुझे निराश लौटना पड़ा। शायद वे बहुत ही योग्य लोग है, मेरी प्रिया, लेकिन बहुत घमडी, इसलिये वे हमसे दूर, बहुत दूर है। 'लेकिन मै यह सब कुछ क्यो लिख रहा हूँ, मेरी प्रियतमा? ऐसा हुआ कि येमेल्यान इवानोविच भी उसी तरह से हँसा जिस तरह से प्योतर पेतरोविच हँसा था। उसने सर हिलाया लेकिन उस भले आदमी ने मुझे उत्साहित किया। वह नेक आदमी है, उसने मुझे विश्वास दिलाया कि वह मेरी सिफारिश अपनी जान-पहचान के एक अफसर से करेगा जो विवोर्गस्काया स्तोरोना में रहता है और सूद पर लोगो को कर्ज देता है। येमेल्यान इवानोविच कहता है कि वहाँ मुझे कर्ज जरूर मिल जायेगा। मै वहाँ कल जाऊँगा। ठीक है न? भगवान करे कि मुझे कर्ज मिल जाय। मकान-मालकिन मुझे मकान से निकाल रही है और उसने खाना देना भी बद कर दिया है। मेरे जूते भी अब बिलकुल जवाब दे चुके है और कुछ बटन गायब है और क्या नही

गायब है। यदि कोई उच्च अधिकारी मेरी हुलिया देख ले तो क्या होगा। हमारी मुसीबतो की कोई हद नही, वारेन्का, कोई हद नही।

मकार देवुश्किन।

४ अगस्त

मकार अलेक्सेयेविच, मेरे रहमदिल दोस्त,

जितनी जल्दी हो सके तुम कर्ज लेने की कोशिश करो। वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए मै तुम्हारी किसी भी सहायता की याचना नही करती, लेकिन तुम्हे यह याद रखना जरूरी है कि हम किस स्थिति में है। हम लोग इस मकान में और अधिक नही रह सकते। मुझे कितनी मुसीबते झेलनी पडी है और मुझे कितनी व्यथा है, यह मै क्या बताऊँ। आज सुबह एक बुजुर्ग आदमी, लगभग बूढ़ा आदमी, बहुत से पदक लगाये कमरे में चला आया। मै तो बिल्कुल भौचक रह गई और समझ नही सकी कि वह क्या चाहता था। फेदोरा बाजार गई थी। उसने मेरे [illegible] के बारे में पूछा और उत्तर की प्रतीक्षा

किये बिना ही उसने कहा कि वह उस अफसर का चाचा है, और वह अपने भतीजे से उसके दुर्व्यवहार के कारण बहुत रंजीदा है। उसने कहा कि उसका भतीजा निकम्मा और नासमझ है और वह खुद मुझे सहारा देने को तैयार है। उसने मुझे नौजवानों की उपेक्षा करने की सलाह दी और कहा कि मेरे प्रति उसकी पिता जैसी सहानुभूति है और वात्सल्यभाव से वह मेरी मदद करने को तैयार है। मैं लाल हो उठी और मेरी समझ में नहीं आया कि मुझे क्या कहना चाहिये। मैं धन्यवाद भी नहीं देना चाहती थी। उसने मेरी इच्छा के विरुद्ध मेरे हाथ अपने हाथ में ले लिये, मेरे गालों को छूते हुए कहा कि मैं बहुत सुन्दर हूँ, मेरे गालों पर दिखाई पड़नेवाले हँसी के गड्ढे उसे बहुत अच्छे लगते हैं (भगवान जाने उसने क्या कहा) और अन्त में यह कहते हुए कि वह एक बूढ़ा आदमी है उसने मुझे चूमने की भी कोशिश की। तभी फेदोरा पहुँच गयी। वह थोड़ा घबड़ा गया और उसने फिर विश्वास दिलाने की कोशिश की कि वह मेरी विनम्रता और विवेक के कारण मेरी कद्र करता है और मुझे उसे अजनबी नहीं समझना चाहिये। तब वह

फेदोरा को एक किनारे ले गया और उसे एक अजीब वहान से कुछ रकम देने की कोशिश करने लगा। फेदोरा ने इन्कार कर दिया। अन्त मे यह तसल्ली देते हुए कि मुझसे मिलने के लिये वह शीघ्र ही आयेगा और इस बार मेरे लिये एक जोडा कनफूल लायेगा, वह जाने को तैयार हो गया। (वह खुद घवडाया हुआ सा जान पडता था।) उसने मुझे एक वेहतर मकान में चलकर रहने की राय दी। उसने कहा कि मुझे एक पैसा भी किराया नही देना पडेगा। फिर उसने कहा कि मैं उसे बहुत पसद हूँ क्योकि मैं एक ईमानदार और समझदार लडकी हूँ और मुझे बिगडे हुए नवयुवको से बचे रहने की उसने फिर चेतावनी दी। अन्त में उसने कवूल किया कि वह अन्ना फ्योदोरोवना को जानता है और उसने सवाद भेजा है कि वह मिलने के लिये स्वय मेरे पास आनेवाली है। तब मुझे असली बात का पता चल गया और मैंने कैसा महसूस किया, यह मैं क्या बताऊँ। मैंने जीवन में पहली वार अपने को उस स्थिति मे पाया था। मै अपना क्रोध नही रोक सकी और उसे अपना मत साफ साफ बता दिया। फेदोरा ने भी मेरा समर्थन किया और हम लोगो ने उसे घर

से बाहर निकाल दिया। हमें विश्वास है कि यह सारी शरारत अन्ना फ्योदोरोवना की है, नहीं तो उसे हम लोगों का पता कैसे चलता?

अब तुमसे मेरी एक विशेष प्रार्थना है, मकार अलेक्सेयेविच! ऐसी स्थिति में मुझे कभी नहीं छोड़ना! कुछ कर्ज लेने की कोशिश करो क्योंकि हमें यहाँ से हटना है। फेदोरा का भी यही विचार है। हमें कम से कम पचीस रूबल की आवश्यकता होगी। आमदनी हो जाने के बाद मैं यह रकम वापस कर दूंगी। फेदोरा मेरे लिये और भी काम का बन्दोवस्त कर रही है। इसलिये सूद की परवाह किये बिना कर्ज ले लो। मैं यह सारी रकम लौटा दूंगी, अभी मेरी मदद करो। ऐसे समय में—खासकर जब तुम खुद मुसीबत में हो, तुम्हे तकलीफ देते मुझे बड़ा अफसोस हो रहा है। लेकिन मेरी आशा के केन्द्र एक तुम्ही हो! विदा, मकार अलेक्सेयेविच। मेरा ख्याल करो, भगवान तुम्हारे प्रयास में मदद करे!

व० दो०

४ अगस्त

मेरी अनमोल प्रिया, वरवारा अलेक्सेयेवना,

इन विपत्तियो से मै कितना तिलमिला उठा हूँ। मुसीवतो के कारण किस तरह मेरी आत्मा कॉपने लगी है! चुगलखोरो और उपद्रवियो की यह भीड-भाड हमारी जान लेकर ही रहेगी, मेरी देवागना। उन्ही के कारण मुझे कब्र की शरण लेनी पडेगी, मै कसम खाकर कहता हूँ। मै अब मरकर भी तुम्हारे लिये कर्ज लेने की कोशिश करूँगा। लेकिन यदि इसमे मुझे सफलता मिल गई तो मेरी मौत ही समझो, निश्चित मौत! क्योकि उसके वाद तुम मुझसे दूर भाग जाओगी—ठीक उस चिडिया की तरह जो अपने घोसले पर खौफनाक बाजो को उतरते देख कर भाग जाती है। मुझे इसकी वडी चिन्ता है, मेरी प्रिया। तुम स्वय पीडित हो, व्यथित हो, फिर भी तुमने मुझे तसल्ली दी है कि तुम कर्ज लौटा दोगी अर्थात् तुम अपने जर्जर स्वास्थ्य के साथ इतना काम करोगी कि समय पर सूद का भुगतान किया जा सके। ऐसी वाते कहने के पहले खूब सोच-समझ लिया करो, वारेन्का! क्यो तुम सिलाई-

बुनाई करोगी, अपने नन्हे से दिमाग को थकाओगी, अपनी प्यारी प्यारी आँखें खराब करोगी और स्वास्थ्य को नष्ट करोगी? आह, वारेन्का, मै खुद जानता हूँ कि मै कौडी काम का आदमी नही हूँ लेकिन मै अपने को किसी काम का बनाने की कोशिश करूँगा! कोई भी शक्ति मुझे नही रोक सकती। मै फाजिल काम करूँगा। मै लेखको के लिये प्रतिलिपियाँ तैयार करूँगा, मै खुद उनके पास जाकर उनसे प्रार्थना करूँगा कि वे मुझे कुछ काम दे। निश्चय ही उन्हे ऐसे व्यक्तियो की आवश्यकता है जो सुन्दर अक्षरो मे नकल कर सके। मै तुम्हे काम करते करते बीमार पडने नही दे सकता, मै तुम्हारी नासमझी को बढावा नही दे सकता। मै कही से भी कर्ज लेने की कोशिश करूँगा, मेरी अप्सरा। मै मरकर भी यह काम पूरा करूँगा। तुम कहती हो कि मुझे सूद की अनुचित दर से नही डरना चाहिये। चिन्ता न करो, मेरी प्रिया, अब मुझे किसी भी चीज़ से डर नही। मै चालीस रूबल बैंक-नोट के रूप मे कर्ज़ लेने जा रहा हूँ। यह रकम कोई ज्यादा नही है। है न? क्या चालीस रूबल के लिये मेरा विश्वास किया जायेगा? क्या वे केवल मेरी बात

का विश्वास करेंगे? क्या पहली ही नजर मे मुझपर लोगो का विश्वास जम सकता है? अर्थात्, क्या पहली नजर मे ही लोगो के ऊपर मेरा अनुकूल प्रभाव पड सकता है? मेरे व्यक्तित्व की कल्पना करो और अपनी राय दो, क्या ऊपर की वाते ठीक है? तुम क्या सोचती हो? मैं अव वहुत घवडा गया हूँ–यह सचमुच वडा दु खदायी है। चालीस रुवल मे से मैं पच्चीस रुवल तुम्हारे लिये अलग निकाल दूंगा, दो रुवल मकान-मालकिन के लिये और शेप मेरी अपनी जरूरतो के लिये। मकान-मालकिन को कुछ और रकम देनी चाहिये। यही उचित है। लेकिन ज़रा मेरी ज़रूरतो को भी देखो, वारेन्का, और तव तुम्हे पता चलेगा कि मैं इससे अधिक उसे नही दे सकता। इसलिये इसका ज़िक्र ही करना वेकार है। चाँदी का एक रुवल, एक जोडा जूते के लिये काफी होगा। मुझे सदेह है कि अपने इस पुराने जूते में मै कल दफ्तर तक भी जा सकूंगा या नही? गले का एक रूमाल भी वहुत जरूरी है क्योकि मौजूदा रूमाल एक साल पुराना हो गया है। लेकिन तुमने वादा किया था कि अपने ऐप्रोन मे से काट-कर तुम मेरे लिये गले का रूमाल और वडी वना दोगी।

इसलिये इनके बारे मे चिन्ता करने की कोई जरूरत नही। अत अब एक जोड़ा नया जूता और गले का एक नया रूमाल हो जायेगा। लेकिन बटनों का क्या इन्तजाम होगा, मेरी नन्ही वारेन्का? तुम्हें तो यह मानना ही पड़ेगा कि बिना बटना के मेरा काम नहीं चल सकेगा। मेरी जैकेट के एक तरफ के सभी बटन गायब हैं और मैं यह सोचकर कांप जाता हू कि यदि महामहिम की नजर पड़ जाय और वे कुछ कह दे—हालाकि वे क्या कहेंगे यह मैं कभी नही जान पाऊँगा क्योकि उसके सुनने के पहले ही मेरी मौत हो जायेगी, मैं अपनी जगह पर ही शर्म से मर जाऊँगा। हाँ, तो मेरे जीवन-निर्वाह और आधे पांड तम्बाकू के लिये तीन रूबल बच जायेंगे। मैं तम्बाकू के बिना नही जी सकता और पिछले नौ दिनो से मुझे तम्बाकू पीना मयस्सर नही हुआ है। बिना कुछ कहे हुए ही मैं इसे खरीद सकता था लेकिन मेरे लिये ऐसा करना शर्म की बात है। तुम वहाँ मुसीबत झेल रही हो और मैं यहाँ मौज के लिये पैसे खर्च करूँ। मै यह सब अपना मन हलका करने के लिये लिख रहा हूँ। मैं तुम्हे साफ साफ बता दूं कि मेरी हालत बिलकुल बदतर हो चली है अर्थात्

ऐसी हालत पहले कभी नही रही। मेरी मकान-मालकिन मुझे देखना वर्दाश्त नही कर सकती। उसकी नजर मे मेरा कोई सम्मान नही। इधर मै कर्ज़ से लदा हुआ हूँ और उधर मुझे ढेर-सी चीज़ो की जरूरत है। दफ्तर के किरानी हमेशा असह्य रहे है पर अब तो वे भी हद से गुज़र रहे है। मै हर बात, हर किसी से छिपाने मे सावधानी वरतता रहता हूँ, मै अपने आप को भी छिपाने की कोशिश करता हूँ, मै लोगो की नज़रो से छुपकर निकल जाने की कोशिश करता हूँ। केवल मै तुमसे ही बोलने की हिम्मत कर सकता हूँ। और यदि मुझे कर्ज लेने में सफलता नही मिली तब? नही, नही, वारेन्का, ऐसी बात सोचनी ही नही चाहिये। ऐसी बाते सोच सोचकर अपने को सताना अच्छा नही। तुम्हे कोई चिन्ता करने की ज़रूरत नही। लेकिन, हे भगवान, उसके बाद तुम्हारा क्या होगा! तुम जा नही सकोगी और मेरे पास ही रहोगी, यह सत्य है—लेकिन फिर मै इस जगह लौटने की हिम्मत कैसे कर सकूँगा? मै बर्बाद हो जाऊँगा, खाक में मिल जाऊँगा। लेकिन इतना लिखने के बजाय मुझे अपनी हजामत बनानी चाहिये। शायद मुझे लकदक बनना

जरूरी है क्योंकि नकदार लोगो पर ही दुनियावालो का विश्वास जमता है, भगवान मेरी मदद करे। मै भगवान का नाम लेकर इस काम के लिये घर से निकल पडूगा।

म० देवुश्किन।

५ अगस्त

मेरे आदरणीय मकार अलेक्सेयेविच,

यदि तुम हताश हो जाओगे तो हम लोगो का क्या हाल होगा। हताश न हो मेरे मित्र। हमने काफी मुसीबते झेली। मै चाँदी के सिक्के में तुम्हारे पास तीस कोपेक भेज रही हूँ, मै इससे अधिक नही भेज सकती। कल तक के लिये जो आवश्यक खर्च होगा, उसके लिये यह काफी होगा। मेरे और फेदोरा के पास अब कुछ नही बचा है, और हम लोगो का काम कल कैसे चलेगा, हम खुद नही जानती। यह बहुत दुःख की बात है, मकार अलेक्सेयेविच, लेकिन तुम दुःखी न हो। तुम्हे सफलता

नही मिली लेकिन तुम तो अपनी कोशिश मे कोई कसर उठा नही रखते। फेदोरा कहती है कि हम अभी यहां रह सकते हैं और यदि हम लोग यहाँ से हटकर कही चले भी जायें तो उसका कोई खास परिणाम नही निकलेगा। फिर भी, हमे हटना जरूरी है। मै और भी लिखती लेकिन तबीयत ठीक नही।

तुम्हारी तो विचित्र हालत है, मकार अलेक्सेयेविच। हर बात का, हर चीज का असर तुम्हारे हृदय पर क्यो पड जाता है? इस तरह से तो तुम कभी सुखी नही रह पाओगे। मैने तुम्हारी चिट्ठियो को बडे ध्यान से पढा है और इसी निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि तुम अपने से भी अधिक मेरी चिन्ता करते हो। लोगो का कहना है कि तुम बहुत सहृदय हो। मुझे भी विश्वास है। मुझे दोस्ताना ढग पर तुम्हे थोडी सलाह देने की इजाजत दो। जो कुछ भी तुमने मेरे लिये किया है, इसके लिये मै तुम्हारी बहुत कृतज्ञ हूँ, बहुत बहुत कृतज्ञ। मै तुम्हारे उपकारो को कभी नही भूल सकती। जरा सोचो कि तुम अपनी सारी मुसीबतो के बावजूद, जिनकी एकमात्र जड केवल मै हूँ, तुम मेरे

सुख-दुख मे काम आते रहे हो, मेरे प्यार के लिये जिन्दा रहने की कोशिश करते रहे हो। दूसरे लोगो के दुख से भी तुम्हे हार्दिक कष्ट होने के कारण तुम कभी प्रसन्न नही रह सकोगे। आज दफ्तर के बाद जब तुम मुझसे मिलने आये तो तुम्हे देखकर मुझे बहुत डर लगा। तुम पीले और भयातुर दिखाई पड रहे थे मानो तुम्हारी प्रेतात्मा खडी हो। क्यो? क्योंकि तुम अपनी असफलता के बारे में मुझे बताने से डर रहे थे, क्योंकि तुम्हे डर था कि मै दुख से घबडा उठूंगी। और मुझे हँसने के मूड में देखकर तुम्हे कितनी प्रसन्नता हुई थी! चिन्ता करने की कोई बात नही, मकार अलेक्सेयेविच, जैसे चल रहा है, चलने दो। मै तुमसे प्रार्थना करती हूँ, विवेक से काम लो। सब कुछ ठीक हो जायेगा, तुम देख लेना! नही तो दूसरे लोगो के लिये आहे भरते भरते तुम खुद अपनी जिन्दगी स्वाहा कर दोगे। विदा, मेरे दोस्त। मेरे लिये इतनी चिन्ता न किया करो। तुमसे मेरी यही विनती है।

व० दो०

५ अगस्त

वारेन्का, मेरी नन्ही कपोती,

अच्छी बात है, मेरी देवागना, अच्छी बात! तुम कहती हो कि यदि कर्ज़ लेने मे मुझे सफलता नही मिली तो कोई बात नही, तब ठीक है, सचमुच कोई बात नही! मै तुम्हारी ओर से निश्चिन्त हूँ और प्रसन्न भी। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई है कि मुझसे, इस बूढे से, जुदा न होकर अब तुम यही रहोगी। सच्ची बात तो यह है कि तुम्हारे पत्र को पढकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई क्योकि तुमने मेरी भावनाओ की कद्र की है। मै कोई घमड से यह बात नही कह रहा हूँ बल्कि मैने इसे अनुभव किया है कि तुम मुझे बहुत प्यार करती हो और मेरे हृदय की अनुभूतियो की कद्र करती हो। लेकिन मेरे हृदय की चर्चा क्यो की जाय? मेरा हृदय केवल मेरा हृदय है, लेकिन तुमने राय दी है कि मुझे हृदय का इतना कमजोर होना अच्छा नही। तुम बिलकुल ठीक कहती हो, मेरी प्रिया। लेकिन फिर भी जूतो की बात कैसे भुलाई जाय, बिना जूतो के तो दफ्तर नही जाया जा सकता।

यही तो मुसीबत है! ऐसी ही चिन्ताएँ तो इन्सान को खा जाती हैं। मैं केवल अपनी ही गलती से अपने को नहीं सता रहा हूँ। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं जरा भी परवाह नहीं करूँगा। भयानक बर्फ में भी मैं केवल कमीज पहनकर नंगे पैर बाहर निकल सकता हूँ। मुझे इसकी कोई चिन्ता नहीं। मैं तो केवल एक मामूली आदमी हूँ, तुच्छ आदमी। लेकिन दुनिया क्या कहेगी? मुझे बिना कोट के घूमते हुए देख कर मेरे दुश्मन कैसी कैसी बातें कहेंगे! इसी लिये तो कोट और जूते पहनने के लिये इन्सान को बाध्य होना पड़ता है। इसलिये यह जाहिर है, वारेन्का, कि कोट और जूते मेरे सुनाम और प्रतिष्ठा की रक्षा के लिये आवश्यक है। फटे हुए जूतों में इज्जत की छीछालेदर हो जाती है। यह ध्रुव सत्य है, मेरी प्रिया। मैंने इसे अपने पर्याप्त अनुभव से जाना है। इसलिये तुम्हें भी इस बूढ़े की बातों का यकीन करना चाहिये, जिसे अच्छी तरह मालूम है कि यह दुनिया और इसमें रहनेवाले लोग कैसे हैं और तुम्हें बकवासियों और कलम घसीटनेवालों की बातें सुननी ही नहीं चाहिये।

लेकिन मैंने तुम्हें यह नहीं बताया कि आज क्या क्या हुआ। आज सुबह जिन मुसीबतो मे मेरा पाला पडा, उन्हे बहुत दिनो तक भुलाया नही जा सकता। बात ऐसी हुई : मै आज सुबह के धुंधलके मे ही घर से निकल पडा ताकि उसने घर पर ही मुलाकात हो जाय और दफ्तर पहुँचने मे देर भी न हो। बारिश हो रही थी और हर जगह पानी जमा हो गया था। मै अपने कोट मे सिमटा हुआ और सोचता हुआ चला जा रहा था "हे दयालु भगवान, मेरे गुनाहो को माफ कर दो और कम से कम मेरी यह विनती सुन लो।" गिरजाघर की बगल से गुजरते हुए मैंने क्रास का चिन्ह बनाया और भगवान से फिर क्षमा याचना करने लगा लेकिन यह भी नही भूला कि भगवान से सौदा करना ठीक नही। अत , मै विचारो में इतना मशगूल था कि मुझे अपने रास्ते की चीजो का भी ध्यान न रहा। सडक पर भीड नही थी और इक्के-दुक्के राहगीर मेरी ही तरह विचारो में डूबे हुए नजर आ रहे थे। आखिर वे भी तो असाधारण मौसम में बेवक्त बाहर निकल पडे थे। मेरा सामना फटेहाल मजदूरो से हो गया और उन्होने मुझे धक्के दिये। मै घबडा गया और बेचैन हो

उठा। मुझे पैसे की परवाह ही नही रही—सोचा, एक बार और प्रयास कर लूं और उसके बाद चुपचाप बैठ जाऊँगा! वोस्नेसेन्स्की पुल पर पहुँचते पहुँचते मेरे जूते का तल्ला फटफटाने लगा और चलना मुश्किल हो गया। तभी मेरी मुलाकात येर्मोलायेव से हो गई जो छोटा किरानी भी नही, बल्कि मामूली नकलनवीस है। मुझे देखते ही वह रुक गया, मेरी ओर उसने आँखें गड़ा दी मानो वह वोदका पीने के लिये मुझसे पैसे माँग रहा हो। पर भाई मेरे, कहाँ मैं और कहाँ वोदका! अपने को आगे खीचने में असमर्थ पाकर मैं दम लेने के लिये थोडा रुक गया और फिर चल पडा। मैंने अपने विचारो को उलझाने के लिये इधर-उधर कुछ खोजने की कोशिश की लेकिन कोई भी ऐसा आधार नही मिला जिससे मुझे सहारा मिलता या मेरे विचार उलझ जाते बल्कि इसके विपरीत, मैं पानी के एक गड्ढे में गिर पड़ा और इतना गन्दा-सा दीखने लगा कि मुझे शर्म से रोना आ गया। वहाँ से कुछ दूर पर मुझे एक पीले रग का काठ का मकान नजर आया जिसकी तिकोनी बरसाती दूसरी मजिल का काम दे रही थी। "यही मार्कोव का मकान

होना चाहिये जैसा कि येमेल्यान इवानोविच ने मुझे बताया था," मैंने सोचा (वही मार्कोव जो सूद पर कर्ज देता है)। मैं घबड़ा गया था, इसलिये चौकीदार से पूछकर मैंने निश्चय करना चाहा कि वह मार्कोव का मकान था या नही। "यह किसका मकान है, मेरे दोस्त?" मैंने पूछा। उत्तर बडा उपेक्षापूर्ण था, बिलकुल चौकीदार के ही उत्तर जैसा "यह मार्कोव का मकान है, यदि तुम जानना चाहते हो।" चौकीदार का सहृदय न होना मामूली बात है। मालूम नही मुझमे कडवाहट क्यो भर गई! तुम्हे मालूम है कि एक घटना का सम्बन्ध दूसरी घटना से होता है और मामूली घटना भी कभी कभी बहुत परेशान कर देती है। मैं मकान की बगल से तीन बार गुज़रा और हर बार, भीतर घुसते हुए मेरा डर बढता ही गया।

"वह मुझे कर्ज नही देगा," मैंने सोचा, "कभी नही, क्योकि मै बिलकुल अजनबी हूँ, देखने-सुनने मे भी ऐसा नही कि किसी का विश्वास जम जाय और फिर बात भी बहुत नाजुक—लेकिन चलो, किस्मत आज़माने मे क्या हर्ज! आख़िर वह मुझे खा तो नही

जायेगा।" अत मै धीरे से फाटक खोलकर भीतर दाखिल हो गया, लेकिन वहाँ एक दूसरी ही मुसीबत खडी थी—एक छोटा सा कुत्ता सर उठाकर जोर जोर से भूँकता हुआ इधर-उधर कूद रहा था। ऐसी छोटी छोटी मुसीबतें भी इन्सान को पागल कर देने तथा उसे अपने निर्णय से गिरा देने के लिये काफी है। मै मुर्दे की तरह ही मकान मे घुसा लेकिन वहाँ एक और मुसीबत इतजार कर रही थी। चौखट पर मै एक बूढी औरत से टकरा गया—धुँधलके में मै उसे देख नही पाया था। वह दूध के घडो से उलझी हुई थी। घडे भी लुढक पडे। वह कितने जोर से मुझपर चीखी और चिल्लाई। "यहाँ क्या लेने आये हो?" और इस प्रकार उसका चिल्लाना-चीखना जारी रहा। मै यह इसलिये लिख रहा हूँ वारेन्का कि ऐसी परिस्थितियो मे मेरे साथ ऐसी घटनाओ का होना कोई नयी बात नही है। बराबर ऐसा हुआ करता है। मेरी किस्मत ही ऐसी है। मैं अपनी गलतियो से मुसीबतो को न्योता देता हूँ। इस शोर-गुल को सुनकर फिनिश मकान-मालकिन, भयकरता की साक्षात मूर्ति, आ खडी हुई। मैने उससे पूछा कि क्या मार्कोव यही रहते

है तो उसने नकारात्मक उत्तर दिया। लेकिन मेरी ओर ध्यान से देखने के बाद उसका दिमाग बदल गया और उसने पूछा कि मुझे मार्कोव से क्या काम है? मैंने कहा कि मुझे येमेल्यान इवानोविच ने भेजा है और उसे सब कुछ कह सुनाया। उस बूढी औरत ने अपनी बेटी को बुलाया जो काफी उम्र की थी और नगे पैर। "अपने बाप को बुलाओ," उसने कहा, "वह किरायेदारो के साथ ऊपर बैठे हुए है।" और फिर मेरी ओर मुखातिब होकर कहा "अन्दर आइये!" कमरा काफी आरामदेह था, दीवालो पर तस्वीरे टँगी थी, विशेषत सेनापतियो की। वहाँ एक सोफा और एक गोल मेज थी और खिड़कियो पर गुलमेहदी के गमले सजे हुए थे। शायद मेरा चला जाना ही अच्छा होगा, मैंने सोचा। मैं चौखट तक वापस चला आया, मेरी प्रिया। मैंने कल फिर आने का निश्चय किया, सोचा मौसम बेहतर रहेगा, दूध का घड़ा नही लुढकेगा और दीवाल पर टँगे सेनापतियो की आँखो से गुस्से का भाव कम झलकेगा। मैं दरवाजे से निकलने की तैयारी ही कर रहा था कि वह भीतर दाखिल हुआ। एक ठिगना बूढा आदमी, जिसकी आँखें चचल

थी और जिसने मैला-कुचैला ड्रेसिंग गाउन पहन रखा था। उसने पूछा कि मैं उससे क्या चाहता हूँ। मैंने येमेल्यान इवानोविच का जिक्र करते हुए चालीस रूबल कर्ज देने की प्रार्थना की और बस इतना ही—लेकिन मुझे कुछ अधिक कहने की जरूरत नही पडी। उसकी आँखों से ही मुझे पता चल गया कि मुझे कामयाबी नही मिलेगी। "तुम्हे रकम की तुरत जरूरत है?" उसने कहा, "लेकिन मेरे पास अभी नही है। और तुम जमानत मे क्या दे सकते हो?" मैंने उसे समझाया कि मेरे पास जमानत देने के लिये कोई चीज नहीं है लेकिन येमेल्यान इवानोविच के बारे में मैंने फिर चर्चा की और उसे विश्वास दिलाया कि मुझे कर्ज की बडी आवश्यकता है। "येमेल्यान इवानोविच को इससे क्या लेना-देना है?" उसने कहा, "मेरे पास रकम नही है।" मैंने सोचा सचमुच नही होगा। मुझे यह पहले से ही मालूम था। आह वारेन्का, यदि पृथ्वी फट जाती और मैं उसमें समा पाता। मेरे पैर पत्थर की तरह जम गये और मेरी हड्डियो में एक सिहरन सी दौड गई। मैं उसकी ओर देख रहा था और वह मेरी ओर। उसकी आँखें कह रही थी "बेहतर होगा

मंदिर में [illegible] रहा और यह विश्वास
दिलाता रहा कि [illegible] कि समय
से पहले ही, किसी भी दर पर सूद के साथ [illegible] अदा कर
दूँगा। क्या वह मुझे थोड़ा भी [illegible] नहीं दे सकता? उस
समय मैं तुम्हारे बारे में, उस आधे स्वप्न के बारे में,
जो तुमने मुझे दिया था, हम लोगों की सारी मुसीबतों
और आवश्यकताओं के बारे में सोच रहा था, मेरी प्रिया।
"नहीं," उसने फिर कहा, "सूद की बात मत करो,
तुम्हें जमानत के रूप में कुछ जरूर देना चाहिये। मेरे पास
रकम नहीं है, भगवान की कसम, मुझे अफसोस है।" भगवान
कसम! व्यर्थ में भगवान की कसम खा रहा था,
लुटेरा!

मुझे सचमुच कुछ याद नहीं कि मैं वहां से कब चल पड़ा और कैसे विवोर्गस्काया स्नोरांना और वोस्नेसेन्स्की पुल पार किया। मैं थक गया था और मेरी हड्डियों में कँपकँपी समा गई थी। मैं दफ्तर देर से पहुँचा, दस बजे। मैं अपने कपड़ों को ब्रश से झाड़ना चाहता था लेकिन चौकीदार स्नेगिरियोव ने मुझे ऐसा करने की इजाजत नहीं दी। उसे डर था कि ब्रश गन्दा हो जायेगा, ब्रश आखिर दफ्तर ही का तो था। और अब देखो मेरी प्रिया कि वे मुझपर अपने पैर पोंछने को तैयार हैं। यही बात मेरी जान खाये जा रही है वारेन्का, पैसे की कमी नहीं, बल्कि यह मुसीबत, यह हँसी, यह मजाक और अपमान। यदि सयोग से महामहिम को यह सब मालूम हो जाय तो क्या होगा? मेरे बुरे दिन आ गये हैं! मैंने तुम्हारी सारी चिट्ठियों को फिर से पढ़ा है, मेरी प्रिया। उनमें कितना गम भरा है! विदा, प्रिया। भगवान तुम्हें सुखी रखें!

म० देवुश्किन।

गिर पड़ा था, जोर से पढ़कर लोगों को सुनाया। उन्होंने हम लोगों का कैसा मजाक उड़ाया और कैसी कैसी बातें कहीं वे बदमाश अपनी हंसी से शोरगुल मचा रहे थे। मैंने कमरे में जाकर रतज्यायेव को दगाबाज और फरेबी दोस्त कहकर उसकी निन्दा की। लेकिन वह उलटे मुझपर बरस पड़ा और कहने लगा कि मैं खुद दगाबाज हूँ। उसने मुझे रहस्यमय व्यक्ति कहा और साथ ही साथ उसने मेरा नाम 'लवलेस' रख दिया। और अब हर कोई मुझे 'लवलेस' कहने लगा है। यह बहुत भयानक बात है लेकिन वे हमारे और तुम्हारे बारे में सभी बातें जानते हैं! यहाँ तक कि फाल्दोनी भी बदल गया है। आज जब उससे मैंने बाजार जाने के लिये कहा तो उसने इन्कार कर दिया और कहा कि उसे फुर्सत नहीं है। "लेकिन यह काम तो तुम्हारा है," मैंने कहा। "नहीं, यह मेरा काम नहीं है," उसने जवाब दिया, "क्योंकि तुमने किराया चुकता नहीं किया है।" एक गँवार देहाती मेरा अपमान करे, यह मैं बर्दाश्त नहीं कर सका और उसे मैंने बेवकूफ कह डाला। तब उसने क्या जवाब दिया, तुम्हें मालूम है? उसने कहा "मुझे बेवकूफ कहनेवाला

खुद वेवकूफ है।" मैंने सोचा कि वह होश मे नही है. "तुम नशे में हो, वेवकूफ और गँवार देहाती।" लेकिन उसने जवाव दिया· "ठीक है, लेकिन तुम्हारे पैसे पर नही। तुम्हारे पास तो पीने-पिलाने के लिये एक कौडी भी नही है। क्या तुमने किसी स्त्री के सामने दस कोपेक के लिये हाथ नही फैलाया था?" और अन्त मे उसने कहा "भले आदमी का अजीव नमूना है आप जनाव!" यही तो वात हे, वारेन्का! मुझे अव जिन्दा रहते हुए लाज लग रही है! मेरे साथ लोग, जाति से वहिष्कृत व्यक्ति की तरह या विना पासपोर्ट के नागरिक की तरह सलूक करते हैं। कैसी वदकिस्मती है! मेरा सर्वनाश हो चुका है, मैं कही का नही रह गया हूँ।

म० दे०

१३ अगस्त

विपत्तियो पर विपत्तियाँ, मेरे आदरणीय मकार अलेक्सेयेविच! मेरी समझ में नही आता मैं क्या करूँ। तुम्हारा क्या होनेवाला है? मै अव तुम्हारे किस काम

आ सकती हूँ? मेरा हाथ आज इस्तरी से जख्मी हो गया है। मेरी उंगलियों से वह सरक गई और मेरा हाथ जल गया। अब मैं क्या करूँ? मैं काम नहीं कर सकती और फेदोरा आज तीन दिन से बीमार है। मैं बुरी तरह चिन्तित हूँ। मैं तुम्हारे पास तीस कोपेक के चाँदी के सिक्के भेज रही हूँ। हम लोगों के पास बस इतनी ही रकम है। भगवान जानता है, मैं तुम्हारी और भी मदद करना चाहती हूँ। किसी को रुलाने के लिये बस इतना ही काफी है। विदा, मेरे दोस्त! मुझे बड़ी राहत मिलेगी यदि आज तुम मुझसे मिलने के लिये आओ।

व० दो०

१४ अगस्त

मकार अलेक्सेयेविच!

तुम्हें क्या हो गया है? तुम्हें भगवान का भी डर नहीं रहा? तुम मुझे पागल बना दोगे। तुम्हें शर्म आनी चाहिये, तुम अपने को बर्बाद करने पर तुले हुए हो।

ज़रा अपने सम्मान का भी ख्याल करो। तुम एक सम्मानित और इज्ज़तदार आदमी हो। तुम ऐसे क्यो हो गये? यदि तुम्हारे दफ्तर के लोग यह सब जान जायँ तब क्या होगा? तुम शर्म से मर जाओगे! ज़रा अपने सफेद वालो का भी ख्याल रखो, भगवान से डरो! फेदोरा कहती है कि वह अब तुम्हे कभी मदद नही करेगी; और मै भी नही। क्या तुमने अपने आचरण से मुझे दुःख नही पहुँचाया है? मुझ तुम्हारे कारण कितना कष्ट हुआ है! मै सीढी पर बाहर निकलने की हिम्मत नही कर सकती। सब मेरी ओर देखने लगते है और तरह तरह की बाते कहने लगते हैं। वे कहते है कि मैने एक पियक्कड़ को अपना दिल दे रखा है। और जब वे तुम्हे उठाकर घर ले आते है तो मै लोगो को यह कहते हुए सुनती हूँ "लोग आज फिर उस किरानी को उठा लाये है।" और मै ग्लानि से रो पडती हूँ। मै कसम खाकर कहती हूँ कि मै यहाँ से चली जाऊँगी। मै दाई और धोबिन का काम करना पसन्द करूँगी लेकिन मैं अब और अधिक यहाँ नही ठहर सकती। मुझसे आकर मिलने के लिये मैंने तुमसे आग्रह किया लेकिन तुम नही आये।

मेरे आंसू, मेरी मिन्नतों का तुम्हारे लिये कोई महत्त्व नहीं, मकार अलेक्सेयेविच! मुझे ताज्जुब है कि तुम कैसे कहां से मिल गये? जरा अपना ख्याल रखो! तुम अपने को बर्बाद कर रहे हो! और किस लिये? मैंने सुना है कि तुम्हारी मकान-मालकिन ने तुम्हें घर में नही घुसने दिया और तुम्हे सारी रात बरामदे में ही काटनी पड़ी। कितना बड़ा अपमान है! यह जान कर मुझे कैसा लगा! हमसे मिलने के लिये कृपया आओ। तुम्हें यहां प्रसन्नता होगी। हम लोग साथ साथ पढ़ेंगे और बीते दिनों को याद कर खुश होंगे। फेदोरा हम लोगों को तीर्थस्थानों की अपनी यात्रा के बारे में सुनायेगी। भगवान की शपथ, अपने आप को और मुझको बर्बाद न करो। मै केवल तुम्हारे लिये जिन्दा हूँ, यहाँ ठहरी हुई हूँ। सम्मानित व्यक्ति की तरह रहो, मुसीबत मे अटल रहो और याद रखो कि गरीब होना कोई पाप नही। तुम्हे हताश होने की जरूरत ही क्या है? भगवान दयालु हैं और हमारी मुसीबते शीघ्र ही टल जायेंगी। लेकिन तुम्हे सहनशीलता से काम लेना चाहिये। मै तुम्हारे तम्बाकू के लिये या

इस समय जरूरी खर्च के लिये बीस रूबल भेज रही हूँ, लेकिन इसे बुरे कामों पर खर्च नहीं करना। हम लोगों से मिलने के लिये अवश्य आना। शायद तुम्हें आने में लाज लग रही है लेकिन यह ठीक नहीं। अपने व्यर्थ की लाज छोड़ दो और हृदय से पश्चात्ताप करो। भगवान में आस्था रखो। वही हर काम में तुम्हारी मदद करेंगे।

व० दो०

१९ अगस्त

वरवारा अलेक्सेयेव्ना, मेरी मधुर प्रियतमा!

मैं सचमुच बहुत शर्मिन्दा हूँ, शर्म से अपना चेहरा तक छिपा लेने को तैयार हूँ। लेकिन, मेरी प्रेयसी, इसमें बुराई क्या है? क्या समय समय पर हृदय को खुश कर लेना उचित नहीं? मैं भूल जाता हूँ कि मेरे जूतों के तल्ले ठीक नहीं क्योंकि ठीक से सोचो तो पता चलेगा कि तल्ले आखिर मामूली, भद्दे और गंदे ही रहेंगे—चाहे उनकी कितनी भी हिफाज़त करो। और जूते भी तो

कम वाहियात नही। यदि ग्रीस के बुद्धिमान लोग बिना जूतो के घूम-फिर सकते थे तो हम लोग ऐसी वाहियात चीज के लिये क्यों दिमाग खराब करें? तब लोग मेरी खिल्ली क्यों उडाते है और मेरा अपमान क्यों करते है? क्या तुम्हे कोई अच्छी बात लिखने को नही सूझती, मेरी प्रिया? और फेदोरा को मेरी ओर से कह देना कि वह गंवार, मूर्ख और दुष्ट है। जहाँ तक मेरे सफेद बालों का सवाल है, तुम्हे गलतफहमी हो गई है, मेरी प्रियतमा! जितना तुम सोचती हो, उतना बूढा मै नही हूँ। येमेल्या तुम्हे नमस्ते कह रहा है। तुम लिखती हो कि तुम्हे मेरे कारण चोट पहुँची और तुम्हे रोना पडा। और मै लिखता हूँ कि मुझे तुम्हारे कारण चोट पहुँची और मुझे भी रोना पडा। अन्त में, मेरी यही कामना है कि तुम सदा स्वस्थ और प्रसन्न बनी रहो। जहाँ तक मेरा सवाल है, मै बिलकुल ठीक हूँ, मेरी नन्ही अप्सरा।

तुम्हारा मित्र,

मकार देवुश्किन।

२१ अगस्त

मेरी परम प्रिया और आदरणीया वरवारा अलेक्सेयेवना,

मैं अपने को दोषी अनुभव कर रहा हूँ, मेरी प्रिया, लेकिन इससे लाभ ही क्या है क्योंकि मैं अपने इन कुकर्मों के पहले भी अपने को कम दोषी नहीं समझता था। अपने दोषों को जानते हुए भी मैं गलती कर बैठा। मेरी प्रिया, मेरे हृदय में मलिनता नहीं है और न मेरा हृदय कठोर ही है। तुम्हें चोट पहुँचाने के लिये एक खौफनाक वाघ के हृदय की जरूरत है लेकिन मेरा हृदय तो एक मेमने का हृदय है और तुम्हें अच्छी तरह मालूम है कि खौफनाक वनने की मेरी प्रवृत्ति नहीं। परिणामस्वरूप, मेरी प्रिया, अकेले मेरा ही दोष नहीं है और न दोष है मेरे दिल और दिमाग का। तव और किसका दोष है, यह मुझे मालूम नहीं. वह विलकुल अस्पष्ट है, मेरी प्रिया। तुमने मेरे पास तीस कोपेक के चाँदी के सिक्के और वाद में फिर वीस कोपेक भेजे। मैं दिल में दर्द लिये एक गरीव और अनाथ की उस पूँजी को देखता रहा। तुमने अपना

पाने को नसीब नहीं हुआ था। अब मैं कुछ ऐसी चीज गिरवी रखना चाहता था जिसे बिलकुल भी गिरवी नहीं रखा जा सकता। सचमुच, वारेंका उसी हालत पर मुझे कितना तरस आया। मैं हमदर्दी से भर उठा। और इस प्रकार मैं पाप के गड्ढे में गिर पड़ा। हम दोनों मिलकर कितना रोये और तुम्हारी कितनी याद आई! येमेल्या नेक आदमी है, बहुत कोमल और उदार हृदय का। यह सब कुछ मैं खुद महसूस करता हूँ और यही वजह है कि ये बातें मेरे साथ होती हैं—क्योंकि मैं महसूस करता हूँ। मुझे मालूम है कि मैं तुम्हारा कितना कृतज्ञ हूँ, मेरी प्रिया। जब मैं तुम्हें जानने लगा तो अपने आपको भी अच्छी तरह जानने लगा और तुम्हें प्यार करने लगा और उसके पहले, मेरी देवांगना, मैं संसार में एकाकी था और मेरा जीवन कोई जीवन नहीं था। उन दिनों दुश्मन कहा करते थे कि मेरे शरीर की बनावट ही बेढंगी है। वे मुझसे इतनी घृणा करते थे कि अन्त में मुझे अपने आप से भी घृणा होने लगी। वे मुझे मूर्ख समझते थे और बाद में मैं खुद भी अपने आपको वैसा समझने लगा। लेकिन जब तुम मेरी आँखों के सामने एक दिव्य-

ज्योति-सी प्रगट हुई तो मेरी अंधेरी दुनिया में रोशनी जगमगा उठी। मेरे हृदय और मस्तिष्क आलोकित हो उठे, शान्ति लौट आई और मैंने महसूस किया कि मेरा भी कोई अस्तित्व है। मुझमें चमक-दमक तो नहीं है और शायद नफासत और रौनक भी नही, लेकिन मैं इन्सान हूँ और मेरे हृदय और मस्तिष्क इन्सान के हैं। लेकिन अब फिर महसूस करने लगा हूँ कि मैं उपेक्षित हूँ, ठुकराया हुआ हूँ, मेरी कोई इज्जत नही है और बदकिस्मती के भार से कराह रहा हूँ। मेरी हिम्मत जवाब दे चुकी है। मैंने तुम्हे सब कुछ बता दिया है और अपनी आँखो में आँसू लेकर मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि इन बातो का फिर कभी जिक्र न करना क्योकि मैं बहुत उदास हूँ, थका-थका सा हूँ और मेरा दिल टूट चुका है। मेरा सारा सम्मान तुम पर न्योछावर है, मेरी प्रियतमा।

तुम्हारा चिरतन मित्र

मकार देवुश्किन।

३ सितम्बर

मैं अपना पिछला पत्र पूरा नही कर सकी थी, मकार अलेक्सेयेविच। मेरे लिये लिखना बहुत कठिन था। कभी ऐसे क्षण आते है जब मै अकेली रहना और उदासी की हद से गुजर जाना पसद करती हूँ; और ऐसे क्षण बहुत अधिक आते है। स्मृतियो के साथ कुछ ऐसी बाते अवश्य है जिनका स्पष्टीकरण मैं नही कर सकती। वे मुझे ऐसी जगह पहुँचा देती है कि मै घटो अपने आपको भी भूल बैठती हूँ। अब किसी दुखद या सुखद स्मृति की छाप उतनी गहरी नही लेकिन कुछ ऐसी ही पुरातन स्मृतियाँ, खासकर बचपन के सुनहरे दिनो की स्मृतियाँ, मुझे झकझोर देती है। और ऐसे क्षणो के बाद मुझमे घनी उदासी समा जाती है। मै कमजोर हो जाती हूँ। मेरी स्वप्निल तन्द्रा मुझे शिथिल कर देती है और जैसा कि प्रगट है, मेरा स्वास्थ्य दिनोदिन चौपट होता जा रहा है।

लेकिन आज की सुबह मे बहुत मस्ती और ताज़गी थी और ऐसी सुबह पतझड में कहाँ होती है! मैं ताकत

झाडियो की सरसराहट और मछलियो के उछलने से पानी की छपछपाहट साफ साफ सुनाई पड़ती थी। तब धीरे धीरे धुंध छाने लगती और दूर की चीजे अस्पष्ट होते होते आँखो से ओझल हो जाती। लेकिन समीप की सभी चीजें स्पष्ट दिखाई पडती नौकाएँ, तट, टीले, या पानी में तैरता पीपा या सरपत की झाडियो में अटका हुआ कोई तिनका। एक भटका हुआ पक्षी ठडे पानी की गहराई में डुबकी लगाता हुआ दूर जाकर निकलता नजर आता। मै वहाँ खड़े खडे बहुत देर तक यह चमत्कार देखा करती और ताज्जुब किया करती। तब मैं एक बालिका थी।

हाँ, मुझे पतझड, खासकर विदा लेता हुआ पतझड, बहुत अच्छा लगता था। जब कटनी खत्म हो गई रहती और गाँव के लोग एक झोपडी में इकट्ठे हो कर बातचीत और सगीत मे मगन हो जाते और जाड़े की प्रतीक्षा करते रहते, तब नीचे लटकते आसमान तले की सभी चीजें उदास सी लगती और नगे जगल के किनारे पीले पत्तो के ढेर धीरे धीरे काले और नीले होते दिखाई पडते। खासकर शाम के वक्त, जब धुंध छा जाती तो

अँधेरे में नंगे पेड, विशाल दैत्य से दिखाई पडते। ऐसा बहुत बार होता कि मैं घर से बाहर बहुत देर तक अकेली रह जाती और तब अचानक अनुभव होता कि सन्नाटे में मैं अकेली रह गई हूँ। तब भय और सिहरन लिये जल्दी जल्दी घर लौटती। पत्ते की तरह कांपती हुई मैं यही सोचा करती कि अब पेडों की नंगी शाखाओं के बीच से कोई भयानक चेहरा मेरी ओर घूरता दिखाई पडेगा। तभी अचानक तेज हवा जंगल में टकराने लगती और शाखाओं पर लटकते इक्के-दुक्के पत्तों को उखाडकर दूर उडा ले जाती। तब पक्षियों का झुंड कोलाहल मचाता हुआ उडने लगता और आसमान धुंधला हो जाता। मैं एक अज्ञात भय से सिहर उठती और लगता जैसे कानों मे फुसफुसा कर कोई कह रहा हो "भागो, मेरी बच्ची, भागो यहाँ से! शीघ्र ही यह स्थान भयानक हो उठेगा, भागो!" और मैं इतने जोर से दौड पडती कि मेरी साँस उखड जाती। घर पहुँचने पर मुझे सब कुछ ठीक ठीक और प्यारा प्यारा सा लगता। हम सभी बच्चे बैठकर फलियो या पोस्ते के छिलके उतारने लगते। उधर गीली लकडी चूल्हे में चटचट करने लगती और माँ तथा

बूढी दाई उल्याना हमें पुराने जमाने के जादूगरों और डायनो के किस्से सुनाने लगती। हम सभी बच्चे एक दूसरे से सट कर बैठ जाते लेकिन किस्सा सुनते सुनते मुसकराने की भी कोशिश करते। तभी अचानक खटके की आवाज सुनाई पडती। क्या किसी ने दरवाजा खटखटाया होता? नही, वह बूढी फ्रोलोवना के चरखे की आवाज होती और तब हँसी का कैसा फव्वारा छूट पडता! लेकिन रात भर हम लोगो को डर और सपनो के कारण नीद नही आती। मै आधी रात में डर कर हिलने-डुलने का भी नाम नही लेती और सारी रात पलको में ही काट डालती। फिर भी सुबह मै फूल की तरह खिली और प्रसन्न नजर आती। मै खिडकी से झाँक कर बाहर देखती तो धरती ठड से सिकुडी हुई नजर आती और पतझड का कुहासा नगी डालियो से ऊपर उठता हुआ दिखाई पडता। तालाब के ऊपर बरफ की महीन परत बिछ गई रहती जो कुहासे में भी चमकती नजर आती और उसके ऊपर चिडियो का झुड शोर-गुल करते उडता दिखाई पडता। लेकिन सूरज की किरणो से गरमी पाकर झील के ऊपर छाई बरफ की परत पिघल

जाती और एक सुनहरा, रंगीला सपना डगमगाने लगता। उधर चूल्हे में लकड़ी की चटचट का शोर अभी भी जारी रहता और इधर हम लोग समावार को घेर कर बैठे रहते और हमारा काला कुत्ता शोलान रात की ठंड से अभी भी कांपता रहता, खिड़की की ओर देखते हुए आशा से पूंछ हिलाता रहता। किसी किसान की गाड़ी जलावन लाने के लिये जंगल की ओर डगमगाती नजर आती। ओह, हम तब कितने सन्तुष्ट और प्रसन्न थे!

इन स्मृतियों से मुझे रोना आ जाता है। अतीत कितना सुखद और मोहक था और वर्तमान कितना दुःखद और भयावह। हे भगवान, इसका अन्त कब होगा! जानते हो, मुझे ऐसा लगने लगा है कि मैं इस पतझड में जरूर मर जाऊँगी। मुझे इसका पूरा विश्वास हो चला है। मैं बहुत बीमार हूँ। मैं इसके बारे में बहुत सोचती हूँ और यहाँ मरना नहीं चाहती हूँ। यहाँ की धरती में दफन होना नहीं चाहती हूँ। शायद इस बार मैं फिर बिछावन से जा

लगूँगी, जैसा कि पिछले वक्त मे हुआ था। तुम्हे मालूम है कि मैं पूरी तरह स्वस्थ नही हुई थी। अभी भी मैं बीमार-बीमार-सी हूँ। फेदोरा दिन भर गायब रहती है और मैं अकेली रह जाती हूँ। कभी ऐसे भी क्षण आते है कि अकेले मे मुझे बहुत डर लगने लगता है। ऐसा भ्रम होने लगता है कि कमरे मे कोई छिपा बैठा है और मुझसे बाते कर रहा है—ऐसा खासकर मेरे सपने टूटने के बाद होता है। इसी लिये मैंने इतना लम्बा पत्र लिख डाला है। लिखने में मशगूल हो जाने से भय जाता रहता है। विदा! अब मैं पत्र लिखना बंद करूँगी क्योंकि अब और अधिक कागज नही है और समय भी नही। पोशाक और हैट के लिये जो मुझे रकम मिली थी उसमें से केवल एक रूबल बच रहा है। मुझे खुशी है कि तुमने मकान-मालकिन को दो रूबल दे दिये। इससे वह कुछ दिनो तक खामोश तो बनी रहेगी।

अपने कपडे ठीक से रखने की कोशिश करो। विदा, मेरे दोस्त। मैं बहुत दुर्बल और थकी-थकी सी हूँ।

जरा भी मेहनत से मैं बेदम हो जाती हूँ। मैं काम कैसे कर सकूँगी—यदि काम मिल भी जाय तो? यही सोच-कर मेरी सारी आशाएँ घुलती हुई सी जान पड़ती हैं।

व० दो०

५ सितम्बर

प्रिय वारेन्का,

आज मेरे साथ बहुत सी बातें हुई हैं। सबसे पहले तो मुझे सिरदर्द हुआ। इसे दूर करने के लिये मैं फोनतान्का के किनारे टहलने चला गया। शाम में ठण्डक थी और अंधेरा हो गया था—तुम्हे मालूम है कि आजकल पाँच बजते बजते अँधेरा छा जाता है। बारिश नही हो रही थी लेकिन कुहासा बारिश से भी बदतर था। आसमान मे घनघोर घटाएँ छाई थी। लोग तटबध से होकर जल्दी-जल्दी आ-जा रहे थे और विचित्र बात यह थी कि सभी के चेहरो पर गम और निराशा की छाप स्पष्ट झलक रही थी। वहाँ नशे मे धुत्त किसान थे, जिनकी नाके भोथरी और सर नगे थे, ऊँचे जूते पहनी फिनिश महिलाएँ

थी और थे मजदूर, गाडीवान, हम लोगों की तरह किरानी, लड़के, धारीदार पाजामा पहने एक दुबला-पतला गिरजी, जिसका चेहरा कालिख से काला हो गया था और जिसने हाथ में एक बड़ा सा ताला ले रखा था, तथा बर्खास्त कर दिया गया एक सैनिक, जो असाधारण रूप से लम्बा था। ऐसे लोगों के बाहर निकलने का मतलब था कि दिन का समय था। खुद नहर का नजारा भी देखने लायक था। उसमें बजरों का कैसा जमघट लगा था! पुल पर बैठ-कर औरतें, मीठी रोटियाँ और सडे हुए फल बेच रही थीं, पानी से तर-बतर, मैली-कुचैली औरतों की भी काफी भीड-भाड थी। फोनताल्का भी क्या कोई घूमने लायक जगह है? पैरों के नीचे भीगे हुए नोकीले पत्थर और उधर धुएँ से काले पडे ऊँचे मकान। चारों तरफ कुहासा ही कुहासा और सर के ऊपर भी कुहासा। कितनी उदास और अँधेरी साँझ थी वह!

जब मैं गोरोखोवाया पर मुडा तो काफी अँधेरा हो गया था और लोग गैस-बत्ती जलाने लगे थे। मैं उस

सडक की ओर बहुत दिनों से नहीं गया था और वह बहुत खूबसूरत लग रही थी। उसके दोनों किनारे सुन्दर सुन्दर दूकानें थी—छोटी, बडी, जगमगाती और विविध वस्तुओं, फूलों और रेशम के फीते लगे हैटों से सुसज्जित। ऐसा लगता था जैसे उन्हे केवल सुन्दरता के ख्याल से सजा कर रखा गया था। यह विश्वास करना पडता था कि ऐसे भी लोग है जो ऐसी वस्तुएँ अपनी पत्नियों के लिये खरीदते होगे, यहाँ अमीरो का वास है। बहुत से जर्मन व्यापारी यहाँ रहते है और वे जरूर ही काफी अमीर होगे। यहाँ गाडियो की भरमार है, इन सब का बोझ यह सडक कैसे सँभालती होगी? और गाड़ियां भी कैसी। भडकीली, चमकती हुई खिडकियां, लटकते हुए रेशम और मखमल के परदे, चँवर और तलवार से सुसज्जित अंगरक्षक। बगल से गुजरनेवाली हर गाडी के भीतर मै झाँककर यह पता लगाने का प्रयास करता था कि उसके भीतर कोई महारानी या राजकुमारी बैठी है या नही। यह जरूर दिन का वह समय रहा होगा जब लोग बाल-

वारेन्का? मेरी वारेन्का! मेरी नन्हीं अप्सरा, औरों से तुम किस बात में कम हो? तुम कितनी बुद्धिमती, सुन्दर और उदार हो। तब तुम्हारा जीवन इतना दूभर क्यों है? एक भला आदमी क्या उपेक्षित और दुखी रहे जब कि दूसरे के पास सुख और हर्ष बिना बुलाये पहुँच जायँ? मैं जानता हूँ, मेरी प्रिया, कि ऐसी भावुकता का कोई महत्त्व नहीं। लेकिन यह कहाँ का न्याय है कि किसी के पैदा होने के पहले ही उसके भाग्य का सितारा उसकी प्रतीक्षा करते हुए जगमगाता रहे और किसी के जन्मते ही उसका भाग्य उससे रूठ जाय क्योंकि वह अनाथ और

यतीम पैदा हुआ है। लोककथाओ में ऐसा अक्सर होता है कि मूर्ख इवानुश्का के सर पर भाग्य और सुख का सेहरा बाँधा जाता है। वह बाप-दादा की कमाई खाने-पीने पर लुटाता है और दूसरे गये-गुजरे लोग उसकी ओर देखते हुए अपने होठ भर चाट सकते हैं—बस इतनी ही उनकी सार्थकता है और उनके अस्तित्व का उपयोग है। ऐसा सोचना ही बहुत बडा पाप है लेकिन कुछ पाप ऐसे है जो अनजाने ही मन में पैठ जाते है। तुम उनमे से किसी गाड़ी में किसी इज्जतदार सेनापति के साथ जो तुम्हारी मुस्कराहट के लिये लालायित हो, क्यो नही बैठ सकती? उस वक्त तुम सोने और चाँदी से लदी नजर आओगी, यह फटे-पुराने सूती फ्रॉक पहने नही। और तब क्या तुम इतनी ही दुर्बल और बीमार नजर आओगी जितनी कि अभी नज़र आती हो? नही, ऐसा कुछ नही होगा। तुम एक सजी-सजाई गुडिया-सी लगोगी, खूबसूरत और प्यारी प्यारी। तुम्हारी गाडी की चमकती खिडकी से अन्दर झाँककर जब मैं तुम्हे खुश और सुखी देखूंगा तो मुझे कितनी हार्दिक प्रसन्नता

होगी, मेरी नन्ही चिडिया! लेकिन जीवन की वास्तविकता क्या है? दुख, केवल दुख ही तुम्हारे पल्ले पडा है।

दुर्जनो ने तुम्हारे जीवन का सर्वनाश कर डाला है। और इतना ही नही, एक दुश्चरित्र व्यक्ति भी तुम्हारा अपमान कर सकता है। केवल इसलिये कि वह अच्छे अच्छे कपडे पहनता है, सोने के फ़्रेम लगे चश्मे के भीतर से तुम्हारी ओर घूरता है, उसे तुम्हारा अपमान करने की छूट है? और उसकी गुस्ताखियो की ओर ध्यान देने की तुम्हे जरूरत नही? लेकिन क्यो? इसलिये कि तुम अनाथ हो और तुम्हारी रक्षा करने के लिये शक्तिशाली मित्र नही। कैसा आदमी है वह जो एक असहाय लडकी को चोट पहुँचाता है? वह आदमी क्या है, कूडा-कर्कट से भी गया-गुज़रा है! केवल कहने के लिये आदमी है! मुझे इसका पूर्ण विश्वास है। उससे तो अच्छा वह बाजा बजानेवाला व्यक्ति है जिससे मेरी मुलाकात गोरोख़ोवाया सड़क पर हुई थी। इससे क्या हुआ यदि वह अपना सारा दिन सडक पर एक फाज़िल

कोपेक की आशा में बर्बाद कर डालता है? वह खुद अपना मालिक है और खुद अपनी रोटी कमा लेता है। वह भिखमगा नही है बल्कि लोगो के आनद के लिये तमाशा करता है लोगो! आनद करो, खुश हो, मै तुम्हारी खुशी के लिये बाजा बजाता हूँ! शायद वह एक तरह का भिखमगा ही है लेकिन सम्मानित भिखमगा। भले ही भूख और प्यास से वह मर रहा हो लेकिन उसका काम जारी रहता है। दुनिया मे ऐसे लोग बहुत है जो छोटा काम करते है और बहुत कम कमाते है लेकिन किसी के सामने झुकते नही और किसी से कुछ माँगते नही। मै ठीक उस बाजा बजानेवाले की तरह हूँ—शिष्ट अर्थ में। मै यथाशक्ति अधिक से अधिक परिश्रम करता हूँ। इससे अधिक और मैं कर ही क्या सकता हूँ?

मुझे उस बाजा बजानेवाले की याद इसलिये आई कि मैंने आज अपनी गरीबी बहुत बुरी तरह महसूस की। आज उसका तमाशा देखने के लिये सडक पर रुक गया।

आज दु:खद विचारो से अपने को मुक्त रखने के लिये, मन को बहलाने के लिये मैंने ऐसा किया। एक जवान औरत, एक नन्ही सी मैली-कुचैली लडकी और कुछ गाडीवान भी तमाशा देखन मे मशगूल थे। बाजा बजानेवाला किसी की खिडकी के नीचे खडा था। पास ही एक दस साल का लडका खडा था जो यदि दुबला-पतला और रोगी जैसा नही दीखता तो काफी सुन्दर लगता। वह नगे पैर, केवल एक कमीज पहने तमाशा देख रहा था—बच्चा आखिर बच्चा ही होता है। उसके घुटने ठढ से काँप रहे थे और वह कमीज की बाँह चूस रहा था, फिर भी तमाशा देखने में मगन था। मैंने देखा कि उसके हाथ मे कागज का एक पुरजा था। अन्त में किसी भलेमानस ने तमाशा करनेवाले के बकसे में, जिसके ऊपर गुडियाँ नाच रही थी, एक सिक्का फेक दिया। सिक्के के गिरने से जो खनखनाहट हुई उसकी आवाज सुनकर लडका चौक गया और उसने भीरुतापूर्वक चारो तरफ देखा। उसने सोचा कि मैंने सिक्का फेंका था क्योकि वह दौडते हुए मेरे पास चला आया और अपने काँपते हाथो से मेरी ओर पुरजा बढा दिया तथा बैठे हुए गले से उसे पढने

के लिये मुझसे अनुरोध करने लगा। मैंने पुरजे को खोल डाला—वही आम बात तीन बच्चों के साथ मौत की घड़ियाँ गिनती हुई अभागिन माँ की सामान्य कहानी जिसमें लोगों से मदद और रहम करने की अपील की गई थी और यह विश्वास दिलाया गया था कि माँ, मरने के बाद दाताओं के सुख और प्रसन्नता के लिये भगवान से प्रार्थना करेगी। सब कुछ स्पष्ट था, लेकिन मेरे पास देने के लिये था ही क्या? कुछ भी नहीं! लेकिन मुझे कितना अफसोस हुआ! अभागा लड़का, ठंड से सिकुड़ता हुआ। मुझे यकीन है वह भूख से भी तड़प रहा होगा। वह धोखा नहीं दे रहा था। लेकिन जरा उन दुष्ट माताओं की बात तो सोचो जो नंगे बदन अपने लड़कों को भयानक ठंड में बाहर भेज देती हैं। शायद वह सचमुच हताश हो चुकी हो, कोई उसकी मदद करनेवाला न हो और संभवतः वह सख्त बीमार हो। फिर भी उसे उपयुक्त अधिकारियों के पास अपील करनी चाहिये। लेकिन हो सकता है कि वह अपने दुर्बल और बीमार बच्चे को भीख माँगने के लिये भेजकर लोगों को ठगना चाहती हो। उस कागज के पुरजे की सहायता से पल-पोस कर

वह कैसा निकलेगा? उसकी आत्मा का हनन हो जायेगा। वह दौड़ दौड़कर लोगों के रहम की भीख मांगता चला रहा है लेकिन लोगों के पास उसके लिये समय नहीं। उनके हृदय पत्थर के हैं और बोल जहर भरे "भाग, भाग यहां से बदमाश! शैतान कहीं का!" ठंड से कांपता हुआ बच्चा जड़ हो जाता है, मानो भयभीत नन्हा पंछी घोंसले से गिर पड़ा हो। उसके हाथ ठिठुर गये होते हैं और हड्डी कंपाने वाली हवा में उसके लिये सांस लेना कठिन हो जाता है। उसे आभास होने से पहले ही उसे खांसी जकड़ लेती है और रोग उसकी छाती में रेंगता हुआ घुस जाता है। और तब मौत किसी अंधेरे कोने में खड़ी खड़ी उसका इन्तजार करती रहती है क्योंकि उसे मदद करनेवाला, उसकी हिफाजत करनेवाला कोई नहीं है। और इस नन्ही सी जान का किस्सा हमेशा, हमेशा के लिये खत्म हो जाता है। बहुत से जीवों की यही कहानी है, वारेन्का। किसी को यह कहते हुए सुनकर कि "भगवान के लिये मेरी मदद करो!" और उसे बिना कुछ दिये यह कहते हुए निकल जाना आसान नहीं कि "भगवान तुम्हारी मदद करेंगे।"

मेरी दाहिनी तरफ एक व्यक्ति था जो लगातार रो रहा था
और दूसरों से भीख नहीं मांग रहा था। उसने धीरे से
कहा "भगवान के लिये मुझे एक पैसा देने का रहम
करे।" आवाज कुछ इतनी अजीब सी थी कि मैं चौंक
उठा। लेकिन मेरे पास देने के लिये था ही क्या? मेरी
जेब खाली थी। और जरा सोचो कि जब गरीब अपनी
बदकिस्मती का इज़हार करते हैं तो अमीरों को चिढ़

होती है और वे जानते हैं कि वे गलत हैं, बला है। क्या भूख से सताये इन्सानों की कराहें उन्हें रात में सोने नहीं देती?

सच्ची बात तो यह है, मेरी प्रिया, कि अपने हृदय को हलका करने तथा अपनी लेखन-शैली से तुम्हें परिचित कराने के लिये मैंने यह सब लिखने की कोशिश की है। तुम्हें भी पता चल रहा होगा, मेरी प्रियतमा, कि मेरी शैली बाद में आकर संवरने लगी है। अभी मैं इतना उद्विग्न हूँ कि अपने विचारों के साथ सहानुभूति बरते बिना नहीं रह सकता, हालाँकि मुझे यह मालूम है कि इस सहानुभूति से मेरा कोई भला होने को नहीं, फिर भी अपने प्रति थोड़ा न्याय करना बहुत ही सुखदायक है। कभी कभी तो इन्सान अपने को बहुत ही तुच्छ और एक तिनके से भी छोटा समझने को मजबूर हो जाता है। उपमा के तौर पर मैं तुमसे यही कहूँगा कि मैं अपने आपको उस छोटे लडके की तरह ही उपेक्षित और कुचला हुआ समझता हूँ जिसने मुझसे भीख माँगी थी। अब मैं व्यजना के रूप में तुम्हें सुनाऊँ, वारेन्का जब मैं तडके दफ्तर जाता हूँ तो शहर के चारों तरफ का दृश्य, धुएँ का बादल

और शोर-गुल आदि को देख-सुनकर मैं अपने आपको इतना तुच्छ सा लगने लगता हूँ मानो किसी ने भेद लेती हुई मेरी नाक में उँगली घुसेड दी हो। ऐसा हो जाने के बाद मैं एक चूहे की तरह सिकुडकर आगे बढ जाता हूँ। लेकिन, मेरी प्रियतमा, आओ अब जरा नजदीक से उन अँधेरे, विशाल मकानों के अन्दर चलकर देखें कि वहाँ क्या हो रहा है। देखें और तब निश्चय करें कि उसके कारण अपने आपको इतना तुच्छ समझना और व्याकुल करना उचित है या नही? ध्यान रखना, वारेन्का, कि यह सब मैं व्यजना के रूप में कह रहा हूँ, अभिधा के रूप में नही। अब हम लोगो को उस मकान के अन्दर क्या देखना है? हमे देखना है कि किसी गन्दे हॉल के अँधेरे कोने मे, जिसे कमरा कहा जाता है, किस प्रकार एक मजदूर जगता हे। यह सभव है कि रात भर वह एक जोडे जूते का स्वप्न देख रहा हो, जिन्हे कल बनाते वक्त उसने खराब कर दिया था। क्या ऐसे भी अनाप-शनाप सपने देखना सभव है। वह मजदूर है, मोची है और ऐसे सपने देखना उसके लिये क्षम्य है। उसके बच्चे बिलख रहे है और उसकी स्त्री भूखी है। और यह जरूरी

नही मेरी प्रिया, कि केवल मोची ही ऐसे सपने देखने के बाद दिमाग पर बोझ लिये सुबह जगते है। उन बातो का कोई खास महत्त्व नही पर उनका जिक्र इसलिये जरूरी है कि सभव है, उसी मकान मे रहनेवाला एक अमीर आदमी अपने आरामदेह कमरे मे सोये सोये जूतो के बारे मे (ठीक उन्ही जूतो के बारे मे नही, लेकिन निश्चय ही जूतो के बारे में) रात भर सपने देखा करता हो, वैसे हम सभी किसी न किसी हद तक मोची है। खैर इसमे कोई मतलब नही लेकिन मुसीबत तो यह है कि ऐसा कोई भी नही जो उस अमीर आदमी के कान मे फुसफुसाकर यह कह दे कि उसे अपने लिये चिन्ता करने की कोई जरूरत नही क्योकि वह मोची नही है और उसके बच्चे स्वस्थ है तथा उसकी पत्नी भूखी नही है। उसे चाहिये कि वह अपने चारो तरफ नजर दौडाकर कुछ अच्छी चीज ढूंढ ले और जूतो के बजाय उसी के बारे मे सपने देखे। व्यजना के रूप मे मेरा यही कहने का तात्पर्य है, वारेन्का। यह अत्यन्त स्वच्छद विचार हो सकता है, प्रिया, लेकिन जब यह विचार आता है तो वह

मेरे हृदय से शब्दों के रूप में 'म्यन फूट पड़ता है। इसलिये अपने आपको बहुत तुच्छ समझने और कोलाहल आदि से डरने की कोई जरूरत नहीं। आमतौर के रूप में मुझे यही कहना है, प्रिया तुम्हें यह सोचने की छूट है कि मैं बकवास कर रहा हूँ या मेरा मूड ठीक नहीं या यह सब कुछ मैंने किसी किताब से चोरी की है। नहीं, मेरी प्रिया, मेरा विश्वास करो कि बकवास से बढ़कर मैं किसी भी चीज से उतनी घृणा नही करता। मेरा मूड भी ठीक है और मैंने किसी किताब से नकल करने की भी कोशिश नहीं की है।

मैं बहुत गमगीन मूड में घर लौटा। केतली स्टोव पर चढा दी और चाय बनाने की तैयारी कर रहा था, तभी अचानक मेरा गरीब पड़ोसी गोरस्कोव भीतर दाखिल हुआ। सुबह मैंने अनुमान किया था कि वह मेरे पास तथा अन्य किरायेदारो के पास झटने की कोशिश कर रहा था। प्रसगवश, मैं तुम्हे बता दूं कि उसकी हालत मुझसे भी बदतर है—और हो भी क्यो नही—क्योकि उसका परिवार बहुत बड़ा है, स्त्री है, बालबच्चे है।

यदि मै गोरश्कोव ही होता तो मै क्या करता, खुद नही जानता। खैर, गोरश्कोव कमरे मे दाखिल हुआ और डबडबाई हुई आँखो को नीचे किये, जमीन को पैरो से कुरेदते हुए खडा रहा। उसके मुँह से एक शब्द भी नही निकल रहा था। मैंने उसे एक कुर्सी, वस्तुत एक टूटी हुई कुर्सी बैठने के लिये दी क्योकि मेरे पास दूसरी कुर्सी नही है। उसके बाद मैंनें उसकी ओर चाय की प्याली बढाई। बहुत देर तक वह क्षमा माँगता रहा लेकिन अन्त मे उसने चाय की प्याली स्वीकार कर ली। लेकिन उसने चीनी लेने से इन्कार कर दिया और फिर क्षमा माँगने लगा। लेकिन जब मैंने चीनी लेने के लिये ज़िद्द की तो वह बहुत देर तक बहस करता रहा और तब नाममात्र के लिये थोडी सी चीनी उसने प्याली में डाल दी और विश्वास दिलाने की कोशिश करने लगा कि चाय काफी मीठी है। ओह, गरीबी भी इन्सान को कितना हीन बना डालती है! "क्या हाल-चाल है, दोस्त?" मैंने पूछा। "धन्यवाद," उसने उत्तर दिया और फिर झेपते हुए बोला "मकार अलेक्सेयेविच, क्या आप भगवान के नाम पर

एक वदनसीब परिवार की कुछ मदद करने की कृपा करेंगे? मेरी स्त्री और बच्चों के खाने के लिये घर में कुछ नहीं है। और मैं बाप होकर लाचार हूँ।" मैं कुछ कहना चाहता था लेकिन उसने फिर कहना शुरू किया। "मुझे हर किरायेदार से डर लगता है, मकार अलेक्सेयेविच, डर से भी अधिक उनसे बोलते हुए मुझे शर्म आती है। वे बहुत कटे-कटे से, दूर-दूर नजर आते हैं। मैं आपको कभी कष्ट नही देता मेरे शुभचिन्तक! मुझे मालूम है कि आप खुद मुसीबतो मे घिरे हुए है, आप मुझे कोई खास मदद नही दे सकते, लेकिन कृपया थोड़ा उधार देने का कष्ट करे। इसके लिये मैं आपके पास नही आता लेकिन मुझे मालूम है कि आपके पास रहम भरा दिल है, आपकी भी जरूरतें मेरी ही जरूरतों से मिलती-जुलती सी है और आप मेरी वदकिस्मती में मेरे साथ हमदर्दी रख सकते है।" और उसके वाद वह अपनी धृष्टता के लिये और मुझे कष्ट देने के लिये वार वार क्षमा माँगने लगा। मैंने कहा कि उसे मदद करते हुए मुझे वडी खुशी होती लेकिन मेरे पास कुछ भी नही है। "मकार अलेक्सेयेविच,

मेरे दयालु दोस्त," उसने फिर घिघियाकर कहा, "मै बहुत अधिक उधार नही मांगता, आपको मालूम है, (और यहाँ वह लाल हो उठा) मेरी स्त्री और बच्चे भूखो मर रहे है। क्या आप दस कोपेक भी नही दे सकते?" इससे मुझे बहुत तकलीफ पहुँची। हां, उस बेचारे की हालत मुझसे भी गयी-गुजरी थी! मेरे पास उस वक्त केवल बीस कोपेक थे जिन्हे बहुत ही जरूरी खर्च के लिये मैंने बचाकर रख छोडा था। "नही," मैंने कहा, "मेरे पास सचमुच कुछ नही।" मैंने उसे समझा भी दिया कि मै क्यो असमर्थ हूँ। "लेकिन मेरे प्रिय मकार अलेक्सेयेविच, चाहे जो भी कहे, या जो मन में आये करे, लेकिन कम से कम दस कोपेक का तो आपको प्रबन्ध करना ही पडेगा।" मैंने बीस कोपेक की पूंजी उठाकर उसे दे दी। बीस कोपेक की पूंजी भी दान ही है। है न? गरीबी भी क्या चीज है! हम लोग तब बातचीत करने लगे और अन्त मे मैंने पूछा कि इतने अभाव की हालत में रहते हुए भी उसने पाँच रूबल का कमरा किराये पर क्यो ले रखा था? उसने जवाब दिया कि वह छ महीना पहले वहाँ आया था और तीन महीने का किराया पेशगी दे चुका था।

लेकिन अब हालत ऐसी हो गई है कि उसे खुद नही मालूम कि वह क्या करे। उसने सोचा था कि उसकी बदनसीबी शीघ्र ही दूर हो जायेगी। एक सौदागर पर मुकदमा चल रहा है जिसने खजाने के साथ बेईमानी और छल-कपट किया था। जब जाँच-पडताल हुई तो उस शैतान पर मुकदमा चलाया गया जिसने गोरश्कोव को भी समेट लिया। अब गोरश्कोव का दोष यह है कि वह राज्य के हित की हिफाजत की ओर से असावधान रहा। मुकदमा वर्षो से चल रहा है और गोरश्कोव नयी नयी मुसीबतो से टकराता रहा है। "मेरी तो प्रतिष्ठा जाती रही, मै बिलकुल निर्दोष हूँ," गोरश्कोव ने कहा, "चोरी और छल-कपट से मेरा कोई वास्ता नही, मै निर्दोष हूँ।" लेकिन उस मुकदमे ने उसकी नेकनामी और प्रतिष्ठा पर आघात किया। उसे बर्खास्त कर दिया गया और हालाकि वह दोषी नही पाया गया फिर भी कुछ न कुछ कलक लगा ही रह गया। यदि उसकी बिलकुल रिहाई हो गई होती तो उसे उस सौदागर से काफी रकम हर्जाने के रूप में मिल जाती। मै गोरश्कोव की बातो का विश्वास करने को तैयार हूँ लेकिन न्यायालय नही।

यह बडा उलझा हुआ मामला है जिसे सौ वर्ष में भी नही सुलझाया जा सकता। अभी एक गाँठ सुलझ भी नही पाती कि सौदागर दूसरी नयी गाँठ डाल देता है। मुझे गोरश्कोव के लिय बहुत अफसोस है और उसके साथ सख्त हमदर्दी भी। वह बेकार है। उसकी बदनामी के कारण उसे कोई नौकरी भी नही देता। उसकी हर चीज़ बिक चुकी है। मुकदमा खत्म होने का नाम ही नही लेता और इधर उसके यहाँ एक बच्चा भी हो गया, बिलकुल कुसमय मे। यह सब तो खर्च का घर है ही। जब बच्चा बीमार पडा तो रही-सही पूँजी भी खर्च हो गई, और जब वह मौत की नीद सो गया तो और भी पूँजी की ज़रूरत पडी। उसकी स्त्री बीमार है और वह खुद किसी पुराने रोग से ग्रस्त है। वह बहुत पीडित है। उसका दावा है कि आग चलकर फैसला उसी के पक्ष में होगा और ज़रूर होगा। मुझे उसके लिये बहुत अफसोस है, वारेन्का। मैंने उसे काफी राहत देने की कोशिश की। वह कुचला हुआ व्यक्ति है, उसे हिफाजत और हमदर्दी की जरूरत है। मैंने यथाशक्ति उसे सात्वना दी है। विदा, मेरी

९ सितम्बर

वरवारा अलेक्सेयेवना, मेरी प्रियतमा,

मेरा मस्तिष्क काम नहीं कर रहा है एक भयावह बात हो गई है। मेरा सर चक्कर खा रहा है और मेरे इर्द-गिर्द की चीजें भी चक्कर खाती हुई नजर आ रही है। तुम अनुमान नही लगा सकती कि मैं क्या कहना चाहता हूँ। तुमने ऐसी कल्पना कभी की भी नहीं होगी। लेकिन हाँ, मैंने इसकी कल्पना की है, अपने दिल में इसे महसूस किया है। पिछले दिन मैंने इसके बारे मे कुछ सपना सा भी देखा है।

मैं इस बात का उल्लेख, बिना किसी शैली के करूँगा—वह कलम की नोक से आप ही आप उतरती जायेगी। आज सुबह सदा की ही तरह मैं दफ्तर गया। अपनी मेज के पास बैठकर लिखने लगा। यहाँ पर यह जिक्र कर देना जरूरी है, मेरी प्रिया, कि कल भी मैं ठीक यही काम कर रहा था जब तिमोफेई इवानोविच ने खुद मेरे पास आकर कहा कि उनके पास एक जरूरी कागज़ है जिसकी तुरत नकल अनिवार्य है। "जितनी शीघ्रता और सफाई के साथ इसकी नकल हो सके, कृपया कर दो," उन्होंने कहा, "इस पर महामहिम आज ही दस्तखत करेंगे।" मैं यह बता दूँ कि कल मैं आपे मे नहीं था। मैं बहुत उदासी और अकेलापन महसूस कर रहा था। मेरा हृदय दुख और व्यथा से बोझिल था। मैं तुम्हारे लिये बहुत चिन्तित था, मेरी प्रिया। मैं काम करने बैठ गया और कागज की नकल बहुत सावधानी और सफाई के साथ करने लगा। लेकिन न जाने मेरे भाग्य का दोष था, या दैवी प्रकोप या विधि का विधान कि एक पंक्ति मुझसे छूट गई और हे भगवान, पूरा का पूरा अर्थ ही बदल गया। उस कागज़ के भेजने

में देर हो गई और सहायकों ने साथ ही उस पर हस्ताक्षर किया। मैं बिना किसी शक-संदेह के साथ अन्दर आया और येगेल्यान ज्ञानोविच के पास आकर बैठ गया। तुम्हें यह बता दूं, मेरी नादेन्का, कि कुछ दिनों से मैं बहुत भीरु और शर्मिन्दा रहने लगा हूँ। मैं किसी से आंखें नहीं मिला पाता। जरा सी सरसराहट से भी मैं कांप उठता हूं। और आज भी मैं एक सून कछुवे की तरह सर झुकाये बैठा हुआ था कि येफीम अकीमोविच (सदर का एक अद्वितीय मजाकिया व्यक्ति) ने सबको सुनाते हुए जोर से कहा "मकार अलेक्सेयेविच, तुम इस प्रकार बैठे हुए हो जैसे . " और उसके बाद उसने ऐसा मुंह बना लिया कि सभी ठहाके के साथ हँस पड़े और हँसते रहे। लेकिन मैंने अपनी आंखें बंद कर ली, अपने कान मूंद लिये और ऐसा अभिनय किया मानो न मैं कुछ देख रहा हूँ और न सुन रहा हूं। उनसे छुटकारा पाने का यही सबसे अच्छा तरीका था। अचानक तभी एक कोने मे हलचल-सी हुई और मेरा नाम लिया जाने लगा। मुझे तो विश्वास ही नहीं हुआ वे मुझे ही,

देवुश्किन को ही, बुला रहे थे। मेरे हृदय की धडकन बन्द होती सी जान पडी। मालूम नही, मै क्यो बहुत डर गया था, उतना डर मुझे जीवन मे कभी नही लगा था। मैं कुर्सी पर जड होकर रह गया और हिल-डुल भी नहीं सका—मानो वे मुझे नही, किसी दूसरे को पुकार रहे हो। और पुकार नज़दीक होते होते मेरे कान के पास तक पहुँच गई। "देवुश्किन, देवुश्किन! कहाँ है देवुश्किन?" मैंने आंखे ऊपर की तो वहाँ यवस्ताफी इवानोविच को कहते हुए सुना "महामहिम तुम्हे बुला रहे है, मकार अलेक्सेयेविच। तुमने उन कागजात को भ्रष्ट कर डाला है।" इतना ही मेरे लिये काफी था! था न? मैं ठढा पड गया और मेरे होश उड गये। मै कैसे उठा और कैसे चल पडा, यह मुझे मालूम नही। मैं उस वक्त क्या सोच रहा था, यह भी नही बता सकता। मुझे इतना ही याद है कि कमरे पर कमरे पार करता हुआ मैं एक निजी कमरे मे पहुँचा जहाँ उनसे मेरी मुठभेड हो गई। वहाँ पर महामहिम तथा अन्य लोग बैठे हुए थे। मैं इतना डर गया था कि मैं अभिवादन के लिये झुक भी नही

पाया। मै वहां कांपते हुए, डरे और सहमे हुए परेशानी के साथ खड़ा रहा। पहले, मेरी नजर दाहिनी और बाईं ओर पर पड़ी और वहां जो कुछ मैने देखा वह किसी आदमी को पागल कर देने के लिये काफी था। इससे बुरा यह कि मैने यही सोच रखा था कि मेरा कोई अस्तित्व ही नही है और तब महामहिम को ऐसा आभास मिला कि मेरा भी कोई अस्तित्व है। शायद उन्होंने मत्रालय में किसी की जवान से देवुश्किन का नाम सुना होगा, पर उन्होंने उसे जानने के लिये कभी कष्ट नहीं किया।

"इसका क्या मतलब है?" वे गुस्से से बोले। "तुम सावधान क्यों नहीं रहते? यह एक जरूरी कागज था और तुमने उसे भ्रष्ट कर दिया।" उसके बाद महामहिम, येवस्ताफी इवानोविच की ओर मुड़े और मै कुछ ही शब्द सुन पाया "ऐसी असावधानी . बेमतलब की परेशानी " क्षमा मांगने के लिये कई बार मैंने होठ खोले लेकिन आवाज ही नहीं निकली। मै भाग जाना चाहता था, लेकिन हिम्मत नही हुई। और तब सबसे बड़ी विपत्ति आई जिसे लिखते हुए शर्म से

मेरी कलम काँप रही है। मेरे कोट का एक बटन जो एक धागे पर लटका हुआ था अचानक टूट कर लुढकता और झनझन आवाज़ करता हुआ महामहिम के बिलकुल पाँव तक पहुँच गया। और यह तब हुआ जब पूर्ण निस्तब्धता छाई थी। क्षमायाचना के बदले यही काड हो गया। महामहिम को मेरी ओर से यही उत्तर था। अब इसके परिणाम का उल्लेख करना बडा भयावह है। महामहिम की आँखें मेरी ओर उठी और मेरी हुलिया पर गौर करने लगी। मुझे याद है कि मैंने दर्पण में क्या देखा था और बटन को पकडने के लिये झुका। किस शक्ति के वशीभूत होकर मैंने ऐसा करने की हिम्मत की? मैं उसपर झपटा लेकिन बटन लुढकता हुआ दूर भागता गया, मेरी मिट्टी पलीद हो गई। मैंने महसूस किया कि मेरी चेतना लुप्त हो रही है। सब कुछ खो गया मेरी प्रतिष्ठा, मेरी इज्जत, मेरा विवेक। दिमाग की झनझनाहट में मुझे केवल सी-सी की आवाज, फाल्दोनी और तेरेजा की चीख और हजारो जवानो की बाते ही सुनाई पडी। अन्त मे मैंने बटन पर कब्जा कर लिया, सीधा हुआ और तन कर खडा हो गया। मुझे अपने हाथो को बगल में करके और ठीक

से खड़ा होना चाहिये था। लेकिन नहीं। मुझे उस बटन को उस टूटे हुए धागे पर रखकर दबाना पड़ा मानो वह फिर अपनी जगह पर बैठ जायेगा। और सारे समय मैं मुस्कराता रहा। हां, केवल मुस्कराता रहा। महामहिम ने मुड़कर एक बार फिर मुझे देखा और येवस्ताफी इवानोविच से कहा "इसका क्या मतलब है? जरा इस आदमी को देखो! इसके साथ क्या बात है?" आह मेरी प्रियतमा, जरा सोचो! "इसके साथ क्या बात है?" मैने उनका ध्यान आकृष्ट कर लिया था। था न? और येवस्ताफी इवानोविच ने उन्हे जवाब दिया "बिलकुल बेदाग सेवा, कोई शिकायत नही, आचरण बहुत ही आदर्श और वेतन दर के मुताबिक।" "अच्छा तो अब इसकी मदद करो," महामहिम ने कहा। "इसे कुछ पेशगी दे दो।" "लेकिन वह सब कुछ पेशगी ले चुका है। परिस्थितियो से मजबूर होकर उसने ऐसा किया है, लेकिन उसके आचरण मे कोई दोष नही, काम में कोई शिकायत नही,' बिलकुल शिकायत नही। इसके खिलाफ कहने को कुछ भी नही।" मै दोजख की आग में जल रहा था, मेरी प्रिया। "अच्छा, अच्छा," महामहिम ने इतने जोर

से कहा कि मै भी सुन सका, "यथाशीघ्र कागजात की नकल फिर से होनी चाहिये। देवुश्किन, यहाँ आओ। इन कागजात की नकल विना किसी गलती के फिर से करो और सुनो ." महामहिम ने दूसरो को चले जाने के लिये कहा और हम अकेले रह गये। जल्दी से उन्होने अपनी जेव से सौ रूवल का एक नोट निकालकर मेरे हाथ में रख दिया। "इसे . कर्ज ही समझो। मैं तुम्हारे लिये कुछ करना चाहता हूँ।" मै खडा हो गया, मैं किंकर्तव्यविमूढ था, मुझे कुछ पता नही चल रहा था कि यह सव क्या हो रहा था। मैंने उनका हाथ चूम लिया होता, लेकिन वे लाल हो उठे थे, तव उन्होने, उस महान् व्यक्ति ने—मैं वढ़ा-चढाकर कुछ नही कह रहा हूँ, वारेन्का—वस्तुत मेरा नाकाविल हाथ अपने हाथ मे लेकर हिलाया, मानो मैं उनकी वरावरी का हूँ। "अव तुम्हे जाना चाहिये," उन्होने कहा। "अफसोस, मैं तुम्हारे लिये इससे अधिक कुछ नही कर सकता। आइन्दा गलतियाँ न करना। जो हो चुकी है, उसके लिये हम दोनो दोषी है।"

वारेन्का, मै बहुत उत्तेजित हूँ! मैं बिलकुल घबड़ा उठा हूँ! मेरा हृदय बाहर निकलता-सा जान पड रहा है। मै बहुत कमजोर हूँ। मै तुम्हारे लिये पैंतालीस रूबल भेज रहा हूँ। बीस रूबल मैं अपनी मकान-मालकिन को दूंगा और उसके बाद मेरे पास पैंतीस रूबल बच जायेंगे। उनमें से बीस रूबल मेरे कपडो की मरम्मत मे निकल जायेंगे और पन्द्रह रूबल अन्य जरूरी खर्चों के लिये रह जायेंगे। आज सुबह की घटना से मैं बिलकुल उद्विग्न हो उठा हूँ। मुझे आराम करना जरूरी है। वैसे मैं सुसयत हूँ और मेरा मस्तिष्क हलका है। केवल मेरे दिल में दर्द है और उसकी गहराई में मै उसकी हरकत और कम्पन सुन रहा हूँ। मै बाद में तुमसे मिलने आऊँगा। अभी मै इन बातो से बहुत घबड़ाया हुआ हूँ। भगवान सब कुछ देखता है, मेरी प्रियतमा, मेरी अनमोल गुड़िया!

तुम्हारा मित्र,

मकार देवुश्किन।

१० सितम्बर

मेरे प्रिय मकार अलेक्सेयेविच,

मुझे तुम्हारी खुशनसीबी के बारे में जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई है और मैं तुम्हारे महामहिम की उदारता की तारीफ किये बिना नही रह सकती। अब तुम्हे अपनी चिन्ताओं से मुक्ति मिल जायेगी। लेकिन भगवान के लिये, पैसे बर्बाद नही करना। जितनी सादगी और किफायत से हो सके, रहने की कोशिश करो ताकि कुछ बचाकर रखने पर तुम्हे मुसीबतों का शिकार न होना पड़े। हम लोगो की चिन्ता करने की आवश्यकता नही। हम और फेदोरा किसी न किसी तरह काम चला ही लेगें। इतनी रकम भेजने की क्या जरूरत थी, मकार अलेक्सेयेविच? हम लोगों को उतनी बड़ी रकम की जरूरत नही—जितना हम लोगो के पास है, उतना ही काफी है। यह सच है कि यहाँ से दूसरे मकान में हटने के लिये हमे कुछ रकम की जरूरत पड़ेगी। लेकिन फेदोरा को विश्वास है कि तब तक उसे एक जगह से उसके पुराने कर्ज की रकम वापस मिल जायेगी। मैं मौके-बेमौके

के लिये बीस रूबल रखकर बाकी रकम तुम्हे लौटा रही हूँ। अपना ख्याल रखो, मकार अलेक्सेयेविच। विदा। भगवान तुम्हे चिन्ताओ से मुक्त रखें। स्वस्थ और प्रसन्न रहो। यदि मैं थकी न होती तो और भी लिखती। कल मैं बिछावन पर पड़ी रही। मुझे खुशी है कि तुम मिलने के लिये आनेवाले हो। कृपया जरूर आना।

व० दो०

११ सितम्बर

वरवारा अलेक्सेयेवना, मेरी अपनी प्रियतमा,

अभी मैं बहुत प्रसन्न और सन्तुष्ट हूँ, कृपया जाने का नाम न लो। फेदोरा की बात न सुनो, मेरी प्रिया, मैं वह सब कुछ करूँगा जो तुम चाहोगी। महामहिम के प्रति आदर के भाव से मैं प्रेरित हुआ हूँ और अपने आचरण में किसी प्रकार का धव्वा नही लगने दूँगा। हम लोग पहले की तरह फिर एक दूसरे को खुशी भरे पत्र लिखेंगे और एक दूसरे के सुख-दुःख मे हिस्सा बँटाएगे हालाकि

भविष्य में दुःख की सम्भावना नहीं। हम लोग फिर सौहार्द और शान्ति से जीवन व्यतीत करेंगे। फिर हम लोग साहित्य-पाठ में तल्लीन होंगे। अब मेरे जीवन में परिवर्तन आया है, वारेन्का। मकान-मालकिन मेरे साथ सहृदयता दिखाने लगी है, तेरेज़ा अधिक चालाक और फाल्दोनी भी अधिक आज्ञाकारी हो चला है। रत्जयायेव के साथ भी बनने लगी है। मैं इतना खुश था कि मैं खुद उनके पास गया। वह हृदय का अच्छा आदमी है, मेरी प्रिया। जितनी भी बुरी बातें लोगों ने उसके बारे में कही हैं, वे सब झूठी हैं। उसने हम लोगों की बदनामी करने की कोशिश नहीं की थी। उसने स्वयं मुझे ये बातें बताई और नई रचनाएँ पढ़कर सुनाई। जहाँ तक मेरा नाम 'लवलेस' रखने का सम्बन्ध है, उसने बताया कि यह कोई अशिष्ट या भद्दा नाम नहीं है बल्कि उसने विदेशी साहित्य से यह नाम चुराया है जिसका अर्थ धूर्त व्यक्ति होता है या शाब्दिक अर्थ में कहा जा सकता है "एक तेज़ युवा भद्रपुरुष।" सम्बन्धित पुस्तक में इसी अर्थ में इस शब्द का उपयोग किया गया है। अतः, यह बिलकुल निर्दोष मज़ाक था, मेरी अप्सरा, जिसका मैंने, एक

मजानी ने, गलत अर्थ लगा लिया। मैंने क्षमा माँग ली है। आज मौसम भी अच्छा है। यह सच है कि सुबह थोड़ी झींसी पड़ी और हलका पाला भी लेकिन इससे हवा में ताजगी आ गई है। मैंने जूतों का एक सुन्दर जोड़ा खरीदा है। मैं नेव्स्की में टहलने गया था और 'मधुमक्खी'* पढ़ने के लिये रुक गया। ओह, मैं एक जरूरी बात तो तुम्हें बताना भूल ही गया. आज सुबह महामहिम के बारे में मेरी बातचीत येमेल्यान इवानोविच और अक्सेन्ती मिखाइलोविच से हुई। मुझे पता चला कि उन्होंने केवल मेरे साथ ही रहम नही दिखाया है। महामहिम अपनी दयालुता के लिये प्रसिद्ध हैं। बहुतों ने उनकी प्रशंसा की है और बहुतों ने कृतज्ञतावश आँसू बहाये हैं। लोग कहते हैं कि उन्होंने एक यतीम लड़की को गोद लिया था और बाद में उसका विवाह एक सुखी और सम्मानित व्यक्ति से करा दिया जो उनके अधीन काम करता था। यह भी चर्चा है कि उन्होंने एक विधवा के

---

*एक अखबार का नाम।—सं०

बेटे को नौकरी दिला दी तथा ऐसे ही बहुत से नेक काम उन्होंने किये है। मैंने उनकी नेकनामी में चार चाँद लगाने के लिये अपनी कहानी भी लोगों को सुना दी और कुछ नही छिपाया। मैंने अपनी शर्म को तिलाजलि दे दी और शर्माने की आखिर बात ही क्या थी! महामहिम की कीर्तिध्वजा ससार भर में लहराये! मेरी यही इच्छा हुई। मै न झेंपा और न शर्म से लाल हुआ बल्कि गर्व से लोगो को सब कुछ बता दिया (लेकिन तुम्हारे बारे मे कुछ नही कहा)। मैंने उन्हे मकान-मालकिन के बारे में, फाल्दोनी और रतज्यायेव के बारे मे अपने जूतो और मार्कोव के बारे में अर्थात् सब कुछ के बारे में कह सुनाया। उनमें से कुछ, शायद सभी खूब हँसे। शायद मेरे गठन या मेरे जूतो के बारे में कुछ मजेदार बात जरूर थी। हाँ, मुझे विश्वास है कि मेरे जूतो की चर्चा ही उन्हे मजेदार मालूम हुई होगी। क्योकि वे नौजवान और खुशहाल लोग है। लेकिन इसमें उनके हृदय की कोई मलिनता नही थी। वे महामहिम की बात पर हँसने की

हिम्मत कैसे कर सकते है? कैसे हिम्मत कर सकते है, वारेन्का?

मै अभी भी उद्विग्न हूँ। इन घटनाओ से मै बहुत घवडा गया हूँ। क्या तुम्हारे पास काफी जलावन है? अपना ख्याल रखना वारेन्का, और सर्दी से वची रहना। ओह, मेरी प्रिया, तुम्हारी दु खद भावनाओ से मुझे कितनी तकलीफ पहुँचती है। मै भगवान से तुम्हारी खुशी के लिये प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ। क्या तुम्हारे पास ऊनी मोजे या कोई गर्म चीज पहनने के लिये है? इस बूढे पर रहम करो और साफ साफ कहो कि तुम्हे किस चीज की जरूरत है। सिर्फ मुझे खवर करने की जरूरत है। वुरे दिन लद चुके और सुनहरा भविष्य सामने है।

वे हमारे दु ख के दिन थे, वारेन्का, लेकिन वे खत्म हुए और साल वीतते बीतते हम उनके लिये आहे भरते भी पाए जायेंगे। मुझे अपनी जवानी के दिन याद है। ऐसे मौके भी होते थे जब मेरे पास नाम मात्र के लिये एक कोपेक भी नही होता था, फिर भी मै वहुत प्रसन्न रहता था। उन दिनो सुवह सुवह नेव्सकी में एक

प्यारे प्यारे से मुखड़े का दर्शन सारा दिन खुश रखने के लिये काफी होता। एक वह् भी समय था। जिन्दगी बडी प्यारी है, खासकर सेंट पीटर्सबर्ग में, वारेन्का। कल मैंने आंखो मे आंसू लिये भगवान से प्रार्थना की कि हमारी मुसीबतो में जो मुझसे पाप हो गये हैं, उन्हें वे माफ कर दें मैंने बहुत शिकवा-शिकायत की थी, स्वच्छद विचारो के साथ साथ मदिरापान को भी बढ़ावा दिया था। अपनी प्रार्थनाओं के समय मैंने तुम्हें भी याद किया था। तुमने ही मुझमे दृढता भरने के साथ साथ सान्त्वना और नेक सलाह दी। मैं यह कभी नही भूल सकता, मेरी प्रियतमा। आज एक-एक कर मैंने तुम्हारी सारी चिट्ठियो को चूमा, मेरी प्रिया। विदा, मेरी अपनी वारेन्का। मैंने सुना है कि पडोस में कोई कोट बेच रहा है। शायद मुझे उसका पता लगाना चाहिये? विदा, मेरी नन्ही अप्सरा, विदा।

तुम्हारा स्नेहाधीन,

मकार देवुश्किन।

१५ सितम्बर

मेरे प्रिय मकार अलेक्सेयेविच,

मैं बहुत उद्विग्न हूँ। बहुत बड़ा अपशकुन हुआ है। जरा तुम्ही गौर करो। किस्सा यूँ है ' मिस्टर बीकोव सेंट पीटर्सबर्ग में है। फेदोरा से उनकी मुलाकात हो गई। वे घोड़ा-गाडी में चले जा रहे थे लेकिन फेदोरा को देखते ही वे नीचे उतर पडे और उसके पास आकर पूछने लगे कि वह कहाँ रहती है। जब फेदोरा ने उन्हे बताने से इन्कार किया तो उन्होने हँसते हुए कहा कि उन्हे अच्छी तरह मालूम है कि वह किसके साथ रह रही है। (जरूर अन्ना फ्योदोरोवना ने ही उन्हे बताया होगा।) फेदोरा अपने को संयत नही रख सकी और उसने उन्हे डाँटना शुरू किया कि वे दुराचारी है और साथ ही मेरे दु खो और मुसीबतो की जड़। इसपर उन्होने कहा कि मैं दु खी इसलिये हूँ कि मै पैसे पैसे की मोहताज हूँ। फेदोरा ने तब उन्हे बताया कि मै काम करके अपनी रोटी कमा सकती थी या किसी से शादी कर सकती थी या कोई नौकरी ढूंढ सकती थी, लेकिन भाग्य का दोष कि मैं

बहुत सख्त बीमार हूँ और मौत की घड़ियाँ गिन रही हूँ। इसपर उन्होंने कहा कि मैं बहुत दुःखी और नाराज़ हूँ और "मेरी सारी अच्छाइयों में जंग लग गया है" (ये बिलकुल उन्हीं के शब्द हैं)। फेदोरा और मैंने सोच रखा था कि उन्हें मालूम नहीं होगा कि हम कहाँ रहते हैं लेकिन कल जब मैं गोस्तीनी द्वोर कुछ बाजार-हाट करने के लिये गई हुई थी, वे अकस्मात् हमारे कमरे में आ धमके। वे जान-बूझकर मेरी अनुपस्थिति में वहाँ आये थे। उन्होंने फेदोरा से मेरे बारे में बहुत-से सवाल पूछे, सारी चीजों का निरीक्षण किया—मेरे हाथ की बुनी हुई चीजों का भी और अन्त में पूछा वह कौन सा किरानी है जिसके साथ मेरी जान-पहचान है? उस वक्त तुम आँगन पार कर रहे थे और फेदोरा ने तुम्हारी ओर इशारा कर दिया। उन्होंने देखकर केवल मुस्करा दिया। फेदोरा ने उनसे चले जाने के लिये कहा। उसने कहा कि मैं अपनी मुसीबतों के कारण बहुत बीमार हूँ और उन्हें देखकर मुझे और भी बुरा लगेगा। इसपर उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। केवल इतना ही कहा कि वे कुछ भला करने के ख्याल से ही वहाँ चले आये थे। तब उन्होंने

उसे पचीस रूबल दिये लेकिन उसने लेने से इन्कार कर दिया। यह सब क्या मतलब रखता है? वे क्यो आये थे? हम लोगो के बारे में उन्हे कैसे पता चल सका? मै तो बहुत घबडा गई हूँ। फेदोरा कहती है कि उसकी ननद अक्सीन्या, जो हम लोगो से कभी कभी मिलने के लिये आती है, नस्तास्या धोबिन को जानती है और नस्तास्या का चचेरा भाई मत्रालय में चौकीदार है जहाँ अन्ना फ्योदोरोवना के भतीजे की जान-पहचान का आदमी नौकरी करता है। इस तरह से शायद अन्ना फ्योदोरोवना को इस बात की भनक मिल गई है। लेकिन शायद फेदोरा को गलतफहमी हो गई है। हमें क्या करना चाहिये, मालूम नही। क्या वे फिर आयेंगे? मै यह सोच कर ही डर जाती हूँ। जब फेदोरा ने मुझे यह सब कुछ बताया तो मुझे लगभग गश सा आ गया। वे मुझसे और क्या चाहते है? मै उन लोगो को देखना तक नही चाहती। मुझको, एक दुखिया लडकी को, वे तग क्यो करना चाहते है? मै बहुत भयभीत हूँ। यदि मि० बीकोव अभी, इसी क्षण, चले आयें तो क्या होगा? मेरे भाग्य में

क्या लिखा है? मुझसे मिलने के लिये शीघ्र ही आओ, मकार अलेक्सेयेविच। भगवान के लिये तुरत आओ।

व० दो०

१८ सितम्बर

वरवारा अलेक्सेयेवना, मेरी प्रियतमा,

आज की तारीख हम लोगों के मकान में एक अप्रत्याशित और अकथनीय घटना घटी है। वेचारा गोरश्कोव पूर्ण रूप से निर्दोष साबित हो गया है। फैसला बहुत पहले ही हो चुका था लेकिन आज वह आखिरी फैसला सुनने के लिये गया हुआ है। मुकदमे का फैसला उसके हक में बडा अच्छा निकला। उसकी असावधानी सम्बन्धी त्रुटि को माफ कर दिया गया है। सौदागर की ओर से हर्जाने के रूप में उसे एक अच्छी-खासी रकम मिली है। अत उसकी स्थिति सुधर गई और उसकी खोई हुई प्रतिष्ठा लौट आई है। सक्षेप में, सब कुछ सुधर गया' उसकी सारी आशाएँ पूरी हो गईं। वह तीन बजे दिन

में घर लौटा, वह प्रेत की तरह पीला दीख रहा था, उसके होंठ कांप रहे थे लेकिन मुस्कराहट की छाप स्पष्ट थी। उसने अपनी स्त्री और बच्चो को भुजपाश मे कस लिया और हम लोगो की एक बडी भीड उसे बधाई देने के लिये आ खडी हुई। वह बहुत भावुक हो उठा था और बार बार नम्रतावश झुकने लगा तथा हम लोगो से उसने अनेक बार हाथ मिलाया। वह लम्बा दिखाई पडने लगा था और उसकी पीठ सीधी हो गई थी। उसकी आँखो की तरलता गायब हो चुकी थी। कितना उत्तेजित था वह! वह एक मिनट भी चुपचाप खडा नही रह पाता था वह चीजें उठाता और फिर रखता, मुस्कराता और झुकता, बैठता और उठता, जो कुछ भी दिमाग में आता कहता, अपने सम्मान, अपनी नेकनामी और अपने बच्चो के बारे मे बहुत सी बाते कहता रहा। वह रो भी पड़ा। हममे से बहुतो की आँखो मे भी आँसू आ गये थे। शायद उसे प्रोत्साहित करने के लिये रतज्यायेव ने कहा. "मेरे दोस्त, जब खाने के लिये कुछ नही हो तो सूखी प्रतिष्ठा किस काम की? पैसा ही सब कुछ है, इसी के लिये तुम्हे शुक्रगुजार होना चाहिये!" और

उसने उसके कधो को थपथपाया। मुझे ऐसा लगा कि गोरश्कोव को यह बात बुरी लगी। उसने सीधे अपनी नाराजगी जाहिर नही की लेकिन रतज्यायेव की ओर ताज्जुब भरी नजर से देखते हुए उसने अपने कधो पर से उसके हाथ हटा दिये। इससे पहले उसने कभी ऐसा न किया होता। लेकिन स्वभाव मे परिवर्तन होता रहता है। उदाहरण के लिये, मै ऐसी खुशी के दिन कभी वैसा घमंड नही दिखाता। ऐसे अवसर आते है जब मनुष्य हद से अधिक झुकता है, अपने आपको नीचा होने देता है और उसका कारण होता है केवल सद्भावना और सहृदयता का अतिरेक। लेकिन मै अपनी चर्चा क्यो करूँ?
'हाँ," गोरश्कोव ने कहा, "पैसा भी जरूरी चीज है। भगवान को इसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद!" वह बार बार धन्यवाद के शब्द दोहराता रहा। उसकी पत्नी ने बहुत ही स्वादिष्ट भोजन की फरमाइश की और स्वय मकान-मालकिन ने खाना तैयार किया। हमारी मकान-मालकिन भी अपने ढग की रहमदिल औरत है। भोजन करने के समय तक गोरश्कोव बहुत बेचैन था, वह हरेक कमरे में बुलाये या बिना बुलाये गया। वह

कमरे में दाखिल होता, मुस्कराता, बैठ जाता; कुछ बोलता या कुछ नही भी बोलता और तब उठकर चला आता। जहाजी अफसर के कमरे मे लोगो ने उसे ताश खेलने के लिये आमन्त्रित किया। फलस्वरूप, उसने सारा खेल ही चौपट कर दिया, गलत पत्ते फेंक देता था और अन्त मे यह कहते हुए बाहर निकल आया: "मै तो यूँ ही बैठ गया था।" बरामदे में मुझसे भेंट होने पर उसने मेरे दोनो हाथ पकड़ लिये और विचित्र ढग से मेरी आँखों में देखा तथा एक बार मेरा हाथ फिर जोर से दबाते हुए वह चला गया लेकिन उसके होठो पर एक मुस्कराहट, विचित्र मुस्कराहट, मरियल सी मुस्कराहट खेल रही थी। उसकी पत्नी खुशी के अतिरेक से रो रही थी और उसके कमरे की हर चीज खिलती हुई सी नजर आ रही थी। भोजन के बाद उसने अपनी पत्नी से कहा. "मैं सोचता हूँ कि मुझे थोडा आराम करना चाहिये।" कुछ देर तक वह लेटे लेटे अपनी छोटी लडकी के माथे को थपथपाता रहा। तब वह अपनी पत्नी की ओर मुडा और बोला "हम लोगो का पेतेन्का कहाँ है?" उसकी पत्नी ने तुरत आस का

चिन्ह बनाते हुए कहा कि पतेन्का की मृत्यु हो गई। "आह, हाँ," उसने जवाब दिया, "पेतेन्का स्वर्ग में है।" उसकी स्त्री ने महसूस किया कि वह आपे में नहीं था, घटनाओं ने उसपर असर डाला था, इसलिये उसने सोने के लिये जिद् की। "हाँ, हाँ, ठीक है .. मैं थोड़ा सोना चाहूंगा।" तब वह एक करवट हो गया। थोड़ी देर तक पड़ा रहा और फिर अपना सर घुमाया मानो कुछ कहना चाहता हो। वह समझ नहीं सकी, इसलिये उसने पूछा कि वह क्या कहना चाहता था, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। उसे सोया हुआ समझकर वह वहाँ से हटकर मकान-मालकिन के पास चली गई और घंटे भर वहाँ रही। जब वह घर लौटी तो उसने उसे गहरी नींद में सोये हुए पाया, अतः वह कुछ काम करने के लिये बैठ गई। वह आध घंटे तक व्यस्त रही और उसके बारे में सब कुछ भूल गई। लेकिन वह किसी अज्ञात भय से उठ खड़ी हुई। मौत का सन्नाटा छाया हुआ था। उसने बिछावन की ओर देखा तो पाया कि उसने करवट भी नहीं बदली थी। वह जब पास आई तो उसने देखा कि वह मर चुका था, बेचारा गोरश्कोव मर चुका था

मानो उसपर बिजली गिर पड़ी हो और किसी को पता भी नहीं। मैं बहुत उद्वेलित हूं और अभी तक संयत नहीं हो सका हूं। किसी की मौत इस तरह कैसे हो सकती है? बेचारा गोरश्कोव! कैसी जिन्दगी उसके पल्ले पड़ी थी, कैसी ज़िन्दगी! उसकी स्त्री फूट फूटकर रो रही थी और भय से कांप रही थी और उसकी बच्ची कोने में दुबककर खड़ी थी। कैसी खलबली मची! सुना है शव-परीक्षा होगी। मैं अपने दुख का बयान नहीं कर सकता, अपना भविष्य कौन जानता है? .. आज है, तो कल नहीं!

तुम्हारा

मकार देवुश्किन।

१६ सितम्बर

मेरी प्रियतमा वरवारा अलेक्सेयेवना,

मैं तुम्हें शीघ्र सूचित करने के लिये बेचैन था कि रतज्यायेव मेरे लिये कुछ काम का प्रबन्ध कर रहा है। एक लेखक रतज्यायेव के पास अपनी हस्तलिपि का मोटा

पुलिंदा लिये पहुँचा था—बहुत अधिक काम है, शुक्र है भगवान का। बदकिस्मती से उसकी लिखावट बहुत अस्पष्ट है। मैं खुद नही जानता कि मैं कैसे पढ़ पाऊँगा। इस काम को तुरत करना है और वह इतने अजीब ढंग से लिखा हुआ है कि अर्थ का कुछ पता ही नही चलता। प्रति पृष्ठ के लिये चालीस कोपेक मजदूरी तय पाई है। मैं तुम्हे यह बताने के लिये लिख रहा हूँ कि मुझे अब कुछ फाज़िल आमदनी हो जायेगी। विदा, मेरी प्रियतमा। अब मुझे काम करने बैठ जाना चाहिये।

तुम्हारा चिरतन मित्र

मकार देवुश्किन।

२३ सितम्बर

मेरे प्रिय मित्र, मकार अलेक्सेयेविच,

मैंने तीन दिन से तुम्हे कोई पत्र नही लिखा है, इस बीच मै काफी मुसीबतो और चिन्ताओ से घिरी रही हूँ।

परसो मि० बीकोव मुझसे मिलने के लिये फिर आये थे।

फ़ेदोरा वाहर गई थी और मै अकेली थी। जब मैने दरवाज़ा खोला तो उन्हे देखकर मै इतना भयभीत हो गई कि मै अपनी जगह से जरा हिल-डुल भी नही सकी। मै बहुत पीली पड़ गई थी। वे अपनी पुरानी हँसी के साथ भीतर घुसे और कुर्सी खीचकर वैठ गये। वाद मे जब मै सयत हुई तो कोन मे काम करने के लिये वैठ गई। जब उन्होने मुझे गौर से देखा तो उनकी मुस्कराहट जाती रही। मै इधर वहुत दुवली हो गई हूँ। मेरे गाल और आँखे धँस गई है और मै कागज की तरह सफेद हो चली हूँ। एक साल पहले जिन लोगो ने मुझे देखा होगा उन्हे मुझे अब पहचानने में जरूर कठिनाई होगी। कुछ देर तक वे मुझे नजदीक से देखते हुए बैठे रहे और तब फिर प्रसन्न दिखाई पडने लगे। उन्होनें कुछ कहा और मैने क्या जवाब दिया मुझे याद नही और वे फिर हँस पडे। वे यहाँ एक घटे तक बैठे रहे और उनकी वातचीत और सवालो का सिलसिला जारी रहा। विदा होते समय उन्होने मेरा हाथ पकड कर कहा (विलकुल उन्ही के शब्दो में) · "तुम्हारे और मेरे वीच तुम्हारी रिश्तेदारन और मेरी घनिष्ठ परिचिता, अन्ना फ्योदोरोवना, बडी दुष्टात्मा है।" (और

19*

इसके बाद उन्होंने एक बहुत भ्रष्ट शब्द का प्रयोग किया।)
इसके बाद उन्होंने यह भी कहा " उसने तुम्हारी चचेरी बहन माशा को भी पथभ्रष्ट कर दिया है और तुम्हारी जिन्दगी तो बर्बाद कर ही डाली है। मैं भी बदमाश की तरह तुम्हारे साथ पेश आया हूँ। मनुष्य में यही तो सबसे बड़ा अवगुण है।" उसके बाद वे खूब ठहाके के साथ हँसे। तब उन्होंने कहा कि वे वक्ता नही है। उन्होंने यही कहा है जिसे कहने के लिये उनकी आत्मा और विवेक ने बाध्य किया है और बाकी बात वे बहुत संक्षेप में कहना चाहेंगे। तब उन्होंने मुझे कहा कि वे मेरी खोई हुई प्रतिष्ठा लौटाना अपना कर्तव्य समझते हैं। वे अमीर हैं और हम लोगो की शादी हो जाने के बाद वे मुझे स्तेपी में बसे अपने गाँव ले जायेंगे जहाँ वे खरगोशो का शिकार करना चाहते हैं। वे सेंट पीटर्सबर्ग फिर कभी नही लौटेंगे क्योंकि वह गन्दा शहर है। शहर में उनका एक नालायक भतीजा है जिसे एक कोपेक भी न देने की उन्होंने कसम खाई है और इसलिये वे अपनी शादी करना चाहते हैं वे अपनी औलाद को उत्तराधिकारी बनाना चाहते है। तब मेरी गरीबी की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा कि मेरी

बीमारी से उन्हे कोई ताज्जुब नही क्योकि मै नरक में रहती हूँ और उन्होंने यह भी कहा कि यदि मै यहाँ से नही हटी तो अगले महीने तक मेरी मौत निश्चित है। उन्होंने कहा कि सेंट पीटर्सबर्ग के मकान बहुत गन्दे है और अन्त में पूछा कि मुझे किस चीज़ की जरूरत है।

मै उनके प्रस्ताव से इतना उद्विग्न हो गई कि मै रो पडी। मै नही जानती क्यो। मेरे आँसुओ को कृतज्ञता-प्रदर्शन समझकर उन्होंने ऐलान किया कि उनका सदा यह विश्वास रहा है कि मै दयालु, समझदार और भावुक लडकी हूँ और वे यह प्रस्ताव रखने में तब तक हिचकिचाते रहे थे जब तक उन्होने मेरे विषय में ठीक ठीक पूछ-ताछ न कर ली थी। तब उन्होने तुम्हारे बारे में कुछ सवाल पूछे और कहा कि उन्होने सुन रखा है कि तुम बहुत ऊँचे सिद्धान्त के व्यक्ति हो और वे तुम्हारा एहसानमंद रहना नही चाहते। अत उनका विचार था कि तुमने जो कुछ मेरे लिये किया है, उसके लिये पाँच सौ रूबल तुम्हे दे देना काफी होगा। जब मैंने बताया कि तुमने जो कुछ मेरे लिये किया है, उसका बदला नही दिया जा

सकता तो उन्होंने कहा कि यह वाहियात ख्याल है। कोरी भावुकता है। वे हँस पड़े और बोले कि मैं बिलकुल बच्ची हूँ और शायद कविताएँ पढ़ने की बहुत शौकीन। उपन्यास और कविताएँ पढ़कर जवान लड़कियाँ खराब हो जाती हैं और आम तौर पर किताबों से नैतिक पतन हो जाता है। इसलिये वे किताबें पसन्द नहीं करते। उनका कहना था कि यदि मेरी उम्र उनके बराबर होती तो अपने लम्बे अनुभव से मैं भी इन्सान को अच्छी तरह समझ गई होती। अभी मुझे इन्सान के बारे में कुछ मालूम नहीं है। उन्होंने मुझे सलाह दी कि मैं अच्छी तरह से उनके प्रस्ताव पर सोच-विचार करूँ और जल्दी में कुछ कर डालना मेरे लिये बड़ा घातक होगा। क्योंकि जल्दबाजी और नासमझी का बुरा फल सदा ही जवान लड़कियाँ भुगतती रही हैं। वस्तुत, वे अनुकूल उत्तर पाने की आशा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मेरी तरफ से निराश होने पर उन्हे मास्को के एक सौदागर की लड़की से शादी करनी ही पड़ेगी क्योंकि वे उस बदमाश भतीजे को अपने उत्तराधिकार से वंचित कर देना चाहते हैं। उन्होंने मेरी इच्छा के विरुद्ध मिठाई खाने के लिये, जैसा कि उन्होंने

कहा, पांच सौ रूबल मेरी मेज़ पर रख दिये। उन्होंने कहा कि देहात में मैं जाकर गोल-मटोल हो जाऊँगी और बहुत बड़ी जायदाद की मालकिन भी। वे सारे दिन बहुत व्यस्त रहे और दौड़ते रहे। और तब उन्होंने रुखसत ली। मेरे प्रिय दोस्त, मैंने इन सब के बारे में बहुत सोचा-विचारा, दुःख और पीडा से व्याकुल रही लेकिन आखिरकार मैंने निश्चय कर लिया है। मैं उस आदमी से शादी करने जा रही हूँ। मुझे उसका प्रस्ताव ज़रूर स्वीकार कर लेना चाहिये। केवल वही आदमी मुझे बेइज्जती से छुटकारा दिलाकर मेरा खोया हुआ सम्मान लौटा सकता है। मुझे गरीबी, मुसीबत और बदकिस्मती के चंगुल से निकाल सकता है। मैं अपने भविष्य के बारे में और सोच ही क्या सकती हूँ? मैं अपने भाग्य से और आशा ही क्या कर सकती हूँ? फेदोरा कहती है कि अपनी खुशी को ठोकर मारना अच्छी बात नही और यह यदि खुशी नही है तो और क्या है? मुझे दूसरा रास्ता नज़र नही आता, मेरे दोस्त। मैं इतनी मेहनत कर रही हूँ कि मैं अपना स्वास्थ्य चौपट कर चुकी हूँ। अध्यापिका या नौकरानी की नौकरी? मैं अकेलेपन के कारण मर जाऊँगी।

इसके अलावा मैं किसी को सतुष्ट नहीं कर पाऊँगी। मैं बहुत तुनकमिजाज हूँ और किसी न किसी के लिये हमेशा एक बोझ। मैं महसूस करती हूँ कि मेरे लिये स्वर्ग का दरवाजा नहीं खुल रहा है, लेकिन मैं और कर ही क्या सकती हूँ? तुम्हीं बताओ, मैं क्या करूँ?

मैंने सचमुच तुम्हारी राय नही पूछी है। मैं अकेले ही इसपर विचार करना चाहती थी। मेरा निर्णय अटल है और मैं बीकोव को भी बता दूंगी। उन्होंने कहा है कि वे अधिक नही रुक सकते और कुछ कारणवश शादी की बात स्थगित भी नही कर सकते। भगवान जानें, मुझे सुख या खुशी नसीब होगी या नही, लेकिन मैं अपना भाग्य 'मालिक' के हाथ सौंप देती हूँ। सुना है बीकोव दयालु आदमी हैं। वे मेरी इज्जत करेंगे और मैं भी उनकी इज्जत करना सीखूंगी। ऐसी शादी से और अधिक आशा मैं कर ही क्या सकती हूँ?

जो कुछ मुझे कहना था, मैंने कह दिया, मकार अलेक्सेयेविच, और मुझे विश्वास है कि तुम समझ जाओगे। मुझे दबाने की कोशिश न करना। तुम्हे सफलता नही

मिलेगी। अपने तहे दिल से सारी बातो पर गौर करो और सोचो कि मुझे यह कदम क्यो उठाना पडा है? मैं पहले बहुत चिन्तित थी लेकिन अब शान्त हूँ। मेरे भाग्य में क्या है, मैं नही जानती। भविष्य अस्पष्ट और अज्ञात है। जो होगा सो देखा जायेगा। भगवान की इच्छा पूरी हो कर ही रहेगी!..

वीकोव अभी अभी आये है और यह चिट्ठी मैं पूरी नही कर सकती हालाकि अभी बहुत कुछ कहना बाकी रह गया है।

व० दो०

२३ सितम्बर

वरवारा अलेक्सेयेवना, मेरी अपनी,

मैं पत्रोत्तर देने में शीघ्रता कर रहा हूँ और तुम्हे यह बता देना चाहता हूँ कि मैं बिलकुल आश्चर्यचकित रह गया हूँ। कही न कही कोई गडबड़ी जरूर है। कल हम लोगो ने गोरश्कोव को दफनाया। हाँ, वीकोव ने सचमुच भलमनसाहत दिखाई है। लेकिन क्या तुम सचमुच राजी

हो गई हो, मेरी प्रियतमा? शायद भगवान की यही मर्जी हो। उसकी मर्जी और भाग्य का खेल कोई नही जानता। कोई सवाल-जवाब नही करना है। फेदोरा ने भी इसका समर्थन किया। अब तुम खुश रहोगी, हर तरह से सतुष्ट रहोगी, मेरी नन्ही कपोती, मेरी सुन्दर अप्सरा—लेकिन इतनी जल्दी क्यो, वारेन्का? ओह, हाँ, मि० बीकोव को काम है। लेकिन सबको काम है सबको अपना अपना काम करना है मैंने उन्हे तुम्हारे घर से निकलते हुए देखा था। वे प्रभावशाली, काफी प्रभावशाली व्यक्ति है। लेकिन कही पर कुछ गड़बडी ज़रूर है। सवाल यह नही कि वे प्रभावशाली है, बल्कि यह कि मै बिलकुल हतप्रभ हूँ। अब इस ससार में हम एक दूसरे को पत्र कैसे लिखेंगे? और मै अकेले कैसे ज़िन्दा रह सकूँगा? मै तुम्हारे सब तर्कों को अपने हृदय में तौल रहा हूँ, जैसी कि तुम्हारी आज्ञा है। मै यहाँ बैठे बैठे यही काम करता रहा हूँ। मै उस हस्तलिपि का बीसवाँ पृष्ठ नक्ल कर रहा था कि यह खबर मेरे पास पहुँची। तुम जुदा हो रही हो, मेरी प्रियतमा, और तुम्हे जरूरी चीजें खरीदनी आवश्यक है· फ्रॉक, जूते इत्यादि। मुझे मालूम

है कि गोरोखोवाया में एक अच्छी दूकान है। मैने तुम्हें इसके वारे में वताया भी था, तुम्हे याद है? लेकिन अभी तुम कैसे जा सकती हो? ज़रा सोचो! अभी तुम नही जा सकती। यह असभव है, विलकुल असभव। अभी कितनी चीज़ें खरीदनी है। एक गाडी भी तो खरीदनी है। मौसम भी अभी खराव है; देखो, कैसी वारिश हो रही है, मूसलाधार वारिश। और ठड भी है। इसके अलावा .. तुम्हे ठंड लगेगी ... तुम्हारी छाती में ठड लग जायेगी। एक अजनवी के साथ सफर करते तुम्हें डर नही लगेगा? और फिर, मेरे लिये क्या रह जायेगा? फेदोरा कहती है कि तुम्हारे नसीव वड़े अच्छे है लेकिन वह दुष्टात्मा है। वह मेरी दुनिया में आग लगाना चाहती है। क्या तुम सध्या की प्रार्थना के लिये जाओगी? मैं वहाँ तुम्हारा दर्शन करने के लिये जाऊँगा। यह सत्य है, मेरी प्रिया, कि तुम समझदार, वुद्धिमती और भावुक लडकी हो। लेकिन उनका उस सौदागर की लड़की से शादी करना अच्छा होता। क्या तुम ऐसा नही सोचती, प्रिया? अंधेरा हो जाने के वाद मैं एक घटे के लिये आऊँगा। आजकल जल्द ही अंधेरा

२७ सितम्बर

मेरे प्रिय मित्र मकार अलेक्सेयेविच,

मि० बीकोव कहते हैं कि मेरे लिये इन लिनेन की कम से कम तीन दर्जन चोलिया जरूरी हैं। मुझे अब ऐसी दर्जिनों की तलाश है जो जल्द से जल्द दो दर्जन चोलिया तैयार कर दें क्योंकि समय बहुत कम है। मि० बीकोव खीज उठे हैं और कहते हैं कि ये ढोंग और आडम्बर कष्टदायी हैं। हम लोगों की शादी पांच दिन के अन्दर अन्दर होनेवाली है और उसके अगले दिन हम लोग यहाँ से रवाना हो जायेंगे। मि० बीकोव को बहुत जल्दी है और उन्हें समय बर्बाद करते हुए बड़ा कष्ट हो रहा है। मैं इतनी दौड़-धूप करती रही हूँ कि अब मुझमें खड़े

होने की भी शक्ति नही रह गई है। अभी कितना काम करना है और वहुत कुछ अधूरा ही रह गया है। वेहतर होता कि मै इस झमेले मे न पडी होती। और दूसरी वात : हम लोगो के पास काफी गोटा या लैस नही है और न कोई खरीदनेवाला ही है। मि० वीकोव का कहना है कि वे अपनी वीवी को वर्तन माँजनेवाली दाई की तरह रखना नही चाहते। वे चाहते है कि उनकी वीवी को देख कर स्थानीय महिलाओ के दिल पर साँप लोट जाय। क्या गोरोखोवाया में मैडम शिफौन के यहाँ तुम जाओगे और उनसे अनुरोध करोगे कि वे दर्जिने भेज दे और स्वय भी आने की कृपा करे? मेरी तवीयत आज ठीक नही। हम लोगो का नया फ्लैट वहुत अव्यवस्थित और ठढा है। मि० वीकोव की एक चाची है जो इतनी वूढी और वीमार है कि मुझे डर है कि हम लोगो के प्रस्थान करने के पहले ही कही वह इस दुनिया से कूच न कर जाय। मि० वीकोव कहते है कि घवडाने की कोई वात नही है। वह जल्द ही ठीक हो जायेगी। सव कुछ अभी गडवड ही है। मि० वीकोव यहाँ नही रहते है और नौकर-चाकर दौडते रहते है, भगवान जाने कहाँ! कभी ऐसा भी वक्त आ

जाता है जब केवल फेदोरा ही काम करने के लिये रह जाती है। मि० वीकोव का निजी नौकर, जिसके जिम्मे यह सारा भार है, आज तीन दिनों से गायब है। मि० वीकोव हर सुबह यहाँ आते हैं और हमेशा क्रुद्ध नजर आते हैं। कल उन्होंने नौकर को पीट दिया और पुलिस के साथ झझट हो गया। मेरी चिट्ठी पहुँचानेवाला कोई नही है, इसलिये मै इसे डाक से भेज रही हूँ। ओह, मैं सबसे महत्त्वपूर्ण बात तो भूल ही गई। मैडम शिफौन को कहना कि कल के नमूने के मुताबिक वे गोटा चढा दे। हो सके तो वे खुद आकर हमें नया पैटर्न दिखा जायँ। उनसे कहना कि मैंने लहँगे के बारे में अपना विचार बदल दिया है, उसपर जाली का काम होना चाहिये। रूमालो पर नाम कसीदा काढकर लिखे जायेंगे, रेशमी धागो से टाँका लगाकर नही। 'कसीदा काढकर' यह शब्द तो भूलोगे नही? और बाकी बाते तो मै भूल ही गई उनसे कहना कि रोयेंदार लहबर का किनारा उठा हुआ रहे, किनार में लैस लगा रहे और कालर

पर भी जाली का काम हो या चौडा गोटा लगा रहे। भूलना नही, अच्छा न?

तुम्हारी

व० दो०

पुनश्च.—मैं अपने काम के लिये तुम्हे तकलीफ देते हुए शर्मिन्दा हूँ। परसो भी तुम सुबह से साँझ तक दौडते रहे। लेकिन मैं क्या करूँ, मैं मजबूर हूँ। अभी सब कुछ ज्यो का त्यो पडा हुआ है और मेरी तबीयत ठीक नही। मुझसे खफा न होना, मकार अलेक्सेयेविच। मैं बहुत हताश हूँ। मेरा क्या होनेवाला है, मेरे प्रिय, मेरे दयालु मकार अलेक्सेयेविच। भविष्य की ओर देखने से मुझे बहुत डर लगता है। भविष्य के गर्भ मे क्या है, यह सोचकर मुझे बडी बेचैनी होती है। मैं बहुत बेचैन हूँ।

पुनश्च —जो कुछ मैंने कहा है, उसे कृपया भूल न जाना। मुझे डर है कि तुम कोई गलती न कर बैठो। याद रखना: कसीदा काढकर, रेशमी धागो से टाँका लगा कर नही।

व० दो०

२७ सितम्बर

मेरी प्रिया, बरबारा अलेक्सेयेव्ना,

मैंने तुम्हारे आदेशों का पूर्ण सावधानी से पालन किया है। मैडम शिफ़ौन ने कहा कि वे खुद अपने हाथों से कसीदा काढ़ेंगी जो अधिक सुन्दर लगेगा, या ऐसा ही कुछ उन्होंने कहा, मैं समझ नहीं सका। उन्होंने गोटे के बारे में भी कुछ कहा था लेकिन क्या कहा, मैं भूल गया हूँ। मुझे इतना ही याद है कि उन्होंने इसके बारे में बहुत बकवास की, दिमाग चाट जानेवाली मुंहफट औरत। उन्होंने क्या क्या बकवास की? अच्छा होगा वे खुद आकर तुमसे निपट लेंगी। मैं दौड़ते दौड़ते अधमरा हो चला हूँ और आज दफ्तर नहीं जा सका। लेकिन मेरे लिये चिन्ता करने की कोई बात नहीं प्रिया। तुम्हारे मन की शान्ति के लिये मैं शहर की एक-एक दूकान छान सकता हूँ। तुम कहती हो कि आगे देखने से तुम्हें डर लगता है लेकिन आज सात बजते बजते तुम्हें सब कुछ पता चल जायेगा। मैडम शिफ़ौन ने आने का वादा किया है। हताश न हो, मेरी प्रियतमा। शायद सब कुछ अच्छा

ही होगा। लहँगा, लहँगा! जहन्नुम में जाय, लहँगा! मैं तुमसे मिलने जरूर आऊँगा। आज मैं तुम्हारे फाटक के पास से दो बार गुजरा लेकिन वीकोव, हाँ मि० वीकोव के दिमाग का पारा हमेशा इतना चढा रहता है कि सचमुच खैर, किया ही क्या जा सकता है?

मकार देवुश्किन।

२८ सितम्बर

मेरे प्रिय मकार अलेक्सेयेविच,

कृपया जौहरी के पास तुरत जाओ और उससे कहो कि वह मोती और पन्ने का कर्णफूल नही बनाये। मि० वीकोव कहते है कि बहुत अधिक खर्च बैठ रहा है। वे आजिज आ गये है और कहते है कि उनका बहुत पैसा खर्च हो गया और वे लुट गये। कल भी, उन्होंने कहा कि यदि उन्हे मालूम रहता कि उनके इतने पैसे पर पानी फिर जायेगा तो वे कभी भी यह झझट मोल नही लेते। उनका कहना है कि शादी होते ही हम यहाँ से चले जायेंगे और मेहमाननेवाज़ी के झझट में नही पडेंगे और न मुझे

नृत्य करने या मेहमानो के आदर-सत्कार के झमेले में पडने की जरूरत है, इन सब का मौका अभी नही है। उनके कहने का यही ढग है। भगवान जानते हैं, इन चीजो की मुझे परवाह नही थी, खुद मि० बीकोव ने ही फरमाइश की थी। मै उनको जवाब नही देती क्योकि वे बहुत जल्द ही खफा हो जाते है। मेरा क्या होनेवाला है?

व० दो०

२८ सितम्बर

बरबारा अलेक्सेयेवना, मेरी प्यारी बच्ची,

मै अर्थात्, जहाँ तक जौहरी का सवाल है, सब ठीक है। जहाँ तक मेरा सवाल है, पहले ही मेरे कहने का अभिप्राय यह था कि मै बीमार हूँ और बिछावन पर पडा हूँ। मै बीमार भी पडा तो ऐसे मौके पर जब अभी बहुत कुछ करने को बाकी पडा है, कैसी बदकिस्मती है। मेरी विपत्ति के भी क्या कहने। हाल ही में महामहिम बहुत क्रुद्ध हुए थे और वे येमेल्यान

इवानोविच पर इतने जोर से चीख पडे थे कि उनकी सांस उखड़ गई थी। मुझे यही तुम्हे सूचित करना था। मै अधिक लिखना चाहता हूँ लेकिन तुम्हे अनावश्यक कष्ट देना नही चाहता। मै सीधा-सादा आदमी हूँ, वहुत चतुर नही और जो कुछ दिमाग में आता है, लिख डालता हूँ। अत , कुछ वाते जिन्हे मै घसीट डालता हूँ, अपने सही रूप में नही उतर पाती। खैर, यह कोई वडी वात नही।

तुम्हारा

मकार देवुश्किन।

२६ सितम्बर

वरवारा अलेक्सेयेवना, मेरी प्यारी नन्ही वालिका,

आज मेरी मुलाकात फेदोरा से हुई, मेरी प्रिया, और उसने कहा कि कल तुम्हारी शादी हो जायेगी और परसो तुम रवाना हो जाओगी और मि० वीकोव घोड़ा-गाडी भी किराये पर ठीक कर चुके है। मै तुम्हे महामहिम के वारे में थोडा सा वता ही चुका

हूँ। और क्या कहूँ? हाँ, गोरोखोवाया वाली दूकान से जो बिल मिला है उसे मैं देख गया हूँ। सब कुछ सही है लेकिन बहुत महँगा। मि० बीकोव क्यों तुमसे नाराज होने लगे? भगवान तुम्हे हमेशा खुश रखें, मेरी प्रियतमा। तुम्हें खुश जानकर मुझे कितनी प्रसन्नता होगी। यदि मेरी पीठ में दर्द न रहा तो मैं तुम्हारी शादी के उत्सव मे जरूर शरीक होऊँगा। चिट्ठियों के बारे मे फिर चर्चा कौन उन्हे ले जायेगा? फेदोरा   तुमने उसके साथ बहुत अच्छा सलूक किया है। तुम बहुत रहमदिल हो और भगवान तुम्हे इसका फल देंगे। किसी के साथ की गई भलाई कभी बेकार नही जाती और सत्कर्म का फल सदा अच्छा होता है। मेरी प्रियतमा, तुम्हारे पास हर घंटे, हर मिनट पत्र लिखते रहने की मेरी तमन्ना है। मैं चाहता हूँ कि मैं सदा तुम्हे पत्र, केवल पत्र लिखता रहूँ। तुम्हारी किताब 'इवान बेल्किन की कहानियाँ' मेरे पास है। इसे कृपया मेरे पास छोड़ती जाओ, मेरी प्रिया। यह इसलिये नही कि उसे पढने की मुझे बहुत इच्छा है। तुम्हे तो मालूम है कि जाडा नजदीक है और रातें बडी लम्बी

और दु खद होगी और वही समय मेरे पढने का होगा। मै यहाँ से हटकर तुम्हारे उस पुराने मकान मे चला जाऊँगा जिसमे फेदोरा रहती हे। मै उस ईमानदार औरत से कभी जुदा नही होऊँगा। वह कितनी परिश्रमी है, यह तुम्हे मालूम है। कल मै तुम्हारी खाली कोठरी में गया था, इधर-उधर घूमा और चीजो का निरीक्षण किया। कोने में तुम्हारा कसीदे का फ्रेम पडा हुआ था और उसमें तुम्हारे हाथ का कढा हुआ फूल अधूरा रह गया था। मैंने और भी चीज़े गौर से देखी और मुझे यह देखकर कितनी खुशी हुई कि तुमने रेशम लपेटने की फिरकी बनाने मे मेरे एक पत्र का उपयोग किया था। मेज पर भी मैंने कागज का एक टुकडा पडा हुआ पाया जिसपर ये शब्द लिखे थे 'मेरे प्रिय मकार अलेक्सेयेविच, शीघ्रता मे मुझे'—तभी किसी ने तुम्हे बाधा पहुँचाई होगी। कोने मे पर्दे के पीछे मुझे तुम्हारा छोटा सा पलग भी दिखाई पडा। मेरी प्यारी नन्ही कपोती! विदा और विदा! पत्रोत्तर शीघ्र देना।

मकार देवुश्किन।

मकार अनेकमंगलचिन, मेरे निकटतम और सच्चे मित्र,

जो होना था वह हो गया। मेरी तकदीर में क्या है, मुझे मालूम नहीं लेकिन मैंने अपने आप को भगवान की मर्जी पर छोड़ दिया है। अब तुम यहाँ से रवाना होगे और ये पंक्तियाँ मेरी विदाई की पंक्तियाँ हैं, मेरे निकटतम मित्र, मेरे सरक्षक, मेरे हृदयेश्वर। मेरे लिये दुःखी मत होना। खुश रहना, मेरी याद करते रहना। भगवान की अनुकम्पा तुमपर सदा बनी रहे। मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूंगी और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हारा नाम सदा ले लिया करूँगी। अत इस प्रकार यहाँ का मेरा जीवन समाप्त हो रहा है। जो कुछ मुझे याद रहेगा, उससे भविष्य में मुझे कुछ दिलासा मिलेगा लेकिन मेरे लिये सबसे बहुमूल्य तुम्हारी स्मृति होगी। तुम्ही एकमात्र मेरे मित्र हो और एक ही व्यक्ति, जिसने मुझे प्यार किया। मैंने देखा, मैंने महसूस किया कि तुम्हारा प्रेम मुझपर अटूट था। केवल मेरी मुस्कराहट या एक पक्ति ही तुम्हें

खुशी से निहाल कर देने के लिये काफी थी। अब तुम्हे मुझे भूलना होगा। तुम कितने अकेले रह जाओगे! तुम्हे कौन तसल्ली देगा, मेरे दयालु और एकमात्र दोस्त? मैं तुम्हारे लिये वह पुस्तक, कसीदा काढने का फ्रेम और अपनी अधूरी चिट्ठी छोडती जाऊँगी। पहली पक्ति फिर से पढना और जो बात तुम्हे सबसे अधिक भाती हो उसकी कल्पना आगे की पक्तियो में कर लेना। भगवान जाने मैंने आगे की पक्तियो में क्या लिखा होता। अपनी गरीब वारेन्का को याद रखना जिसने तुम्हे बहुत बहुत प्यार किया था। फेदोरा के कपडे की आलमारी की ऊपरी दराज में मैंने तुम्हारे सब पत्र रख छोडे है। तुमने लिखा है कि तुम बीमार हो, लेकिन मि० बीकोव मुझे आज बाहर नही निकलने देंगे। मै तुम्हे पत्र जरूर लिखूंगी लेकिन भगवान जाने क्या होगा, इसलिये विदाई का अभिवादन स्वीकार करो, मेरे अपने प्रियतम, मेरे सर्वस्व! मै तुम्हारा आलिगन करना चाहती थी। विदा, मेरे मित्र, विदा। सदा प्रसन्न और स्वस्थ रहना! मै भगवान से प्रार्थना करती रहूँगी। मेरा हृदय इतना

बोझिल है कि मै बता नही सकती। मि० ब्रीकोव पुकार रहे है। विदा!

सदैव तुम्हारी ही

व०

पुनश्च —मेरा हृदय आँसुओ के समुन्दर मे डूबा हुआ है। आँसुओ के कारण मेरी साँस रुक रही है। विदा! अपनी गरीब वारेन्का को याद रखना!

* * *

वारेन्का, मेरी प्रिया, मेरी कपोती, केवल मेरी!

तुम्हे खीचकर मुझसे दूर ले जाया जा रहा है! तुम जा रही हो! उन लोगो ने मेरा हृदय कुचल डाला है। तुमने उन्हे ऐसा करने कैसे दिया? तुम रो रही हो, फिर भी जा रही हो। आँसुओ में भीगी हुई तुम्हारी चिट्ठी अभी अभी मिली है। तुम सचमुच जाना नही चाहती हो और वे तुम्हे जबरदस्ती ले जाना चाहते है। तुम्हे मेरे लिये दुःख है क्योकि तुम मुझे प्यार करती हो। अब तुम्हारा ख्याल कौन रखेगा? तुम्हारा नन्हा सा दिल हमेशा उदास

श्रौर दुखी रहेगा। दुख उसे खा जायेगा श्रौर उदासी उसे जर्जर कर देगी। तुम वहाँ अकेली इस दुनिया से कूच कर जाश्रोगी श्रौर वे तुम्हे ठढी धरती के नीचे दफना देंगे श्रौर कोई कब्र पर आँसू बहाने भी नही जायेगा। मि० बीकोव को खरगोशो के शिकार से फुर्सत ही नही मिलेगी। श्रोह, मेरी प्रियतमा, तुमने यह क्या कर डाला? तुमने अपने प्रति कितना बडा अत्याचार किया है? वे तुम्हे कब्र की श्रोर खीचे ले जा रहे है। वे इस दुनिया से तुम्हारा नामोनिशान मिटा देंगे। तुम एक नन्ही सी जान हो, मेरी नन्ही अप्सरा। श्रौर मै कहाँ था? मै क्या कर रहा था? मैंने देखा कि शिशु को भ्रम हो गया था, शिशु बीमार था। मुझे कुछ करना चाहिये था। लेकिन नही। मै मूर्ख की तरह पेश आया। कुछ भी नही सोचा, कुछ नही देखा मानो उनसे मेरा कोई ताल्लुक ही न हो। हे भगवान! मै लहँगे श्रौर गहनो के पीछे दौड रहा था! नही वारेन्का, मै अपनी खाट से उठ खडा होऊँगा। मै कल अच्छा हो जाऊँगा श्रौर चारपाई छोड दूँगा। मै तुम्हारी गाडी के पहियो के नीचे सो जाऊँगा। मै तुम्हे जाने नही दूँगा! यह बहुत बडा जुल्म है। उन्हे इसका क्या

अधिकार है? मै तुम्हारे साथ चलूंगा—यदि तुम नही ले जाओगी तो मैं तुम्हारी गाडी के पीछे पीछे दौडूँगा। मै तब तक दौडता रहूँगा जब तक मै गिर न जाऊँ। तुम कहाँ जा रही हो? तुम्हे मालूम है? मै तुम्हे बताता हूँ। तुम स्तेपी इलाके में जा रही हो, स्तेपी इलाके में, जो मेरी हथेली की तरह खाली और नगा है। वहाँ तुम किसे देख सकोगी? हृदयहीन, थकी हुई किसान औरते और उनके रूखे और पियक्कड पति। वहाँ के पेड भी बारिश और ठढ से मर चुके है। ऐसी ही है वह जगह, जहाँ तुम जा रही हो। मि० बीकोव खरगोशो के साथ व्यस्त रहेगे और तुम? क्या तुम ज़मीदार की पत्नी होना चाहती हो, मेरी प्रियतमा? तब अपनी ओर देखो, मेरी नन्ही वारेन्का! क्या तुम ज़रा भी ज़मीदार की पत्नी की तरह लगती हो? इसका सवाल ही नही उठता, मेरी वारेन्का! अब मै किसको पत्र लिखूंगा? अब मै 'वारेन्का' कहकर किसे पुकारूँगा? उस प्यारे प्यारे नाम से मै किसे बुलाऊँगा? अब तुम मुझे कहाँ मिलोगी, मेरी नन्ही अप्सरा? मै, निस्सन्देह, मर जाऊँगा, वारेन्का। मै ऐसी बदकिस्मती कभी नही सह सकता। मैने तुम्हे

दिव्यज्योति की तरह समझा। मैंने तुम्हे अपनी पुत्री की तरह प्यार किया। मैंने तुम्हारी अच्छाई, बुराई, सबसे प्यार किया। मेरी प्रियतमा, मै केवल तुम्हारे लिये ही जिन्दा रहा हूँ। मैंने काम किया, कागजात की नकल की और घूमा-फिरा, तथा जो देखा-सुना उसे अपने प्रेम-पत्रो में उतार डाला और वह इसलिये कि तुम मेरे समीप थी। शायद तुमने यह कभी नही सोचा होगा पर वास्तविकता यही है। फिर से सुनो· यह कैसे हो सकता है कि तुम चली जाओगी? तुम नही जा सकती! यह बिलकुल असंभव है! इसका सवाल ही नही उठता! वारिश हो रही है, तुम्हे ठड ज़रूर लग जायेगी—तुम कितनी कमज़ोर और बीमार हो। गाडी की छत ज़रूर चूने लगेगी। गाडी टूट जायेगी; तुम्हारे शहर से बाहर निकलते ही वह ज़रूर टूट जायेगी। पीटर्सबर्ग के गाडी बनानेवाले निकम्मे है। वे केवल फैशन और तडक-भडक पसद करते हैं। वे ठोस चीज़ें नही बना सकते। वे कभी नही बना सकते, मै कसम खाकर कहता हूँ। मै मि० बीकोव के सामने घुटने टेककर बैठ जाऊँगा, मेरी प्रियतमा। मै उन्हें साबित करके दिखला दूंगा, मै सब कुछ दिखला

नही, फिर से लिखो, केवल एक और चिट्ठी लिख दो। और वहां पहुंचकर एक बार फिर लिखो। यदि तुम नही लिखोगी तो यही चिट्ठी, जो अभी मेरे पास है, आखिरी चिट्ठी होगी। और यह असभव है यह आखिरी चिट्ठी नही होगी। यह कैसे हो सकता है? बिलकुल अचानक–आखिरी चिट्ठी। मैं पहले की ही तरह तुम्हे लिखता रहूँगा और तुम भी लिखती रहना। मेरी शैली अब निखरने लगी है कैसी शैली? मैं नही जानता, मैं क्या कह रहा हूं और क्या लिख रहा हूँ और जब तक मैं लिखता रहूँगा, लिखता जाऊँगा तब तक मुझे इसकी परवाह भी नही ...

मेरी नन्ही कपोती, मेरी एकमात्र, केवल मेरी अपनी प्रियतमा।

पाठको से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन संबंधी आपके विचारो के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है:

२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।